कीर्ति शेष

संजीव प्रकाशन, दिल्ली-६

☐ संस्करण : प्रथम, 1975

☐ मूल्य : नौ रुपये

☐ प्रकाशक : सजीव प्रकाशन
3613, दरियागंज, दिल्ली-110006

☐ मुद्रक : संजय प्रिंटिंग एजेन्सी द्वारा
कुमार आदर्श प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-110032

KIRTI SHESH by Vimala Sharma Rs. 9.00



विमला शर्मा

कीर्ति छाप

उन अबलाओं को,
जिनकी माँग आज
सिन्दूर-रहित है।

दो शब्द

युद्ध में शत्रु को पराजित करने के लिए अस्त्र-शस्त्र की ही नही, अदम्य साहस की भी आवश्यकता होती है। बर्फीले तूफान, हिम-मंडित पहाड़ियां, ठंडा अथाह सागर और शत्रु की सशस्त्र सेनाएँ—प्राणों को हथेली पर रखकर इन सबसे एक-साथ जूझना कम जीवट का काम नहीं। सन् १९७१ में पाक से भीषण युद्ध में एक-एक इंच जमीन को प्राप्त करने के लिए हमारे जवानों ने खून की नदियाँ बहा दीं।

भारत युद्ध-प्रेमी देश नही है। अहिंसा में उसका विश्वास है, परन्तु अहिंसा का अर्थ यह नही कि शत्रु हम पर आक्रमण करे और हम अपनी रक्षा भी न करें। अहिंसक वही होता है जो हिंसा करने में समर्थ हो पर हिंसा न करे। हमारा शत्रु इस तथ्य को नही समझता। उसने चौथी बार हमारी भूमि पर आक्रमण किया। विवशतः भारत को अपनी रक्षा के लिए युद्ध में कूदना पडा।

इतिहास साक्षी है, भारत ने कभी किसी देश पर हमला नही किया। अपने विकास व शान्ति, प्रेम के पौधे को सींचने में ही लगा रहा परन्तु हमारे पनपते विकास को शत्रु देख न सका। उसने शक्तिशाली देशों के साथ मिल कर भारत पर आक्रमण कर दिया। पूर्वी पाकिस्तान पर हमला कर दिया। हम शान्त रहे परन्तु जब पूर्वी पाकिस्तान (आधुनिक बंगला देश) में पाकिस्तानियों की बर्बरता, नृशंसता और अमानुषिकता चरम सीमा पर पहुँच गई तब पड़ोसी की सहायता के लिए देश पर बलिदान होने की भावना से ओत-प्रोत भारत के जवानों ने इस चुनौती का मुँह-तोड़ जवाब दिया। ऐसी विजय प्राप्त की जो इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखी जाएगी।

अपनी पुण्यभूमि पर शहीद हुए योद्धाओं की परम साहसिक और रोमाचकारी घटनाओं का उल्लेख इस कृति में मिलेगा। बंगला देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए कितनी कीमत चुकानी पडी, कितने संकटो का सामना करना पड़ा, यह इस कृति से जाना जा सकेगा।

आधुनिक काल में उपन्यास मनोरंजन के खोखलेपन से आगे बढ़कर अब जीवन राष्ट्रहित, एवं जगत् की गहनता की आनन्दमयी तथ्यपूर्ण व्याख्या करने

तक आ गया है। अपनी अनेक विशिष्टताओं के कारण इस युग में उसका सर्वाधिक प्रचार हुआ है। इस सम्बन्ध मे दो मत नही हैं। फिर भी पाठक के मनोरंजन के लिए कुछ कल्पित कथा-वस्तु, पात्र, कथोपकथन तथा वातावरण प्रस्तुत करना ही पड़ता है। इसलिए मैं अनुभव करती हूँ कि उपन्यास की कथा के लिए कोई विशेष नियम नही है।

उपन्यास की कथा कल्पित होती है और कल्पना पर कोई प्रतिबन्ध नही है। लेखक वर्ग कल्पना की ऊँची से ऊँची उड़ान को समेटकर पाठक के लिए प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास की कल्पना भारतीय नारी है। प्रिय के साथ सर्वत्र आने जाने की सामाजिक स्वतन्त्रता होते हुए भी उसने मर्यादा नही छोड़ी। अपने आत्मीय को देश की रक्षा के लिए समर्पित कर दिया। बंगला देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना जीवन लगा दिया।

पूर्वी पाकिस्तान के कीर्तिशेष होने पर बंगलादेश का जन्म हुआ। यही कल्पना का उद्देश्य था, जिसे जवानों ने प्राण देकर पूर्ण किया।

जो जवान बंगला देश की स्वतन्त्रता दिलाने मे बलिदान हो गए, अमर हो गए, भारतीय इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरो में लिखा जायेगा। अन्त में मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

आदित्य सदन,
३, अशोक रोड, नई दिल्ली-१

विमला शर्मा

एक

वह रोज यहाँ आकर बैठती है। आज भी उसकी प्रतीक्षा में बैठी थी। उसे आशा थी कि वह कालेज से जाते समय यहाँ होकर जाएगा। परन्तु सन्ध्या हो गई थी, वह अभी तक नहीं आया था। सूर्य पश्चिम में अस्त होने जा रहा था। पश्चिम की ओर जाते दिनकर को देखकर उसे ऐसा लगा, मानो मोतियों की माला टूट गई हो।

कहते है, मानव के जन्म के समय से ही उसके पैरो मे बन्धन होते हैं। परन्तु जो बन्धन मानव अपने आप बनाता है, उसके काटने मे अनेक स्मृतियाँ या अर्ध-स्मृतियाँ व्यतीत हो जाती हैं।

उसने फिर आकाश की ओर देखा—पक्षी अपने घरों को लौट रहे थे। उसने सोचा, इस संसार के अतिरिक्त एक संसार और है, जिसमे पक्षी रहते हैं, जिसमे स्नेह है, विश्वास है। जिसमे खेलने की अबाध स्वतंत्रता है।

जब वह नहीं आया, तो लौट आई और मन में निश्चय किया कि वह कभी उससे मिलने नहीं जाएगी। तीन-चार दिन तक वह वहाँ आती रही, परन्तु उसके 'उसे' कौन बताता कि वह कल भी आई थी; दूसरे दिन भी आई थी, तीसरे दिन भी, चौथे दिन भी निराश होकर, बहुत देर रोकर लौट गई थी। एक दिन वह आई, मुरझाई-सी, खोई हुई-सी और एकाएक विश्वास से खिल उठी। उस पीपल के वृक्ष के तने पर 'O' शब्द अंकित कर दिया गया था।

लम्बे वृक्ष की पर्णहीन-सी शाखों की उलझी हुई छाया, हरी नसवारी और पीले रंगो के झरे हुए पत्तों पर अलसाई हुई सूर्य-किरणों की स्निग्ध बिछलन। वह उन्ही पत्तो पर लेट गई तथा उस 'O' को देखने लगी—'O' For

Oteen (ओ फार ओतिन) ।

ओतिन तो स्वयं वृक्ष के उस पार बैठा था। वह धीरे से गई और उसकी आँखों को बन्द कर लिया। उसी समय बन्द आँखों से खुली आँखों ने कहा—"बताओ—कौन ?"

"मिताली !"

"हाँ-हाँ, मिताली ।"

मिताली आँखों पर से हाथ हटा देती है। एक लम्बे क्षण तक उनकी आँखें मिलती है। ओतिन ने मिताली को देखा, मिताली ने ओतिन को देखा और मूक भाषा में आँखों ने एक-दूसरे से क्या कहा, यह तो वातावरण ही बता सकता है। अलसाई हुई सूर्य की किरणें, पीले पत्ते उस समय मौन थे।

मिताली ने आँखें उठाईं। समीप का वातावरण नारियल और कटहल के पेड़ों से घिरा था। गाँव ढाका के उत्तर-पूर्व में राजमार्ग के किनारे पर बसा था। मार्च का महीना था। न अधिक सर्दी, न अधिक गर्मी थी। समीप के कुएँ पर बगल में पानी का कलश लिये लम्बे-लम्बे काले घने केशों वाली तरुणियाँ आ-जा रही थी। हरे-पीले रंग के परिधान में युवतियाँ ऐसे लग रही थी, मानो बसन्त और पतझड़ की ऋतु आ-जा रही हों। कुछ युवतियाँ यौवन की मादकता से पूर्ण थी, तो कुछ यौवन-काल की छाया से दूर जा चुकी थी।

उसी समय एक विमान क्षितिज में आता देखकर मिताली बोली, "सुना है, शेख मुजीब से बातचीत करने जनरल याह्याखाँ ढाका आये हुए हैं।"

ओतिन बोला, "परन्तु बातचीत से सुपरिणाम कुछ नहीं निकलना है। याह्याखाँ पूर्वी बंगाल को ऐसा सबक सिखायेंगे, जिसको वर्षों तक न भुलाया जा सके।"

मिताली ने बंगाली भाषा में कहा, "आपनि कि कोरे जान लेन ? (आपको कैसे मालूम ?"

ओतिन बंगला भाषा में बोला "आमि जानि ! (मुझे मालूम है) ।"

"ता होले आमा केलो बोलून । (मुझे भी तो पता लगे)" मिताली ने कहा।

"ता होले सोनो, (तो फिर सुनो) ।"

ओतिन बंगला भाषा में बोला, "पश्चिमी पाकिस्तान से सेना से भरे

जहाजो के आने की प्रतीक्षा है । याह्याखाँ ने विमानों से भी सेना और युद्ध-सामग्री मँगाने का आदेश दे दिया है। तुम देख ही रही हो, सेना ने जनता के शान्तिपूर्ण जुलूसों पर गोलियाँ चलाना आरम्भ कर दिया है। ढाका के *निकट जयदेवपुर में अनेकों आदमी मारे गए, सैंकड़ों घायल हुए। याह्याखाँ* राजनीतिक गतिरोध को दूर करने के लिए वार्तालाप का ढोंग कर रहा है।

"पूर्वी बगाल तथा पश्चिमी पाकिस्तान की जनता में कोई एकता नही, केवल धर्म की एकता एक पहलू है। दोनों देशों में अधिकाश मुसलमान हैं। दोनो का रहन-सहन, वेशभूषा, रीति-रिवाज एक-दूसरे से भिन्न हैं। दोनों की भाषा-संस्कृति भिन्न हैं। कृषि, खनिज, व शिक्षा की दृष्टि से पूर्वी बगाल पश्चिमी पाकिस्तान से कही अधिक स्तर ऊँचे पर है। फिर भी पूर्वी बगाल का शासन पश्चिमी पाकिस्तान के हाथ मे रहता है।

"विकास की दृष्टि से पूर्वी पाकिस्तान मे बीस प्रतिशत तथा पश्चिम पाकिस्तान में अस्सी प्रतिशत विकास हुआ है। केन्द्रीय शासन-सेवा मे रोजगार पन्द्रह प्रतिशत व विदेशी सहायता बीस प्रतिशत पूर्वी पाकिस्तान को मिली तथा शेष पश्चिमी पाकिस्तान के हिस्से में आई। इतना ही नही, पूर्वी पाकिस्तान मे गेहूँ का आटा तीस रुपये प्रतिमन, सरसों का तेल पाँच रुपये प्रति लीटर और चावल का भाव पचास रुपया प्रतिमन है, जबकि पश्चिमी पाकिस्तान में इन वस्तुओं का भाव आधा भी नही है। पाकिस्तान की स्थापना के बाद से *पश्चिम भाग के कुलीन तंत्र द्वारा पूर्वी बंगाल का शोषण किस* प्रकार किया जा रहा है, उसका सारांश जनता को मालूम हो गया है। पूर्वी पाकिस्तान की जनता ने कभी भी पश्चिमी पाकिस्तान से नाता तोडने की इच्छा प्रगट नही की। वस्तुतः याह्याखाँ की दुरंगी चालों के कारण ही पश्चिमी पाकिस्तान से सम्बन्ध विच्छेद करने और स्वतन्त्रता घोषित करने का समय आ गया। याह्याखाँ की दोहरी चालों का आभास इसी तथ्य से हो जाता है कि एक ओर जहाँ वे समझौता फार्मूले पर बातचीत करने आये हैं, वहाँ पाक सेना के डिवीजन पर डिवीजन मँगाये जा रहे है ताकि पूर्वी पाकिस्तान के स्वतंत्रता-आन्दोलन का दमन किया जा सके। इससे नगरों मे उत्तेजना तथा गहरी निराशा फैल गयी। इसलिए मुजीब ने अहिंसक असहयोग आन्दोलन की घोषणा कर दी। घोषणा की गई कि जब तक पूर्वी बंगाल की जनता के

लोकतंत्री अधिकार उसको प्राप्त नहीं हो जाते, यह आन्दोलन बन्द नहीं होगा। ढाका तथा अन्य नगरों में सेना ने दमन-चक्र आरम्भ कर दिया है जिसके कारण तीन सौ आदमी मारे गये और दो हजार के लगभग घायल हुए।"

इतना कह अोतिन सूखे अधरों पर जीभ फेर कर आगे बोला, 'इसी कारण मैं यहाँ नहीं आ सका, समय ही नहीं मिला। मुक्ति वाहिनी की गुप्त सभा में उसकी योजना बनाने में व्यस्त रहा।"

"मुक्ति वाहिनी……!"

"हाँ, मुक्ति वाहिनी। यह बंगला देश को स्वतंत्र करायेगी। कल मुक्ति वाहिनी के प्रतिनिधि ने सरकारी कर्मचारियों को आदेश दिया है कि वे याह्याखाँ की सरकार का आदेश न मानें। लोगों को आदेश दिया है कि पाकिस्तान की सरकार को राजस्व न दें। स्कूल-कालेज बन्द कर दिये जायें। साथ-ही-साथ हमें आदेश मिला है कि हम हिंसा का मार्ग न अपनायें।"

मिताली बोली, "तभी ढाका रेडियो बंगला देश की प्रशंसा में गीतों का प्रसारण करने लगा। विभाजन के पूर्व राष्ट्र-प्रेम के गीत रेडियो स्टेशन से प्रसारित किये गये। कल से रेडियो स्टेशन का नाम 'ढाका बेतार केन्द्र' रख दिया गया।"

उसी समय अोतिन बोला, "राजशाही, सिलहट और चटगाँव के रेडियो स्टेशनों से भी राष्ट्र प्रेम के गीत शीघ्र प्रसारित होंगे।"

"होंगे क्या, हुए हैं।"

अोतिन बोला, "खूब, मैं तो रात रेडियो सुन नहीं सका। तुम तो रेडियो कलाकार हो, मिताली!"

मिताली बोली, "क्या युद्ध होगा?"

"अवश्य होगा, मिताली!"

"मुजीब और याह्याखाँ की वार्ता कब समाप्त होगी?"

"शायद वार्ता वार्दस-नेर्दन तक चलेगी।"

"उसके बाद?"

"याह्याखाँ पश्चिमी पाकिस्तान चला जायेगा।"

"और…?"

"तुम देखती रहना, क्या होगा।"

"क्या होगा ?"

"हमारा देश आजाद हो जायेगा।"

"सच···!"

"हाँ, मिताली।"

"फिर तो मैं···।"

"मैं क्या···?"

मिताली लजा कर बोली, "कुछ नही।"

उसी अवस्था मे ज्योतिन बोला, "इस समय व्यक्तिगत प्रेम करने का अवसर नही है। राष्ट्र-प्रेम का अंकुर उगाना है और उसी प्रेम के पथ पर चल कर बंगला देश को स्वतंत्रता दिलानी है।"

मिताली ने ज्योतिन को देखा और बोली, "मैं इतनी स्वार्थी तो नहीं हूँ। तुम बोलो तो, मुझे क्या करना होगा ? क्या मैं भी मुक्ति वाहिनी की सदस्या बन सकती हूँ ?"

"यह बात तो बाद में देखी जायेगी, तुम रेडियो स्टेशन पर रह कर हमें सहयोग दे सकती हो। बाद में तुम्हारी आवश्यकता पड़ी, तो···।"

"मैं पीछे नहीं रहूँगी।"

"मुझे तुम से ऐसी ही आशा थी।"

"ज्योतिन, मैंने तुम से प्रेम किया है, तुम्हें आत्मीय समझा है। मैं तुम्हारे पद-चिह्नों पर नहीं चलूँगी तो मेरा जीवन किस काम आयेगा ?"

ज्योतिन बोला, "गुलामी करने से तो भिखारी बनना अच्छा। यूं अपने अन्दर अनन्त एकत्व का साक्षात्कार करके लोक-सेवा में लग जाने में ही पूर्ण और निगूढ़ साम्राज्य है। कबीर स्वतन्त्र रह कर कंकड़ चुगना पसन्द करता है। एक बात का सदा ध्यान रखना—कहीं भी किसी भी परिस्थिति में मन में कमजोरी मत आने देना। अगर महत्ता चाहती हो, तो किसी से याचना मत करना। भविष्य का अनुसन्धान नहीं करना, अतीत की चिन्ता नहीं करना। नारी ठीक उसी परिमाण में महान बनती है, जिस परिमाण में वह मानव मात्र के कल्याण के लिये, राष्ट्र के लिये श्रम करती है।"

मिताली बोली, "मुझे तो चिन्ता लगी थी। तरह-तरह के विचार मन में

आ रहे थे। बैठी-बैठी सोचती रहती थी—न जाने क्यों नहीं आये।"

"कारण तो तुम्हें बता ही दिया॥"

"अब तो मेरी चिन्ता दूर हो गई।"

"सच!"

मिताली की आंखों ने कहा, "हां, अब बताओ, क्या करना है?

"हमे देश को स्वतंत्र कराना है।"

"लेकिन यह काम बहुत कठिन है। हमारे पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्र नही है।"

"उसकी तुम चिन्ता न करो। हमारे मित्र-देश हमारी गुप्त रूप से मदद करेंगे। उनकी सेना साधारण परिधान मे पूर्वी पाकिस्तान पहुंच चुकी है तथा समय-समय पर सहयोग मिलता रहेगा। कल छात्र-छात्राओं की ढाका विश्वविद्यालय मे बैठक हुई थी। उसमे निर्णय किया गया कि छात्र संघ मुक्ति वाहिनी का मुख्य अंग होगा।"

"फिर तो वह दिन दूर नही, जब बंगला देश स्वतंत्र हो जायेगा।"

"आशा तो यही है कि इसी वर्ष देश स्वतंत्र हो जायेगा। शेख मुजीव ने अपने भाषण में कहा है, 'यदि मैं किसी कारण आपके बीच न रहूँ तो आप घबराये नही। देश के अन्य नेताओं के नेतृत्व मे अपना संघर्ष जारी रखें। मैं रहता हूँ या नही, उसका विशेष महत्व नही है।"

मिताली बोली, "मुझे ऐसा लगता है, विश्व-युद्ध न हो जाए?"

"सम्भव है, परन्तु—!"

"परन्तु क्या?"

"कोई भी राष्ट्र इतनी शीघ्रता से युद्ध मे नही कूदेगा। हां, गुप्त रूप से एक-दूसरे की मदद अवश्य करेंगे।"

"भारत के सम्बन्ध में आपका क्या विचार है?"

अोतिन बोला, "किस सम्बन्ध में?"

"इसी विषय पर।"

"यह तो स्पष्ट है, कि भारत शांतिप्रिय राष्ट्र है। पड़ोसी राष्ट्र से सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है। भारत के नेता बंगला देश की जनता के साथ है।"

"क्या भारत से ऐसी कोई मदद आई है, जिससे मुक्ति वाहिनी को मदद

मिली हो ?"

"यह एक ऐसा प्रश्न है ,जिसका उत्तर मुक्ति वाहिनी का सदस्य सुगमता से नहीं दे सकता ।"

"क्यों ?'

प्रोतिन प्रसंग बदल कर बोला, "मम्मी से बातें हुईं ?"

"हाँ !"

"क्या कहा ?"

"उन्हें कोई आपत्ति नहीं ।"

"और पापा को ?"

"उन्होंने भी स्वीकृति दे दी ।"

"फिर ?"

मिताली बोली, "अब तो आपकी स्वीकृति चाहिए ?"

"परन्तु…!"

"परन्तु क्या ?"

"अब सम्भव नहीं हो सकता ।"

"क्यों ?"

"ऐसी गम्भीर स्थिति में विवाह कैसे हो सकता है ? मैंने शपथ ली है, जब तक राष्ट्र स्वतंत्र नहीं हो जाता, मैं विवाह नहीं करूँगा ।"

"मेरे घर वाले तो अधिक दिन नहीं रुक सकते ।"

"ऐसी गम्भीर स्थिति में भला विवाह कैसे हो सकता है ?"

"यह मैं क्या जानूँ ?"

"मिताली, तुम समझने की कोशिश करो ।"

"मैं सब जानती हूँ ।"

"तुम मुझे गलत समझ रही हो।"

"मैंने कभी गलत नहीं समझा ।"

प्रोतिन बोला, "कुछ दिन रुकने में क्या बुराई है ?"

"मैं घर क्या कहूँगी ?"

"जो मैंने कहा है तुम से ।"

"तुम्हारी बात दूसरी है ।"

"तुम मुझे अपने घर ले चलना, मैं कह दूंगा ।"

"कब चलोगे ?"

"जब तुम कहो ।"

"कल ।"

"इतनी शीघ्र नहीं ।"

"फिर ?"

"कल बताऊँगा, कब चल सकूंगा ।"

"आज क्यों नहीं ?" मिताली ने उठ कर खड़ी होते हुए प्रश्न किया ।

श्रोतिन ने उसका आंचल पकड़ लिया । आंचल वक्ष प्रदेश से गिर कर नाभि तक आ गया था । एकाएक जाता हुआ सूर्य छोटी-सी बदली में चला गया । ऐसा लगा मानो उन्नत उरोज की परछाईं से वातावरण में अँधेरा छा गया हो ।

मिताली की आँखों ने कहा, "छोड़ दो ।"

श्रोतिन की गरदन ने इधर-उधर होकर कहा, "नहीं ।"

जैसे-जैसे मिताली साड़ी अपनी ओर खींचती जाती थी, वैसे-वैसे श्रोतिन की ओर स्वयं खिंची चली आ रही थी । ऐसा न करती, तो श्रोतिन के बन्धन से मुक्त न हो पाती ।

उसी अवस्था में मिताली समीप बैठकर बोली, "तुम समझने की कोशिश क्यों नहीं करते ? मैं घर पर सब कुछ कह चुकी हूँ । बनी-बनाई बात ने रूप बदल लिया, तो फिर परिस्थितियों से समझौता करना कठिन हो जाएगा ।"

श्रोतिन साड़ी के छोर को छोड़ता हुआ बोला, "मेरी दशा पर विचार करो । राष्ट्र की दशा देखो । हमें अपने स्वार्थ को ही नहीं देखना चाहिए । राष्ट्र के प्रति भी कुछ कर्तव्य होता है । वह भी हमें पूर्ण करना है ।"

मिताली साड़ी का छोर वक्ष पर डालकर बोली, "जैसी तुम्हारी इच्छा ।"

श्रोतिन बोला, "प्रश्न मेरी इच्छा का नहीं है, राष्ट्र का है, उसकी स्वतंत्रता का है । मैं तुम्हारे-साथ विवाह-सूत्र में बँध भी जाऊँ, तो भी कोई लाभ नहीं होगा । ऐसी अवस्था में, मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकूंगा । फिर कहीं-न-कहीं, कभी-न-कभी मुझे भी शत्रु की *गोली का निशाना बनना पड़*

सकता है। उस समय तुम्हें, तुम्हारे परिवार को अधिक दुख होगा। मेरे लिए, तुम्हारे लिए हितकर यही है कि इस समय उस विषय पर चर्चा न करें। कुछ समय के लिए इसे स्थगित कर दें। राष्ट्र स्वतंत्र होने पर सूर्य की किरण एक नवजीवन लेकर आयेगी। उस समय मैं तुम्हें पत्नी रूप में स्वीकार करूँगा। तब एक हाथ में दो लड्डू होंगे। मन हर्ष से नृत्य कर उठेगा। अगर कल मुझे कुछ हो गया तो तुम······!"

अोतिन अपनी बात पूर्ण भी न कर पाया था कि मिताली ने उसके अधरों पर हाथ रखकर कहा, "ऐसा न कहो, अोतिन! तुम ही मेरी साधना हो, आत्मीय हो। तुम से ही प्रेरणा मिली, जिसे पाकर मैं राष्ट्र के प्रति प्रेमातुर हो गई। तुम अपना काम करो, मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी। सारा जीवन तुम्हारी राह देखूँगी।"

अोतिन ने अधरों से हाथ हटाकर अपने हाथ में मिताली का हाथ ले लिया। एक बार उसने मिताली को देखा। उसी अवस्था में लघु-दीर्घ उच्छ्वास लेकर बोला, "तुम भी तो मेरे साथ रहोगी?"

"सम्भव न हो सकेगा।"

"क्यों?"

"बाबा न मानेंगे।"

"उनकी तुम चिन्ता न करो।"

"फिर मुझे कोई आपत्ति नहीं है। बोलो, कब कहाँ चलना होगा, क्या करना होगा?"

"अभी तुम रेडियो स्टेशन पर काम करो। मुझे जब तुम्हारी सेवा की आवश्यकता होगी, अवश्य स्मरण करूँगा।"

"अच्छा! अब चलें।"

"कुछ देर बैठो।"

"नहीं, देर हो जाएगी।"

"न जाने फिर कब मिलें?"

"क्यों?"

"कुछ पता नहीं, समय न मिले।"

"इतना समय तो निकाला ही जा सकता है?"

"समय कहाँ निकलेगा ! कल मुझे कई काम करने हैं । आगे का कार्यक्रम भी कम विस्तार लिए हुए नहीं है ।"

"कम-से-कम एक बार तो दिन में··· !"

"सम्भव नही हो सकेगा ।"

"ऐसे तो मैं मर जाऊँगी । तुम्हें देखे बिना मैं नही रह सकती । एक बार तो किसी-न-किसी प्रकार मिल जाया करना ।"

"अच्छा, कोशिश करूँगा ।"

"वायदा करते हो ?"

"हाँ !" श्रोतिन की आँखों ने कहा ।

उसी समय मिताली अपना सिर श्रोतिन की छाती पर रखकर बोली, "मुझे भी साथ रखो ताकि दोनों साथ मर सकें ।"

"अभी तुम्हारी आवश्यकता नही है ।"

"परन्तु मुझे तो तुम्हारी आवश्यकता है ।"

"यह प्रश्न दूसरा है ।"

"परन्तु मेरे लिए तो पहला है ।"

श्रोतिन बोला, "इतनी देर से समझाया हुआ सब व्यर्थ कर दिया । धैर्य से काम लो । समय का चक्र देखो । दुर्गा माँ ने चाहा तो हम शीघ्र ही सामाजिक दृष्टि में एक हो जायेंगे ।"

"क्या अब एक नही है ?"

"क्यों नही हैं ?"

"फिर ऐसा क्यों कहते हो, एक हो जायेंगे ।"

"मैंने सामाजिक रूप में कहा था ।"

मिताली बोली, "मुझे अब सामाजिक रूप में एक होने की चिन्ता नही है । मैंने आज से यह विचार हृदय में निकाल दिया है । मैं तुम्हारे कार्य में बाधा नही बनूँगी । तुम्हें सहयोग दूँगी । विवाह-सूत्र में बाँध कर तो तुम्हें बल-रहित करना है । चितायुक्त करना है । वासना का प्रेमी बनाना है—उस वासना का, जो राष्ट्र-सेवा में बाधा बन सकती है । बन सकती है क्या, बनती रही है । नारी मानव की कमजोरी है । नारी मानव का हृदय है, मानव का बल है, उत्साह है । परन्तु उत्थान होने के साथ-साथ ही पतन भी

है। मैं तुम्हारे लिये पतन नही बनूँगी। अपने प्रेम का बलिदान कर दूँगी। तुम से जीवन पाया है तो उसे तुम्हारे लिए नष्ट भी कर दूँगी।"

कुछ क्षण मौन रह कर बोली, "तुम्हें लगन है, जरूर सफलता मिलेगी। बंगला देश स्वतंत्र हो जायेगा। पाक के हाथ से निकल कर जनता सुख की सांस लेगी। जनता मुक्ति वाहिनी के जवानो को स्मरण रखेगी। उनका नाम स्वर्णाक्षरों मे लिखा जायेगा। मेरी भी आत्मा जाग उठी हैं। मैं भी आज से प्रतिज्ञा करती हूँ, जब तक बंगला देश स्वतंत्र नही हो जायेगा, सासारिक सुख स्वीकार नहीं करूँगी।"

श्रोतिन बोला, "मुझे तुमसे ऐसी ही आशा थी।"

कहने के साथ ही श्रोतिन ने अपनी गरम सांसें उसके मुँह पर छोड दीं और उठकर आकाश की ओर देखा, मानो गरम सांसों को परस्पर आलिंगन करते हुए जाते सूर्य ने देख लिया हो। श्रोतिन धीरे-धीरे मिताली के साथ चल दिया। कुछ दूर चलने पर श्रोतिन अपने पथ की ओर चला गया। मिताली उसी पथ की ओर दृष्टि पसार कर खड़ी रही।

दो

मार्च ७१ के अन्तिम सप्ताह में उस दिन ढाका मे बड़ी उत्तेजना और कौतूहल की सन्ध्या थी। ज्यो-ज्यो रात बढने लगी, त्यो-त्यों सैनिकों से भरी मोटरें सडकों पर गुजरती दिखाई पड़ने लगी। रात्रि व्यतीत होने से पूर्व नगर के सभी महत्त्वपूर्ण स्थानो पर सैनिको ने मोरचे सँभाल लिये। पाकिस्तानी फौज अपनी पूरी बर्बरता के साथ बंगाली प्रजा पर अत्याचार करने लगी। बंगला देश के विभिन्न स्थानों पर तोपो से गोलाबारी करके राष्ट्रीय सम्पत्ति को नष्ट कर दिया, उसमें आग लगा दी। बंगला देश के समर्थक नागरिको को पकड-पकड कर गोली का शिकार बना दिया और निष्प्राण शरीरों को मार्ग पर ठोकरें खाने के लिए डाल दिया। इतना करके भी सैनिकों ने सन्तोष की साँस नही ली। घरो से तरुणियों का अपहरण करके उनके साथ बलात्कार किया।

उधर मुक्ति वाहिनी पाकिस्तानी सैनिकों का सामना कैसे कर सकती थी? पाकिस्तानी सैनिक आधुनिक हथियारो से लैस थे। मुक्ति वाहिनी के पास केवल योजना थी। आन्दोलन था। इस आन्दोलन को समाप्त करने के लिए सेना के उच्च अधिकारियों ने रेलवे स्टेशन, रेडियो स्टेशन इत्यादि महत्त्वपूर्ण स्थानो पर अधिकार करने की योजना बनाई। विश्वविद्यालय का क्षेत्र बंगला देश आन्दोलन का मुख्य केन्द्र था।

उसी सायं सैनिको ने छात्रावास पर हमला कर दिया। विश्वविद्यालय क्षेत्र के सैकड़ों छात्र-छात्राओं को गोलियों से भून दिया गया। कुछ भाग गये, कुछ घायल हो गये, शेष मारे गये। इस वातावरण को देखने पर

मनुष्य का हृदय कांप उठता था। अर्धनग्न छात्राओं की लाशें, जिनको पहचनना कठिन था, जिनके कानों से कुण्डल कान काट कर निकाले गए थे। हाथों की अँगूठियां, अँगुलियाँ काट कर बड़ी बेदर्दी से निकाल ली गई थी। कपोलों पर नाखूनों के निशान, वक्ष-प्रदेश पर अत्याचार के चिह्न क्रूर सैनिकों के अत्याचारों की कथा कह रहे थे। स्थान को देखकर ऐसा लगता था मानो किसी महायुद्ध की भूमि हो। परन्तु उसमें भी इतना दर्द-भरा वातावरण देखने को नहीं मिलेगा।

लोगों को मार्ग मे गोली से मार दिया गया। बिस्तरों पर लेटे नवजात शिशुओं को आँख खोलने से पूर्व ही माँ के सामने संगीनों की नोक से मौत के मुँह मे डाल दिया गया। इन माओं का दोष इतना ही था कि उनके पति पाकिस्तान के समर्थक नहीं थे। जो मुसलमान पाकिस्तान से अलग होना चाहते थे, उनको और अवामी लीग के समर्थकों को ढूंढ-ढूंढ कर मारना और उनको घरों को जलाना आरम्भ कर दिया। पाकिस्तानी सेना ने जैसा पाशविक और बर्बर आचरण प्रस्तुत किया वह ससार के तीनों काल में एकमात्र अद्भुत और अप्रत्याशित रहेगा! मध्यकाल की असभ्य सेना जिस प्रकार हत्या तथा अपहरण करके भोग-विलास का जीवन व्यतीत करती थी, बहुत कुछ वैसा ही पाकिस्तानी सेना ने किया।

विश्वविद्यालय मे हत्याकाण्ड के समय स्नातक की छात्रा ललिका भी वहाँ थी। परन्तु वह किसी प्रकार भागने में सफल हो गई। वह भागती-हाँफती हत्याकाण्ड-क्षेत्र से दूर निकल कर वहाँ आ गई थी, जहाँ वह पहले भी कई बार आ चुकी थी। ललिका का मूल निवास-स्थान सिलहट था। उसके पिता डा० मित्रा सरकारी कार्यालय में सहायक सचिव के पद पर ढाका मे नियुक्त थे। परन्तु आन्दोलन से पूर्व उनको पदोन्नति करके चटगाँव भेज दिया गया। इसलिए वार्षिक परीक्षा तक ललिका को छात्रावास में रहना पडा। इससे पूर्व ललिका मिताली की पड़ोसिन थी। मिताली के घर के सामने ही ललिका अपने पिता तथा बहन के साथ रहती थी। मिताली से ललिका का पूर्व परिचय था।

मिताली ने ललिका को देखकर कहा, "ललिका!"

ललिका की आँखों ने हृदय की वेदना कपोलों पर उतार कर बंगाली

भाषा में कहा, "आमि काल रात्तिरेर विश्वविद्यालयेर बैपारे जड़िये पौड़ा येके गेंछे। (मैं रात विश्वविद्यालय के काण्ड में शिकार होने से बच गई)"

"और अंजिका···?"

"ओर समनके कोनी खबोर पावा जाय नाही। (उसका कुछ पता नहीं)"

अंजिका ललिका की छोटी बहन थी, जो ललिका के साथ ही छात्रावास में रहती थी, परन्तु पढने-लिखने तथा अन्य कार्यों में ललिका से चतुर और बुद्धिमान थी।

मिताली ने कहा, "ताती भालोई होयनि कि जानि ओ की अवस्थाये आछे। (यह तो अच्छा नही हुआ। पता नही वह किस अवस्था में होगी)"

ललिका बोली, "पडार नेये भालो कि ओ···! (सैनिक कुत्तों के हाथ लगने से तो अच्छा है कि वह···)।"

वार्ता बंगाली भाषा में हो रही थी। दोनों ही उदास और गम्भीर बन गईं। ललिका रोने लगी। उसी अवस्था में ललिका बोली, "बाबा को क्या उत्तर दूंगी? कैसे कहूँगी कि अंजिका सैनिकों की हविस का शिकार बन गई।"

मिताली बोली, "चिन्ता न करो, ललिका। सारा देश इसी प्रश्न का उत्तर खोज रहा है। न जाने कितनी अंजिकाएँ मर गईं, कितनियों का अपहरण कर लिया गया और न जाने कितनियों ने आत्महत्या कर ली।"

"यह बात सत्य है। जो रात मैंने देखा, कहा नहीं जा सकता।"

"फिर भी क्या देखा?"

उसने अपने परिधान पर दृष्टि डाली और मूक भाषा में कहा, "उसका प्रमाण मैं हूँ।"

मिताली बोली, "चल, पहले कपड़े बदल ले। कुछ खा ले, फिर अंजिका का पता लगायेंगे।"

"अब उसका पता क्या लगेगा?"

"सब लग जायेगा।"

ललिका वस्त्र-कक्ष में कपड़े बदलने लगी। कुछ क्षण पश्चात् हल्के नीले रंग के परिधान को धारण करके मिताली के पास आकर बैठ गई।

मिताली ने ललिका को देखकर कहा, "सारे बंगला देश की सुन्दरता चुराकर दुर्गा माता ने तुम्हारे अन्दर भर दी। सच रानी, अगर तू पकड़ ली

जाती तो—।"

"आत्महत्या कर लेती।"

"वे लोग तुझे अवसर न देते।"

"क्यों ?"

"हर समय तुझ पर पहरा रहता।"

"कभी तो एकान्त देते।"

"परन्तु साधन न होते।"

"गला दबा कर मर जाती।"

"उस मरने से क्या लाभ होता ?"

"क्यों ?"

"ऐसे तो हर कोई मर सकता है।"

"मैं समझी नहीं।"

"अच्छा, पहले बता, यह सब कैसे हुआ ?"

"क्या बताऊँ ?"

"जो कुछ हुआ, संक्षेप में बता।"

"मैं और अंजिका खाना खा कर कमरे में आकर पढ़ने लगी। कुछ क्षण पश्चात् अंजिका यह कह कर कि दीदी मैं अभी आती हूँ, अपनी सहेली के पास किसी कार्य-हेतु चली गई। आधा घंटा व्यतीत हो ही पाया था कि छात्रावास में गोली चलने की ध्वनि आने लगी। मैं डर गई। गोलियों तथा मनुष्य की ध्वनि से वातावरण का मौन समाप्त हो गया तथा सभी छात्र-छात्राएँ कमरे से बाहर आ गये। सैनिक कमरों के समीप तक आ गये थे। इस घटना में छात्र अधिक मरे तथा छात्राएँ कम।"

"ऐसा क्यों ?"

"छात्र निडर होते हैं। बाहर खड़े रहे। इस लिए गोली का शिकार हो गये। छात्राओं ने कमरों को बन्द करके साड़ी का फन्दा डाल कर आत्महत्या कर ली। परन्तु पापी सैनिकों ने आत्महत्या का अवसर तक नहीं दिया। छात्राओं को फाँसी के फन्दों से मुक्त करके उनके साथ दुर्व्यहार किया। इतने पर भी उनका मन नहीं भरा। कुछ छात्राओं को वे अपने साथ मनोरंजन के लिए गए। ऐसी घटना न कभी देखी है, न कभी देखी जायेगी। साड़ियों रहित

छात्राओं को बन्दूक की नोक वक्ष प्रदेश पर रखकर सदैव के लिए समाप्त कर दिया। जो छात्राएँ यौवन की मादकता और सौन्दर्य से पूर्ण थीं, उनको अफसरों की भेंट चढ़ा दिया। भगवान् जाने, उनके साथ क्या बीत रही होगी!"

ललिका सूखे अधरों से बोली, "यह तो कुछ नहीं है। जो देखा गया उसको कहा भी नहीं जा सकता। जो छात्राएं बच जायेंगी, वे लज्जा के कारण अपने परिवार में लौट कर न जायेंगी। लौटेंगी भी किस मुंह से, उनका नारीत्व, उनका कौमार्य जो नष्ट हो गया होगा।"

मिताली बोली, "देश को स्वतंत्र कराने में न जाने कितनी माँगों का सिन्दूर मिट जाता है, कितनी बहनों का नारीत्व लुट जाता है। यह सब कुरबानी तो देनी ही होगी। अत्याचार जो हो रहे हैं, उनको सहना ही होगा। इतना देख कर भी हम स्वतत्र हो गये तो मरने वाले, मिटने वाले मर कर अमर हो जायेंगे!"

ललिका शान्त रही।

मिताली बोली, "और क्या हुआ?"

"मैंने अंजिका की एक आवाज सुनी, फिर अपने द्वार पर दस्तक अनुभव करके द्वार खोल दिया! मैंने सोचा कि अंजिका आ गई, परन्तु अंजिका नहीं आई। आने वाला आ गया। मैंने उसकी इच्छा का विरोध किया। उसने मेरे बाल पकड़कर मेरे मुंह पर एक ऐसी लाल रेखा अंकित कर दी जिससे मेरा स्वाभिमान, मेरी मर्यादा का स्तर-बिन्दु मूल्यरहित-सा हो गया।" कहते-कहते ललिका की आँखों के मोती कपोलों की उस लाल रेखा को पार कर गए थे, मानो कपोल फिर से कोमल नीर रुपी अमृत से धुल कर पवित्र हो गए हों। साड़ी के छोर में आँसू पोंछ कर बोली, "इससे पहले कि वह नारीत्व के रंग से अपनी वासना में रंग भरता, उसका साथी मेरे कमरे में आ गया। 'एक अनार, दो बीमार' वाली कहावत ने मेरी रक्षा कर दी। दोनों वासना के कुत्ते नारी के भूखे थे। वे बंगला देश में पाकिस्तान के समर्थक बनकर नहीं आए थे। निजी इच्छा पूर्ण करने आए थे। अपनी वासना को शान्त करने आए थे।"

मिताली को देखकर ललिका बोली, "दोनों लड़ने लगे और एक-दूसरे की

गोली से मर गए। छात्रावास में अँधेरा था। विद्युत प्रकाश पूर्ण छात्रावास में नही था। किसी प्रकार अँधेरे का सेहरा लेकर [illegible] पाई।"

मिताली बोली, "चल, अच्छा हुआ।

ललिका साँस भर कर बोली, "हाँ, अच्छा तो हुआ, पर ऐसा कब तक चलेगा ?"

"विपत्ति और गुलामी सदा नही रहती ।"

"और रेडियो के समाचार क्या है ?"

मिताली बोली, "पाकिस्तानी सैनिकों ने योजनापूर्वक नर-संहार किया। अध्यापकों, पत्रकारों, कार्यकर्ताओं और वी० आई० पी० की सूची तैयार की गई। फिर उनको घर से बुला, नदी के किनारे ले जाकर गोली से मार दिया गया। उनकी पुत्री-बहनों को पकड़कर कैम्पों में ले जाया गया। उनको या तो मार दिया गया या सैनिकों के मनोरंजन के लिए कैम्पों में रखा गया।"

ललिका बोली, "पाकिस्तान की जनसंख्या पांच और साढे सात अनुपात से है। पश्चिमी पाकिस्तान के तानाशाही का अनुमान है कि पूर्वी पाकिस्तान से जनसंख्या कम कर दी जाए ताकि भविष्य में बंगालियों का बहुमत ही न रहे। कुछ तो भाग कर भारत चले गये। कुछ सैनिकों द्वारा मार दिए जायेंगे। इस प्रकार पाकिस्तान की समस्या हल हो जाएगी।"

"ऐसे तो पाकिस्तान की समस्या का समाधान नहीं हो सकता।"

ललिका बोली, "उनका प्रयास तो है। निश्चित योजना के अनुसार नर-संहार करके तीव्रगति से बंगाल की जनसंख्या कम की जा रही है।"

उसी समय दीवार घड़ी ने रात्रि के एक बजने का संकेत दिया। घड़ी की ओर देखकर मिताली बोली, "सर्प के द्वारा आधा निगल लिये जाने पर भी मेढक मक्खियों को खाता रहता है। उसी प्रकार तृष्णान्ध पाकिस्तानी सैनिक अवस्था के ढल जाने पर भी विषय सेवन करता है। तृष्णा की आग सन्तोष के रस को जला डालती है। जैसे कुत्ते मुरदे को खाते हैं, वैसे ही तृष्णा अज्ञानी को खाती है।"

उदास भाव से मिताली बोली, "भोग-विलास की तृष्णा ही पाकिस्तानी सैनिकों को हार का द्वार दिखाएगी। एक दिन ऐसा भी आएगा, जब इन्हें युद्धबन्दी कहा जाएगा।"

ललिका बोली, "साँप केंचुली को त्याग देता है, परन्तु विष नहीं त्यागता।"

सुन कर मिताली बोली, "अब तुम शयनकक्ष में आराम करो।"

"और तुम······ ?"

"मुझे रेडियो स्टेशन जाना है।"

"अब ?"

"हाँ।"

"क्यों ?"

"मेरी ड्यूटी है।"

"कब से ?"

"दो बजे से।"

"कब तक ?"

"सुबह के छह बजे तक।"

"कब लौटोगी ?"

"तुम्हारे उठने से पूर्व।"

"मुझे नींद ही नहीं आएगी।"

"सोना तो होगा ही।"

"कोशिश करूँगी।"

"अच्छा, खुदा हाफिज।" मिताली चली गई। ललिका भी शयनकक्ष की ओर चली गई। मिताली रेडियो स्टेशन न जाकर ओतिन के पास गई। ओतिन उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। द्वार खुला था। मिताली कमरे में आकर बोली, "माद कौरा, देरी होये गैलो। (क्षमा करना, देर हो गई) :"

"एसो, तातें किछु नोय (आओ, कोई बात नहीं)"

"अच्छा बताओ, कैसे हो ?"

"मैं तो ठीक हूँ···तुम ?"

"मैं भी ठीक हूँ, परन्तु···।"

"परन्तु क्या ?"

मिताली बोली, "आज विश्वविद्यालय में जो हत्याकाण्ड हुआ, उसके बारे में पता है ?"

"हाँ, वह सब अच्छा नहीं हुआ। न जाने कितनी छात्राएँ मर गई।"

"और··· ?"

"लापता है ?"

"और··· ?"

"आत्महत्या कर गई।"

"और··· ?"

"शेष तुम जानती ही हो।" मिताली की ओर देखकर ओतिन बोला, "मुझे एक यौवनमयी, भावनामयी, सौन्दर्यमयी तरुणी चाहिए।"

"कि ? (क्या)" मिताली ने ऊँचे स्वर में कहा।

"घबराओ नहीं, ऐसी लड़की, जो डरपोक न हो। सुन्दर हो, चतुर हो। जो जासूसी का काम कर सके।"

"मैं ?"

"नहीं, तुम नहीं।"

"क्यों ?"

"तुम वहीं ठीक हो।"

"मैं भी राष्ट्र सेवा करना चाहती हूँ।"

"वहाँ रह कर भी तुम राष्ट्र-सेवा कर सकती हो, राष्ट्र के नाम संदेश देकर कि तुम हम से अलग नहीं हो।"

"वह तो ठीक है।" कुछ सोच कर मिताली बोली, "आज ही मेरी एक बान्धवी (सहेली) पाक सैनिकों की बर्बरता का शिकार होते-होते बच गई। शायद वह जासूसी का काम कर सके।"

"कैसी है वह ?"

"आपकी कल्पना पर खरी उतरेगी।"

"फिर तो हमारी योजना सफल हो जायेगी। कब मिलाओगी उसे ?"

"जब तुम कहो।"

"अभी।"

"इतनी रात गये !"

"क्यों ?"

"ऐसी कोई बात नहीं ! थकी थी, सो गई होगी। सुबह उससे आपका

परिचय करा दूँगी।"

"तुम्हें उस पर विश्वास है न?"

"आप चिन्ता न करें।"

"आज ढाका में गुजरते समय अब भी लाशों की गंध आती है। छात्रावास से तथा निकटवर्ती क्षेत्र से लड़कियों को पकड़ कर छावनी ले जाया गया। ढाका के अतिरिक्त जैसोर, फरीदकोट, तांगल और काहिरा—सभी स्थानों पर यह काण्ड दोहराया गया है। समाचार मिला है कि ढाका के पास एक ग्राम में बन्दूक दिखाकर पाक सैनिकों ने एक बाप को अपनी कन्या के साथ अनुचित सम्बन्ध स्थापित करने को कहा। जब बाप ने विरोध किया तो बाप को बन्दूक की नोक से मार दिया और यौवनमयी तरुणी को बाप के सामने परिधान-रहित करके उसका नारीत्व नष्ट कर दिया। छात्रावास की दीवारों पर रक्त के धब्बे, गोलियों के छेद, ये सभी तो पाक सैनिकों की बर्बरता की कहानी कहते हैं।"

"फिर मुक्ति वाहिनी क्या कर रही है?"

"हमने बहुत किया। यदि हम कुछ न करते तो ढाका में ही पाँच हजार हत्याएँ होतीं, जिनकी सूची पाक अधिकारियों ने बनाई थी। पूरे ढाका में एक भी बुद्धिजीवी नहीं मिलता।"

"अब भी हर परिवार का कोई न कोई सदस्य मारा गया या लापता है।"

उसी समय ओतिन बोला, "कल फिर मैं अल्पाहार के समय घर पर आऊँगा।"

"क्या खाओगे?"

"जो खिलाओगी। मखमलों पर सोने वालों के स्वप्न जमीन पर सोने वालों के स्वप्नों से सुन्दर नहीं होते।"

"आपकी बात समझ में नहीं आती।"

"अच्छा है, न समझो।"

मिताली बोली, "कल मेरे साथ भी अगर कुछ ऐसा हो गया, तब…?"

ओतिन बोला, "राष्ट्र के लिये मरने की भावना तुम्हारा साथ देगी। तुम अपनी ओर क्यों देखती हो? उनकी ओर देखो, जिनके साथ ऐसा हो चुका है

ग्रौर जो जिन्दा हैं।"

"उनके जिन्दा रहने से लाभ…?"

"यह तो बाद में पता लगेगा।"

"क्या ?"

ग्रोतिन बोला, "न जाने कितनी तरुणी कितने सैनिकों की इच्छापूर्ति के लिये कैम्पों में हैं। यदि यह भावना पाक सैनिकों में न होती तो ग्राज हम-तुम भी जिन्दा न रहते। यह कमजोरी हमारी विजय लेकर ग्रायेगी ग्रौर पाक का पतन होगा।"

"लुटने के बाद विजय ग्रायी, उनका पतन हुग्रा तो फिर क्या लाभ ?"

ग्रोतिन बोला, "कुरबानी तो करनी ही होगी। कल का कार्यक्रम तुम्हे बताना भूल ही गया। कल हमारी टुकड़ियाँ विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर ग्रधिकार कर लेंगी, जिनमें कई स्टेशन ऐसे हैं जो हमारी विजय को समीप ला देंगे।"

मिताली बोली, "ग्रौर मेरा काम ?"

"रेडियो स्टेशन पर रहना, प्रसारण करना। उसमें मेरी बात का विशेष घ्यान रखना है। एक काम ग्रौर करना है। ललिका का भी गुप्त रूप से कुछ दिन घ्यान रखना होगा।"

"उसे क्या करना होगा ?"

"उसका काम बहुत गुप्त है।"

"मुझे भी तो पता लगे।"

"फिर गुप्त ही क्या हुग्रा ?"

"मुझ से भी गुप्त रखोगे ?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं।"

"फिर ?"

ग्रोतिन उसके कपोलो पर चिकोटी लेकर बोला, "तुम से कैसे गुप्त रखा जा सकता है ? तुम तो योजना की शृंखला की कड़ी हो।"

मिताली ने लज्जावश ग्राँखों का ग्रावरण गिरा दिया। चाँद-सा मुखड़ा हाथो में ऐसा लग रहा था मानो सीपी के मध्य मोती रखा हो। मिताली ने ग्रोतिन को देखा। उसी ग्रवस्था में धीरे से बोली, "इस एकान्त में ऐसा

वातावरण पैदा न करो, जिससे मूल कार्य का पथ पथरीला तथा ऊबड़-खाबड़ बन जाए।"

श्रोतिन अपने हाथों को देख कर बोला, "भूल स्वीकार करता हूँ ?"

"ऐसी कोई बात नहीं।" मिताली बोली, "मुझे आपत्ति कोई नहीं है। मैं तो तुम्हारी सम्पत्ति की रक्षक हूँ। तुम जब चाहो…।"

श्रोतिन ने उसके अधरों पर हाथ रख कर कहा, "बस, अधिक न कहो।"

प्रातः के चार बज चुके थे।

श्रोतिन बोला, "चलो, तुम्हें छोड़ आऊँ ?"

"नहीं, मैं स्वयं चली जाऊँगी।"

"कोई मिल गया तो…?"

"देखा जायेगा, तुम्हारे साथ जाने में अधिक खतरा है।"

श्रोतिन सोच कर बोला, "हाँ, तुम ठीक कहती हो।"

जाते-जाते मिताली कह गई, "मैं प्रातः अल्पाहार पर प्रतीक्षा करूँगी।"

और मिताली चली गई। श्रोतिन द्वार पर खड़ा उसे देखता रहा।

तीन

रात के हंगामें के कारण आज की सुबह बड़ी मुरदा और उदास थी। और उससे अधिक मुरदा और उदास ललिका थी। उसे चिंता थी अंजिका की। न जाने कहाँ होगी ? जिन्दा भी है या नही ? यदि जिन्दा है और पाक सैनिकों के चंगुल मे आ गई है तो अपनी रक्षा कैसे कर पायेगी ?

उसी समय वहाँ ओतिन आ गया। ललिका को देख ओतिन समझ गया कि मिताली इसी के विषय मे बातें कर रही थी। ललिका की मृग की-सी आँखे थी, लजीले यौवन-सौन्दर्य की प्रतिमा-सी देह। काले रेशम जैसे केश उस समय खुले थे। कुछ वक्ष-प्रदेश पर पड़े थे, कुछ कटि पर लहलहा रहे थे। नीले हलके परिधान तथा खुले केशो में वह ऐसी लग रही थी मानो नीले शुभ्र आकाश मे काली घटा का राज्य हो गया हो। ओतिन देखता ही रह गया।

मिताली आकर बोली, "कब आये ?"

"अभी।"

"इनसे मिलो, ये है मेरी सहेली ललिका, जिनके विषय मे मैने आपसे बात की थी।"

ओतिन बोला, "इनसे तुमने कह दिया ?"

"नही, आप ही कहो।"

"इनको कोई आपत्ति तो नही होगी ?"

ललिका की ओर देखकर मिताली बोली, "आप अपनी बात कहो, योजना बताओ।"

ललिका धीरे से आँखें उठा कर बोली, "क्या कुछ मेरे विषय में कहना है ?"

"हाँ ।"

"कहो ।"

उसी समय ओतिन बोला, "तुम तो जानती ही हो, देश में कैसी अवस्था है ।"

ललिका ने कहा, "मैं केवल जानती ही नहीं, स्वयं उसका शिकार भी हो चुकी हूँ ।"

"फिर तुम को एक काम करना होगा ।"

"कहो ।"

"जान भी जा सकती है ।"

"कोई बात नहीं ।"

"काम कठिन है ।"

"मैं करूँगी ।"

"कष्टदायक भी है ।"

"सहन करूँगी ।"

ओतिन बोला, "तुमको जासूसी करनी होगी । कल बंगला देश स्वतंत्र घोषित कर दिया गया । परन्तु पाक सेना से हमें टक्कर लेनी है । उन्हें देश से निकालना है । उसमें हमे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता पड़ेगी ।"

"मैं अपने देश के लिए सब कुछ कर सकती हूँ ।"

ओतिन बोला, "तुमको अपना नाम बदलना होगा । काम बदलना होगा । सभी राज गुप्त रखने होंगे । कैसा भी अवसर आने पर इस बात का ध्यान रखना होगा कि कोई राज किसी को पता न लगे ।"

"मैं तन-मन-धन सब कुछ लगा दूँगी। "

"इसमे धन की आवश्यकता नही है । मन लगा कर काम करना और तन को रक्षा करना, बुद्धि से काम लेना । तुमको कभी असफलता नही मिलेगी ।"

"मैं सभी आदेशों का पालन करूँगी ।"

"फिर हमारा देश अधिक दिन गुलाम नहीं रह सकता । जब तुम जैसी

नारियाँ देश में हैं तो फिर गुलामी की जंजीरें स्वयं टूट जायेंगी।"

"मुझे क्या करना होगा ?"

"यह सब भी बता दिया जायेगा।"

"कब ?"

"आज सन्ध्या को बताए स्थान पर मिलना। तुम्हारे काम की सूची तुमको दे दी जाएगी।"

मिताली मेज पर अल्पाहार लगाकर बोली, "पहले कुछ खा लिया जाए।"

ग्रोतिन बोला, "जैसी आपकी इच्छा।"

उसी समय गोलियों के चलने की आवाज आई। आकाश में विमान की ध्वनि और दूर कहीं तोपों की ध्वनि से ऐसा लगता था कि जैसे पाक सेना ने फिर कहीं आक्रमण कर दिया है।

ग्रोतिन नाश्ता न कर चला गया और ललिका से सन्ध्या समय मिलने को कह गया। मिताली ने साथ चलने को कहा, परन्तु ग्रोतिन अकेला ही गया।

ग्रोतिन जब उस स्थान पर पहुँचा तो पता लगा कि ढाका के समीप सभी नदियों पर, सभी पुलों को हानि पहुँचा दी गई है और मुक्ति वाहिनी की टुकड़ियाँ गाँवों में जाकर गावों को पाक सेना से मुक्त करा रही है।

ग्रोतिन के कार्य की रूप-रेखा अतुल तैयार करता था, जो समाज-सेवक था। मुजीब का समर्थक था। युवक, बहादुर एवं निडर था। समाचारपत्र का सह-सम्पादक था। मुक्ति वाहिनी की टुकड़ी का कमांडर था। उसी की योजना के आधार पर पुलों को हानि पहुँचाई गई थी। चटगाँव, चाँदपुर, सिलहट इत्यादि नगरों में मुक्ति वाहिनी ने पाक सेना का सामना किया और अनेक स्थानों पर विजय प्राप्त की। उसी ने ग्रोतिन को कहा था कि एक तरुणी गुप्तचर के रूप में नियुक्त की जाए जो पाक सैनिकों के कैम्प में जाकर उनके गुप्त कागजों तथा योजना का पता लगाए तथा आधुनिक हथियार और अन्य सामग्री का पता लगाए कि कहाँ, किस जगह रखी हैं और कराची से जलपोत कब आएगा जिसमें पाक सैनिकों की खाद्य-सामग्री तथा युद्ध-सामग्री होगी।

जिस समय श्रोतिन अतुल के योजना-कक्ष में पहुँचा, वह बैठा हुआ बंगला देश का मानचित्र देख रहा था।

श्रोतिन ने जाते ही कहा, "सर, अभी पाकिस्तानी जहाज कुछ दूर पर शोर करते मँडरा रहे थे। हवा को चीरती जहाजों की चीखें कानों में आर-पार हो रही थी। क्या ये बमवर्षक थे? उन्होंने कहीं बम गिराए अथवा वैसे ही चले गए?"

"हाँ, वे बमवर्षक थे। उन्होंने धानमण्डी के क्षेत्र में बम गिराए। परन्तु कोई अधिक हानि नहीं हुई। मार्ग में खेलते दो शिशु घायल हो गए जिन्हें मुक्ति वाहिनी उठा कर ले गई। उपचार के पश्चात् उन्हें उनके संरक्षकों को सौंप दिया गया। छत पर केश सुखाती एक दुलहन, जिसका विवाह इसी सप्ताह हुआ था, बम लगने से मर गई। हाथ की मेंहदी, माँग का सिन्दूर, ललाट पर लगी बिन्दी, और पैरों की पायल सहित उसकी अन्तिम यात्रा पूरी कर दी गई। एक गर्भवती युवती भी बमवर्षा का शिकार हुई।"

कुछ देर मौन रहकर अतुल बोला, "गुप्तचर का कुछ हुआ?"

"हो गया।"

"कौन है?"

"मेरे मित्र की चिर-परिचित सखी है।"

"तुमने देख लिया है?"

"हाँ।"

"धोखा तो नहीं देगी?"

"प्रश्न ही पैदा नहीं होता।"

"यह काम कर सकेगी?"

"आशा तो है।"

"उसके कार्य में तुम सहयोग देना।"

"परन्तु उसे क्या करना होगा?"

"लो यह कागज, इसमें सब लिखा है।" कागज देकर अतुल बोला, "क्या वह प्रेम इत्यादि का अभिनय कर सकेगी?"

"क्यों न कर सकेगी?"

"उसने कभी किसी से प्रेम किया है?"

"नारी को प्रेम करना सीखने की आवश्यकता नहीं होती। वह तो जन्म से ही प्रेम करती है। भाई, बहन व परिवार के अन्य सदस्यों से प्रेम करने के कारण ही तो वह परिवार की शुभचिन्तक बनती है।"

"उस प्रेम और इस प्रेम मे अन्तर है।"

"वह ऐसा करने में पीछे नही रहेगी।"

अतुल बोला, "मैंने इस कागज में सभी बातें लिख दी हैं, जो तुमको करनी हैं। क्या नाम है उस लड़की का ?"

"ललिका।"

"उसका नाम तुम 'जाहिदा' रख दो। नाम, भाषा तथा वेषभूषा पाकिस्तानी होनी चाहिए। उसको कैम्प मे फटे हाल में जाना होगा। मुक्ति वाहिनी पर आरोप लगाएगी कि उन्होंने उसको अपमानित किया है। इस तरह उनकी विश्वासपात्र बन जाएगी।"

अोतिन बोला, "फिर ?"

"जब वह इतना कर पायेगी, तो उसको अग्रिम योजना की रूपरेखा से अवगत कर दिया जायेगा।"

अोतिन बोला, "ठीक है।"

अतुल ने कहा, "तुम चटगांव और ढाका के उपनगरों, तागल, फरीदपुर, मैंमनसिंह, रंगपुर में विस्फोट करने की सूची मुक्ति वाहिनी को भेज दो। वैसे मुक्ति वाहिनी ने सतखीरा नगर में अपना घेरा मजबूत कर लिया है। जैसोर सैक्टर में अपने उखड़ते पैरों को फिर सुदृढ़ कर लिया है और इसी सैक्टर में ठाकुर गांव पर अधिकार करने के बाद दीनाजपुर की ओर बढ़ते हुए हठई नदी तक पहुँच गई है।"

अोतिन बोला, "फिर तो वह दिन दूर नहीं, जब हम पूर्ण स्वतंत्र हो जायेंगे।"

"हमारा दृढ़ निश्चय है कि मार्च में हम अपने देश की स्वतन्त्रता की प्रथम वर्षगांठ मनायेंगे।"

"क्या यह आवाज मुजीब की है ?"

"ऐसा ही समझो।"

"धन्य है मुजीब !"

अतुल बगला देश के मानचित्र को देखकर बोला, "मैमनसिंह सैक्टर की कमालपुर चौकी पर हमारा अधिकार हो ही जाएगा। बलूच रेजीमेंट के पाकिस्तानी सैनिकों ने मुक्ति वाहिनी का समर्थन किया है। इसके बाद सिलहट सैक्टर में वहाँ के शमशेर नगर हवाई अड्डे पर अधिकार करना होगा। उसमें तुम्हारे गुप्तचर का मुख्य कार्य होगा। इसी सैक्टर में गाजीपुर व आस-पास के अन्य क्षेत्रों पर भी हम तुरन्त अधिकार कर लेंगे।"

उसी समय मुक्ति वाहिनी का एक जवान आया। उसने बताया कि अभी-अभी सूचना मिली है कि चटगांव बन्दरगाह पर दो गनबोटों को मुक्ति वाहिनी के जवानों ने डुबो दिया। कराची सैनिक-सामग्री ले जाने वाले पाक पोत को पकड़ लिया है। इससे मुक्ति वाहिनी को सामग्री तो मिली ही है, पाक सेना के उस क्षेत्र में पैर भी उखड़ गए हैं।"

अतुल ने जवान को देखकर कहा, "शाबाश ! बहुत अच्छा !"

आगुन्तक चला गया। ओतिन ने फिर बंगला देश का ध्वज देखा जो मेज पर कलमदान के समीप विद्युत पंखे की वायु में लहरा रहा था।

अतुल कुछ कहना चाहता था। उसी समय फोन की घंटी ने मुंह की बात को रोक दिया। रिसीवर उठाकर बोला, "हलो······मैं बोल रहा हूँ······ आज रात को······ठीक है···आज रात को ही ठीक है। मैं ओतिन को भेज रहा हूँ।"

अतुल ने रसीवर रख दिया और ओतिन की ओर देखकर बोला, "जानते हो, किसका फोन था ?"

"नहीं।"

"डाक्टर चौधरी का।"

"कौन डाक्टर चौधरी ?"

"मुजीब का निजी सहायक।"

"क्या कह रहा था ?"

"आज रात को बोगरा के उत्तर में सोलह मील दूर गोविन्दगंज के निकट तीन पाक वाहन सैनिक-सामग्री लेकर बोगरा की ओर चलेंगे। उन वाहनों को वहीं पकड़ कर पाक सैनिकों को बन्दी बनाकर सामग्री मुक्ति वाहिनी के जवानों को दे दी जायेगी। यह काम तुमको करना होगा। उन

वाहनों पर 'पूनी सैफ' लिखा होगा, जिसमे गोला-बारूद लदा होगा। बोगरा सोलहवी पाल इन्फैंटरी डिविजन इन वाहनों का संचालन करेगा। ध्यान रहे, बोगरा नामक प्रमुख नगर पाकिस्तानी सेना की डिविजन का प्रधान कार्यालय है। इस कार्य के लिए तुमको दस लड़की तथा पचास जवान मिलेंगे।"

"लड़कियों का क्या होगा ?"

अतुल बोला, "तुम भी पागल हो। एक कारवां चलाओ, जिसमें उन लड़कियों को लेकर जाओ। पाकिस्तानी कुत्ते नारी को देखकर राष्ट्र-सेवा को भूल जायेंगे। लड़कियों के पास अपनी रक्षा के लिए कटार होनी चाहिये ताकि समय पर वे नारीत्व की रक्षा कर सके। उन्हे शिक्षा दी गई है, वे मर जायेंगी पर अपने आँचल पर दाग नही लगने देंगी।"

"मुझे कब जाना होगा ?"

"ललिका को मेरे पास छोडकर तुम जाने का प्रबन्ध करो। तब तक मैं ललिका को उसका कार्य समझा दूँ।"

ओतिन उठने लगा तो अतुल बोला, "और सुनो, मेजर नजीरहुसैन उन वाहनों को रात नौ बजे रवाना करेगा। वह स्वय आलसी तथा विलासी है। उसको तुमने बन्दी बना लिया तो आग लग जाएगी। इसलिए अभी तो तुमको युद्ध-सामग्री और मशीनगनें चाहिएँ। बस उन्ही को लेकर तुरन्त लौटना। तुम्हारे साथ वाहन ड्राइवर भी जायेंगे जो वाहन उचित स्थान पर पहुँचाकर मुझे सूचना दे देंगे।"

ओतिन ध्यान से सुनता रहा।

उसी अवस्था मे अतुल बोला, "क्या तुम किसी को प्रेम करते हो ?"

....

"मुझे उत्तर चाहिए।"

"मैं समझा नही।"

"क्या तुम किसी से प्रेम करते हो ?"

"हाँ।"

"किससे ?"

"बगला देश से।"

"यह तो सत्य है। मेरा अर्थ··· ।"

"नहीं ऐसी बात नहीं।"

"मुझे मेरे गुप्तचर ने सूचना दी थी।"

"क्या प्रेम करना पाप है ?"

"नहीं।"

"फिर ?"

"मेरे कहने का अर्थ यह है कि कहीं तुम नारी-प्रेम में राष्ट्रप्रेम का पथ भूल न जाओ।"

श्रोतिन बोला, "पहले राष्ट्र-प्रेम, फिर नारी-प्रेम। यदि मेरे जीवन में नारी-प्रेम कभी बाधा बना भी तो मैं उसका त्याग कर दूंगा। परन्तु राष्ट्र-प्रेम की भावना को मरते दम तक भी नहीं छोड़ूंगा।

"सच ! तुम वीर हो।"

"परन्तु एक बात है, सर।"

"कहो।"

"मेरी प्रेरणा नारी है। मैंने उसकी साधना करके ही राष्ट्र-प्रेम का पौधा अपने उर में उगाया है।"

"कौन है वह देवी ?"

"आपने नाम तो सुना है।"

"कब ?"

"रोज ही सुनते है।"

अतुल श्रोतिन का मुँह देखने लगा। उसे उसकी बात का विश्वास नही हुआ।

इसीलिये अतुल बोला, "यह तो एक पहेली बन गई।"

"आपने······।"

श्रोतिन अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि काल बैल की ध्वनि ने दोनों को शान्त कर दिया।

उसी समय अतुल बोला, "शायद कोई है। तुम बैठो, मैं देखता हूँ।"

श्रोतिन बोला, "आप बैठिये, सर ! मैं देखता हूँ।"

"शायद तुम पहचान न सको।"

"यह बात तो ठीक है।"

"अच्छा, तुम चलो। लतिका को मेरे पास छोड़ जाना। गाड़ी नम्बर दस और उसके साथ खड़े वाहन तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे।"

ज्योतिन पीछे वाले द्वार से चला गया। विद्युत घंटी फिर बजी।

कुरसी पर बैठे-ही-बैठे अतुल ने कहा, "कौन ?" इसके पूर्व ही उसने मेज के कागज मेज पर से हटा कर अपने रिवालवर पर हाथ रख लिया।

बाहर से आवाज आई, "बाई नम्बर पांच।"

यह बंगला देश में मुक्ति वाहिनी का कोर्ड वर्ड था, जिसको अतुल तथा उसके गुप्तचर ही जानते थे।

बाई नम्बर पांच अन्दर आ गया। उसके एक हाथ में पट्टी बंधी थी। ऐसा लगता था, जैसे हथेली से गोली पार हो गई हो।

अतुल उसके हाथ को देखकर बोला, "नम्बर पांच, यह क्या हुआ ?"

"गोली लग गई।"

"कैसे ?"

"कैम्प में।"

"लेकिन तुम तो वहां रसोइया बन कर गए थे, फिर गोली कैसे लग गई ?"

"एक लड़की की रक्षा करते समय।"

अतुल ने आंखों पर पलकों का आवरण डाल दिया। वह समझ गया कि पाक सैनिकों ने उस पर अत्याचार किया होगा।

कुछ क्षण मौन रहकर नम्बर पांच बोला, "मैं मेजर का खाना लेकर उस कमरे में गया था, जिसमें मेजर एक बंगाली लड़की के साथ बैठे थे।"

अतुल ने कहा, "हूं।"

नम्बर पांच बोला, "आगे आप भी जानते हैं। जब उसके मुंह में मेजर ने भात डाला, लड़की ने उसका हाथ झटक दिया। मेजर ने उसके मुंह पर एक तमाचा मारा। ऐसा देख कर मेरा खून खौल उठा। मैंने मेजर को उठाकर जमीन पर पटक दिया। परन्तु मुझे मालूम नहीं था, उसके पास रिवालवर है। उसने मुझपर गोली चलाई। उसी समय लड़की मेरे सामने आ गई। पहली गोली मुझे न लग कर उस मासूम को लग गई जो आज जिन्दा नहीं है। दूसरी गोली मेरी हथेली पर लगी। बस भाग्य था मेरा कि रिवालवर में

"नही।"

"फिर ?"

"मैं स्वय ही बुला लूंगा।"

नम्बर पांच जाता हुआ बोला, "जनता ने कुओं का पानी पीना छोड़ दिया है, क्योंकि पाक सेना ने कुँओं में विप डाल दिया है। कई कुँओं मे लाशें भी पड़ी हैं। छोटी नदियो की मछलियाँ भी कोई नही खरीदता। जनता का मत है कि वे भी लाशें खा कर मोटी हुई हैं।"

अतुल बोला, "बलात्कार और हत्या ही तक पाक सैनिक सीमित नही रहे। हर घर को उन्होंने एक बार तो रौंद ही डाला और जो कुछ भी मिला, उठा कर ले गये।"

'तभी तो लोग रात को बाहर घूमने से डरते है। पचास हजार लोग भारत जा चुके है।"

अतुल बोला, "पाकिस्तान के तानाशाह नेता बंगाल की जनता को कुचल देना चाहते हैं। वे चाहते हैं, बंगाल की संस्कृति को नष्ट कर दिया जाए ताकि भविष्य में कभी पनपने का नाम न ले। लेकिन पाक नेता यह नहीं जानते—बगाल का बच्चा-बच्चा देश पर मर जायेगा परन्तु अत्याचार सहन नही करेगा। हम ही नही, सारा संसार जानता है कि पाक सेना धर्म के नाम पर अपने मित्रो से सहायता प्राप्त करती है। शायद वे राष्ट्र यह नही जानते कि पाक के तानाशाह नेताओ का यह एक ऐसा कदम है, जिसके उठाने से पाकिस्तान स्वयं नष्ट हो जायेगा, अपना विश्वास खो देगा। एक न-एक दिन यह अनुभव करेगा कि जो कदम उठाया गया था, वह अनुचित था।"

उसी भाव में फिर बोला, "याह्याखाँ स्वयं एक दिन पदच्युत कर दिया जायेगा या परिस्थितियों के चक्र में आकर स्वयं पद त्याग देगा।"

"लेकिन नया राष्ट्रपति कौन होगा ?"

"कोई भी हो, पाकिस्तान का भाग्य बदल नही सकता। विदेश नीति नही बदल सकता। घरेलू समस्याएँ ही पाक को खोखला कर देंगी। पाक का कोई भी राष्ट्रपति हो, वह भी उसी वातावरण तथा संस्कृति में पला है, जिसमे उसके भूतपूर्व नेताओं ने जन्म लिया है। फिर आने वाला राष्ट्रपति भी वर्तमान

राष्ट्रपति के पदचिन्हों पर चलेगा। कुछ भी हो, भविष्यवाणी यह कहती है कि पाकिस्तान अपनी घरेलू समस्याओं का समाधान करते-करते समाप्त हो जायेगा। पाक जिसका अंग है, जिससे पाक की उत्पत्ति हुई, उसी का नहीं हो सका, उसका पड़ोसी न बन सका तो दूर के राष्ट्र पाक से क्या आशा रख सकते हैं ? जो रखते भी हैं, उनकी आशा शीघ्र ही निराशा में बदल जायेगी।"

नम्बर पांच चला गया। अतुल फिर योजना बनाने में लग गया।

चार

अप्रैल के अन्तिम दिनों मे मुक्ति वाहिनी के सैनिकों ने स्थान-स्थान पर पाक सैनिकों का सामना किया। उन्होंने ढाका, सिलहट आदि बड़े नगरों पर अधिकार कर लिया। पाक की चौकियाँ भारत की सीमा पर समाप्त हो गईं। भारत का पूर्वी बंगाल को रास्ता आम होगया। पूर्वी पाक की सीमा पर खड़ा ओतिन देख रहा था कि लाशों को कुत्ते खा रहे थे। क्या बच्चे, क्या नर-नारी—सबकी हत्या का यह खुला बाजार देखकर ओतिन की आँखें भर आईं।

उसी दिन उसने देखा कि बंगाली लड़कियों को पकड़-पकड कर कैम्पो मे ले जाया गया। उन्हें सैनिकों के मनोरंजन के लिए वेश्याओं के रूप मे रखा गया। जो लड़कियाँ दो सप्ताह पूर्व उठाई गई थी, उन्हे मार कर उनकी लाशें गिद्धों के खाने के लिए मार्ग में फेक दी गईं। अधिकतर लाशें उन्ही लड़कियों की थी, जो ओतिन के सामने उस दिन उठाई गई थी।

वह वहाँ से चल दिया। एक शिविर मे आया, जहाँ की दशा दयनीय थी। बच्चों का बुरा हाल था। नारियाँ कराह रही थी। उचित खाना न मिलने के कारण सारा शिविर रोग का शिकार हो गया था। सैकडो बच्चे रोज मरने लगे। वह वहाँ भी अधिक देर नही रुका, उसी समय घर आ गया, जहाँ मिताली उसका इन्तजार कर रही थी। ओतिन को व्याकुल दशा मे देखकर बोली, "आज आरो खाराब खाबोर ? (आज अधिक बुरी खबर है ?)"

पार बोलो ना (कुछ न पूछो) ।"

मिताली ने फिर कहा, "समझ मे नही आता, सारा संसार इस अमानुषिक घटना पर चुप क्यो है ?"

"हाँ मिताली, अरब, तुर्की, ईरान, मलयेशिया आदि सभी देश मुस्लिम होने के कारण पाक का समर्थन करते है ।"

"इसीलिए पाक के पाप को देखकर उन्होंने आँखें बन्द कर ली ।"

ज्योतिन बोला, "इतना ही नही, ब्रिटेन, पश्चिम जर्मनी, फ्रास, जापान आदि भी मौन है ।"

"कनाडा और आस्ट्रेलिया की सरकार भी दबे स्वर मे बोलती है ।"

ज्योतिन रूखे स्वर मे बोला, "चीन और अमेरिका ने जो कार्य किया है उससे उन से भारत के सम्बन्ध और बिगड जायेंगे ।"

"यह बात ठीक है । उन्होने पाक सरकार पर इतना जोर नही डाला, जितना बगला देश के राजनीतिक नेताओं पर डाला । अमेरिका ने इस समस्या मे नया मोड ले लिया । जो अमेरिका चीन को अपना शत्रु समझता था, आज उसी से वार्ता करता है ।"

"अच्छा, तुम को भी अमेरिका के राष्ट्रपति के विशेष सलाहकार हेनरी किसिंगर की गुप्त यात्रा का पता लग गया ।"

"मैं क्या, सारा संसार जानता है । इतना ही नही, निक्सन साहब भी शायद फरवरी मे चीन जाएँ ।"

"परन्तु अमेरिकी जनता पाक अत्याचारो को देखकर मौन नही है ।"

ज्योतिन बोला, "जनता केवल आवाज ही उठा सकती है, कुछ कर नहीं सकती ।"

"ऐसा क्यो ?"

"देख लो, तुम्हारे सामने है । अमेरिकी जनता वियतनाम में हो रहे युद्ध के विरुद्ध भी आवाज उठाती आयी है, पर कुछ हुआ ? कुछ नही, और तब तक नही हो सकता जब तक नए राष्ट्रपति का चुनाव न हो और चुनाव नवम्बर १९७२ से पहले होंगे नही । उससे पूर्व युद्ध बन्द नही होगा ।"

ज्योतिन शान्त रहा । वह कुछ न कह सका ।

मिताली ने फिर कहा, "ललिता को भेज दिया गया ?"

"हाँ।"

"कहाँ ?"

"यह तो अतुल ही जानता है ।"

"तुमको नहीं मालूम ?"

"मैं इस विषय मे अभी कुछ नही कह सकता ।"

"क्यो ?"

"मुझे ऐसा ही आदेश है ।"

"किसका ?"

"योजना-निर्देशक का ।" कुछ क्षण मौन रहकर अोतिन बोला, "घबराने की कोई बात नही है। हमारे आदमी उसके साथ है। जहाँ वह है, उसी स्थान पर हमारा विशेष दूत भी है ।"

"उसे क्या करना होगा ?"

"पाक सेना की गतिविधि की रूपरेखा हम तक पहुँचानी होगी ।"

"वह ऐसा कर सकेगी ?"

"आशा तो है ।"

"कही उसकी सुन्दरता इस कार्य मे बाधक न बन जाए ?"

"ऐसा नही होगा । वह इतनी चतुर और बुद्धिमान है कि अपना काम सुगमता से निकाल लेगी ।"

"तुम तो एक दिन मे ही इतना जान गये । कही तुम पर जादू तो नही कर गई ?"

"मुझ पर जादू कर गई, तभी तो मैं कह रहा हूँ ।"

मिताली समीप आकर बोली, "ऐसा न कहो, फिर मेरा क्या होगा ?"

"यह तो तुम जानो ।"

"तुमको कुछ मालूम नही ?"

अोतिन क्षणिक मुसकरा कर बोला, "नही ।"

मिताली आँखें उठाकर बोली, "मैं रोने लगूँगी ।"

"और इससे अधिक तुम कर ही क्या सकती हो ?"

मिताली की आँखें भर आयी थी । वह उन्ही आँखों से बोली, "अोतिन ।"

मिताली ने प्रोतिन को देखा और प्रोतिन ने मिताली को। बोला, "अरे, तुम तो सचमुच रोने लगीं। पगली, तुम भी क्या समझ बैठीं ! मेरे ऊपर वह जादू कर गई, यह सच है, परन्तु अपनी बुद्धि का, योग्यता का, न कि यौवन की मादकता का।"

कथन के साथ ही एक बार फिर मिताली ने प्रोतिन को देखा और साड़ी के छोर से आंसू पोंछ लिए। बोली, "तुमने तो मेरे प्राण ही निकाल दिये थे।"

प्रोतिन मुसकराकर प्रेमातुर स्वर में बोला, "आ भी जल्दी गये।"

मिताली प्रोतिन को देखकर बोली, "अंजिका का अभी कुछ पता नहीं है, कहीं ललिका को भी कुछ न हो जाए।"

"मैं पहले भी कह चुका हूँ और आज भी कह रहा हूँ, देश के लिए प्राण देना गर्व की बात है। न जाने कितनी ललिका चली गईं, कितनी लापता हैं और कितनी ही मिताली चली जायेंगी।"

"मुझे अपनी चिन्ता नहीं है।"

"फिर ?"

"दूसरे के विषय में सोचना पड़ता है। आप मुझे भेज दो, खुशी-खुशी चली जाऊँगी -"

"समय आया, तो तुमको भी जाना होगा।"

"मैं अपना सौभाग्य समझूँगी।" प्रोतिन की ओर देखकर बोली, "फिर कब...... ?"

"अभी नहीं।"

"क्यों ?"

"अभी तुम जहाँ हो, वहीं पर काम करो।"

"वहाँ पर तो मैं काम कर ही रही हूँ।"

"वह सेवा भी तुम्हारी कम नहीं है।"

मिताली बोली, "अब तुम कुछ खा लो, सुबह से तुमने कुछ खाया नहीं।"

"इच्छा नहीं है।"

"ऐसे कब तक चलेगा। कुछ खाओगे तभी कुछ कर सकोगे। काम करने के

लिए खाना बहुत ग्रावश्यक है।"

"कुछ विशेष बनाया है ?"

"नहीं, वही भात, जो रोज बनता है।" कहने के साथ ही मिताली रसोई घर की ओर चली गई !

ग्रोतिन मन-दृष्टि को लेकर फिर विचार-श्रृंखला में बंधा हुआ शिविर में पहुंच गया। एक दिन बंगला देश के सामने सबसे बड़ी समस्या युद्ध के दौरान पैदा हुए शिशु बन जायेंगे। उनकी देख-भाल कैसे की जायेगी ? उनकी ग्रभागी माताओं का जीवन फिर से कैसे सुखमय बनाया जाएगा ?

उसी शिविर में पद्मा नाम की एक तरुणी भी थी, जिसने अपने बारे में बताने से इनकार कर दिया था। पूर्वी बंगाल मे गंगा नदी को पद्मा नदी कहते है, जो शान्ति और पवित्रता का प्रतीक है। उसे 'पद्मा' जैसा नाम भी पसन्द था। कुछ समय पूर्व वह तरुणी किसी की पत्नी तथा बच्चों की मां थी। अब उसका कोई और नाम था।

लेकिन आज पूर्वी बंगाल में पाकिस्तानी सेना ने पद्मा नदी के पास सोए हुए शहर को तहस-नहस कर दिया। इसी नगर मे पद्मा नाम की वह महिला अपने बच्चो के साथ रहती थी। पाक दरिन्दो ने इस महिला के निकट सम्बन्धियों को मार डाला और वह स्वयं बलात्कार का शिकार बन गई।

किसी प्रकार वह अपने प्राण बचा कर पाक सैनिकों के पंजों से निकलकर शिविर मे आ गई। यह महिला आज गर्भवती है। पूर्वी बंगाल में हजारों की संख्या में ऐसी पद्मा, सुलताना, कावेरी और कृष्णा ऐसी परिस्थिति में हैं। उनमे से बहुतो ने तो अपना असली नाम बताने से इनकार कर दिया, ताकि नई परिस्थिति के अनुसार अपने को ढाल सके। उनके साथ जो अमानुषिक व्यवहार हुआ है, उसकी याद भुला सकें।

पद्मा यह अनुभव करती है कि सम्भवत: उस दुर्भाग्यपूर्ण सन्ध्या को उसके पति और बच्चों को मार दिया गया था। उसने अपने पति की कराह सुनी थी। आज वह चाहती है कि लोग समझें कि 'पद्मा' नाम की नारी मर गई है।

पच्चीस वर्ष की पद्मा ने कालेज की शिक्षा पाई थी। पूर्वी बंगाल के कई अन्य छात्रों की भांति वह भी उग्र विचारों की छात्रा थी। बाद में उसने

सरकारी कर्मचारी से विवाह कर लिया। वह गृहस्थी चलाने लगी। उसने भी स्वाधीन बंगला का स्वप्न देखा था। लेकिन उसे पता न था कि एक दिन वह भी स्वाधीनता-संग्राम के भँवर मे फँस जायेगी।

पद्मा के अलावा कई और नारियाँ भी शिविर में थी, जिनके साथ बलात्कार किया गया था। फिर वे अपने परिवार मे लौटकर नहीं गईं। आज भी हजारों नारियाँ शिविर में हैं। इनमें वे शामिल नहीं हैं, जो मार दी गईं या जिनके बारे में पता नही लग सका।

आज तो नही, बंगला देश के स्वाधीन होने के बाद एक बड़ी समस्या इन बच्चों की होगी जो माँ-बाप के मर जाने के कारण अनाथ हो गए हैं।

मिताली समीप आकर बोली, "खाना लगा दिया गया है, चलो, उठो।"

श्रोतिन उदास मुद्रा में आज्ञाकारी शिशु की भाँति उठ कर खाने की मेज के समीप पहुँच गया। उस समय उसने मुख से न कह, केवल आँखें उठाकर कहा, "तुम भी खाओ, मिताली।"

श्रोतिन कुरसी पर बैठ गया। मिताली कमरे के बीच दरवाजे पर किवाड़ का सहारा लेकर खड़ी हो गई। वह इस ढंग से खड़ी थी जैसे मीनाक्षी के मन्दिर मे बनी अनेक मूर्तियों मे से एक मूर्ति हो।

उसी कमरे में एक चित्र लगा था। उस चित्र मे एक तरुणी किवाड़ का सहारा लिये खड़ी थी, जिसके एक हाथ में पुस्तक थी। सीधे पल्ले की साड़ी पहने, आगे की ओर लटकती हुई एक चोटी, उभरा हुआ वक्षस्थल, गोल-गोल भरा हुआ चेहरा और उसमें झाँकते हुए खंजन पक्षी जैसे नयन। उस समय बड़ा ही आकर्षक लग रहा था मिताली का वह चित्र !

मन चाहता था कि हमेशा इसी प्रकार वह सामने खड़ी रहे और वह जी भरकर उसे देखता रहे। यह चित्र रक्षाबन्धन पर श्रोतिन ने अपने कैमरे से खींचा था। रक्षाबन्धन के एक दिन पहले जब मिताली कालेज में मिली, तो कहा, "कल रक्षाबन्धन है। पापा ने तुम्हें घर पर बुलाया है।"

श्रोतिन ने मुसकरा कर कहा, "क्या राखी बाँधने का विचार है ?"

"हटो ! कुछ सोच-समझ कर बोला करो। राखी बाँधने के अतिरिक्त और भी कुछ काम हो सकता है।"

"बुरा मान गई ?"

"तुम बात ही ऐसी कहते हो।"

"अच्छा यह बताओ, खिलाओगी क्या ?"

"जो तुम कहो।"

"पनीर-काजू वाले चावल और मछली।"

"स्वीकार है।"

"एक शर्त और है, फोटो भी देना होगा।"

"यह भी स्वीकार है।"

उस दिन श्रोतिन देर से आया। मिताली दरवाजे पर खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। श्रोतिन ने मिताली को इस मुद्रा में खड़ी देखा तो कैमरे का बटन दबा कर एक चित्र खींच लिया। यह वही चित्र है, जो कमरे में लगा है।

श्रोतिन कुर्सी पर बैठ कर चित्र को देखता रहा। मिताली ने लज्जा से नीचे की ओर पलकें झुका ली। श्रोतिन उठा और मिताली के समीप आकर खड़ा हो गया। अनायास ही श्रोतिन के दोनों हाथ उसके कन्धों पर आ गये। लज्जा से मिताली ने मुँह नीचे झुका लिया। एक हाथ से उसकी ठोड़ी ऊपर करते हुए श्रोतिन ने कहा, "तुम कितनी सुन्दर हो!"

क्षण भर को उसके नेत्र उठे, फिर बोझिल पलकें झुक गईं। रह-रह कर उसका उभरा हुआ वक्ष साँसों के साथ उठ-उठ कर गिर रहा था।

उस समय मिताली प्रसन्न थी। जैसे पाला मारी हुई वनस्पति सूर्य की किरण का स्पर्श पाकर लहलहा उठती है। चमेली की मुरझाई हुई कलियाँ जिस प्रकार चन्द्रमा का शीतल प्रकाश पाकर खिल उठती हैं।

श्रोतिन ने उसकी सीप जैसी आँखों में झाँक कर देखा। भावातिरेक में उसकी आँखों में प्रसन्नता के आँसू छलछला रहे थे।

श्रोतिन बोला, "तुम रो रही हो।"

उसने साड़ी के आँचल से आँसू पोंछते हुए कहा, "तुमको क्या हो गया है ?"

"बाद में बताऊँगा, पहले मेरे साथ कुछ खा लो।" श्रोतिन ने कहा।

मिताली विरोध न कर सकी।

खाने के समय वह श्रोतिन का साथ देती रही। उसकी इच्छा न होते हुए

भी उसे ऐसा करना पड़ा। स्नेह-भरी दृष्टि से मिताली ने कुछ भात श्रोतिन के मुंह मे डाला तो उसकी अँगुलियाँ फँस गई श्रोतिन के दाँतों के मध्य। पल भर के लिये वह तडप उठी। मुक्ति मिलने पर बोली, "बड़े वैसे हो!"

यह कहने के साथ ही वह अपनी कोमल अँगुलियों को देखने लगी जिनमें एक लाल रेखा अंकित हो गई थी।

श्रोतिन ने व्यंग्य-भरे स्वर मे कहा, "लाओ, सहला दूं।"

मिताली ने अलसाए नेत्रों से एक बार उसकी ओर देखा और फिर आँखें दूसरी ओर फेर लीं।

खाना समाप्त हो गया था। श्रोतिन धीरे से बोला, "वास्तव में खाना अच्छा बना था।"

"बना रहे हो या वास्तव में?"

"बना नहीं रहा, सच कह रहा हूँ।"

"धन्यवाद।" मुसकान-भरे स्वर मे मिताली ने कहा।

"एक बात बताओगे?"

"कहो।"

"सच-सच बताओ, हृदय के किसी कोने में मेरे लिये स्थान है? मैं चाहती हूँ, जीवन भर तुम्हारा साथ दूं। सदा साथ रहूँ! आपसे कभी वियोग न हो! मैं अपलक नेत्रों से आपको देखकर सब कुछ पा सकूं।"

"तुम समझदार होकर यह क्या मूर्खों का प्रलाप कर रही हो?"

"यौवन मूर्ख बना ही देता है।"

"तुम मुझसे क्या चाहती हो?"

"मृत्यु के समय मेरा शरीर आपके पैरों में हो, बस और कुछ नहीं चाहती।"

"किस रूप में मेरे साथ रहना चाहती हो?"

"जिस प्रकार तुम रख सको। मैं अकेली रहना नहीं चाहती। पता नहीं कब···कौन पशु आ जाए और···तब मुझे फिर से पाने के लिये ब्रह्माण्ड का कोना-कोना भी छान डालोगे, तब भी न मिल सकूँगी।"

"राष्ट्र के लिये मैं अपने को बलिदान कर दूंगा। अपनी भावनाओं को नष्ट कर दूंगा। तुम मेरी प्राण हो, मेरी साधना हो। मैं अपने प्राण भी

प्रसन्नता से राष्ट्र के लिये त्याग दूँगा।"

"मैं अपनी भूल स्वीकार करती हूँ। परन्तु ···।"

"परन्तु क्या ?"

"मैं तुमसे प्रेम करती हूँ।"

"यह तो नारी का स्वभाव है।"

"परन्तु नारी जीवन में एक बार प्यार करती है। मैं तुम्हारे बिना जिन्दा नहीं रह सकती।"

"मैं तुमसे उतना ही प्रेम करता हूँ, जितना राष्ट्र से। परन्तु प्रथम स्थान राष्ट्र का है।"

"तभी तो मैं कहती हूँ कि मुझे भी अपने साथ रखो, ताकि साथ-साथ मर सकें। चार हाथ मिलकर अधिक काम कर सकेंगे। मैं अपने प्राणों का बलिदान कर दूँगी, परन्तु तुम्हारी छाया में···।"

प्रसन्न मुद्रा में अोतिन आँखों से बोला, "जैसी तुम्हारी इच्छा। कल मैं तुम्हें अतुल से मिलवाऊँगा और उससे स्वीकृति प्राप्त करके आगे कोई योजना बनाऊँगा।"

मिताली भी आँखों से हँस दी और उसी मुद्रा में ओतिन को देखने लगी।

पाँच

दूसरे दिन प्रातः ग्रोतिन अतुल से मिला। अतुल ग्रोतिन को देखकर बोला, "वास्तव में तुम बहुत बहादुर हो। ललिका ने भी अपना काम बहुत चतुरता से किया है। अभी मेरे पास सूचना आई है कि पाकिस्तान ने गलत प्रचार करना आरम्भ कर दिया है। फिर भी ऐसे प्रचार से कर्णधारों को अपना विवेक नहीं खोना चाहिए। पाकिस्तान ने अपने प्रचार में कहा है कि जो शरणार्थी भारत पहुँच गए है, उन्हें वापस भेज दो। परन्तु हमें विश्वास है, भारत कोई ऐसा कदम नहीं उठाएगा, जिससे हमारी मित्रता को आँच आए।"

"सुना है, भारत ने कह दिया है कि वह उनको तभी लौटायेगा, जब वह उनके जीवन और अधिकार सुरक्षित समझेगा।"

"ठीक है, ग्रोतिन ! भारत हमारा मित्र है। न कभी उसने अत्याचार किया है और न सहन करता है। इतना ही नहीं, भारत सरकार ने घोषणा की है कि वह बंगला देश की जनता की लोकतंत्रीय माँग का समर्थन करती है।"

उसी समय रेडियो ढाका ने प्रसारण किया, "यह ढाका बेतार केन्द्र है। अब आप मिताली से समाचार सुनें। अभी सूचना मिली है कि राजशाही, सिलहट और चटगाँव के रेडियो स्टेशनों ने भी मुजीब के आदेशों के अनुसार कार्य करना शुरू कर दिया है। सारे पूर्व बंगाल ने वास्तविक अर्थों में मुजीब के आदेशों के अनुसार कार्य करना शुरू कर दिया है। सारे पूर्व बंगाल में वास्तविक अर्थों मे मुजीब की ही शासन सत्ता हो गई है। आजकल

मुजीब को पश्चिम पाकिस्तान में नजरबन्द किया हुआ है। उन पर अनेक दबाव तथा अत्याचार किए जा रहे हैं। समाचार समाप्त हुए। अब राष्ट्रीय गान सुनें।"

रेडियो बन्द करते हुए ग्रोतिन ने कहा, "ऐसा लगता है, सैनिक अदालत में मुजीब पर मुकदमा चलाया जाएगा और उनको मृत्यु-दण्ड दिया जायेगा।"

"मुकदमा तो चलेगा, परन्तु मृत्यु-दण्ड शायद न दिया जाए। यदि ऐसा हुआ, तो बंगला देश में आग भड़क जाएगी।" अतुल बोला।

"मिश्र देश भी तो शान्त नहीं बैठेंगे।"

"यह भी सत्य है।" अतुल बोला फिर कुछ क्षण मौन रहकर आगे बोला, "इस पर तो बाद में विचार करेंगे। पहले हमें यह देखना है कि कुष्टिया, जैनिदह और जैसोर से पाकिस्तानी सेना ढाका की ओर आ रही है। अब हमें ढाका की रक्षा करनी है। यह भी पता लगा है कि चांदपुर, खुलना, बारीसाल से भी सेना ढाका की ओर आ गई है। इसके लिए तुम नदियों और नालों पर बने हुए शेष पुलों को भी बारूद से उड़ा दो जिससे पाक सेना आगे न बढ़ सके। बिना पुल के तोपें और मोटर गाड़ियाँ नदी-नालों को पार नहीं कर सकती।"

"सर, अभी हमें पुल नहीं तोड़ने चाहिए। समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए। हमें सचेत रहना चाहिए। समय आने पर पुल को उड़ाना ठीक होगा।"

"यह भी ठीक है। ललिका अपने काम में कहाँ तक सफल हुई है?"

"वहाँ पहुँचना कठिन होगा।"

"यह तुम कह रहे हो?"

ग्रोतिन मौन रहा, उत्तर न दे सका और उसी क्षण द्वार खोल कर बाहर निकल आया। वह सीधा अपने गुप्त सामग्री कक्ष में गया। वहाँ से पाकिस्तानी थल-सेना की वर्दी पहन कर पाक कैम्प की ओर चल दिया, जहाँ मेजर जनरल हैदरअली योजना कक्ष का प्रधान था। उसी योजना कक्ष से ललिका को गुप्त योजना की रूपरेखा लेनी थी, जो हैदरअली के सहायक महमूद के पास थी।

यह बात सत्य है कि ललिका बहुत चतुर थी। यौवनमयी थी। परन्तु

महमूद भी कम चतुर नहीं था। गत जीवन में वह तीन पत्नियों को तलाक देकर चौथी पत्नी को विष दे चुका था और अब ललिका पर-उसकी आँखें थीं।

वर्दी तथा आधुनिक गन लिए हुए ओतिन द्वार पर खड़ा महमूद और ललिका की वार्ता सुन रहा था। उसी समय ललिका ने कहा, "अच्छा हुआ महमूद भैया, तुम मुझे मिल गए, नहीं तो मुक्ति वाहिनी मेरी इज्जत बरबाद कर देती।"

महमूद आँखें उठाकर बोला, "कल से तुम एक ही बात की रट लगाये जा रही हो, महमूद भैया। केवल महमूद भी तो कह सकती हो।"

कल की ललिका और आज की जाहिदा ने कहा, "लेकिन इससे क्या होता है। कहने से तुम······।"

"जब कुछ नहीं होता, तब कहती क्यों हो?"

"जैसा तुम चाहो।"

वह जाहिदा के पास आकर बोला, "तुम विश्वास करो। अब तुम यहाँ सुरक्षित हो। सभी पाकिस्तानी एक से नहीं होते।"

"हर करेला कड़वा होता है।" जाहिदा बोली, "मन्दिर से निकलने वाला हर आदमी पुजारी या भक्त नहीं होता।"

"मयखाने से निकला हर आदमी शराबी नहीं होता।"

"परन्तु बदनाम तो होता है।"

"तुम तसवीर का एक पहलू देखती हो।"

"खोटा सिक्का दोनों तरफ से ही खोटा होता है।"

ललिका कह तो गई। जब उसने महमूद को देखा तो उसकी आँखें लाल थीं।

उसी समय ललिका बोली, "बस, बुरा मान गए। मैं तो तुम्हारी परीक्षा ले रही थी।" और कहने के साथ ही समीप आकर अभिनय-मुद्रा में उसकी छाती पर सिर रख दिया।

महमूद अपने भाव का कुछ प्रदर्शन कर पाता, उससे पूर्व ही ललिका सिर उठाकर बोली, "मैं तो इन गोलियों की आवाज सुन-सुनकर तंग आ गई हूँ। अल्लाह जाने, कब खत्म होंगी यह आवाजें!"

महमूद बोला, "तुम सुनती क्यों हो, कान बन्द कर लो।"

"क्या बात करते हो! मेरे देश में गोलियाँ चलें और मैं सुनना भी न चाहूँ।" कथन के साथ ही उसने खिड़की का दूसरा द्वार भी खोल दिया और फिर समीप आकर बोली, "ऐसे कब तक चलेगा?"

महमूद उसके नयनों में अपना प्रतिबिम्ब देखकर बोला, "तुम चाहो, तो आज रुकवा दें।"

"मेरे चाहने से क्या होता है?"

"क्यों, होता क्यों नहीं, तुम आज्ञा दो।"

"मुझे विश्वास है, तुम सफल होगे।"

"परन्तु मुझे नहीं!"

"ऐसा क्यों?"

"न जाने क्यों?"

"तुम अपने मन की बात तो कहो।"

"तुम 'भैया' शब्द का सम्बोधन बन्द करो, तो कहूँ।"

जाहिदा क्षणिक मुसकराई और बोली, "चलो······।"

"कहाँ?"

"शयन-कक्ष में," आँखों के संकेत से आँखों ने पलकों के पर्दे के अन्दर से कहा।

"बहुत शीघ्र ही अपनी राह पर आ गईं।"

"समझौता जो करना है।"

"किससे?"

"परिस्थितियों से!"

"लेकिन मैं एक बात से डरता हूँ।"

"बोलो!" जाहिदा ने कहा।

"हैदरअली का आदेश है कि······?"

"बोलो, मौन क्यों हो गए?"

"तुम उसके लिए सुरक्षित हो।"

"यह हैदरअली का आदेश है और तुम मान लोगे?"

"नौकरी जो ठहरी।"

"फिर मेरे हाथ की चूड़ियाँ तुम पहन लो ।" उसने चूड़ियाँ उतार कर महमूद की ओर बढ़ा दीं और फिर उसकी ओर देख कर मौन हो गई। उसकी आँखों का अभिनय-जल कपोलों पर आ गया। उसने इससे अधिक और कुछ नहीं कहा। पलकें झुकाए शयन-कक्ष की ओर चली गई।

पलंग पर तकिये पर सिर रख कर वह अर्द्धलेटी मुद्रा में गम्भीर बन गई। कुछ क्षण रुककर महमूद भी उसी शयन-कक्ष में आ गया, जहाँ जाहिदा गम्भीर मुद्रा में लेटी थी।

महमूद प्रेमातुर वाणी में बोला, "तुम तो बहुत भावुक हो।"

जाहिदा ने आँखें उठाकर एक क्षण देखा, परन्तु अधरों से कुछ कहा नहीं। भीगी आँखों से कहा, "तुम भी तो बहुत कायर हो।"

"हैदरअली को जरा भी शक हो गया तो मुझे गोली से उड़ा देगा।"

"और जब वह मेरा नारीत्व पशुता की गोली से उड़ायेगा, तब तुम देख सकोगे ?"

"कदापि नहीं।"

"फिर कोई उपाय सोचो।"

महमूद मौन रहा।

जाहिदा उसी मुद्रा में बोली, "मैं उसे गोली मार दूँगी।"

"तुम······ ?"

"हाँ।"

"जब उसकी शक्ल देखोगी तो अचेत हो जाओगी।"

"सभी मुसलमान तुम्हारी तरह कायर और डरपोक नहीं होते। लाओ रिवालवर, तुमको गोली मार दूँ।" कथन के साथ ही क्षणिक मुसकरा कर जाहिदा ने महमूद को पलंग पर बैठने का संकेत किया।

उस समय महमूद विचार-मग्न था। वह सोच रहा था, किसी प्रकार जाहिदा को यहाँ से निकाल कर ले जाना चाहिये, नहीं तो आज की रात मद्यपान करके वह जाहिदा की माँग करेगा। महमूद पलंग पर बैठकर बोला, "मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। परन्तु······ ।"

"परन्तु क्या ?"

"तुमको मेरी बनना होगा ।"

"विश्वास नही तुमको, बताओ, अब और मैं कहाँ जा सकती हूँ ? मुक्तिवाहिनी ने मेरे माँ-बाप, भाई-बहन सबको मौत के घाट उतार दिया।"

"यह बात मेरी समझ में नही आई । मुक्तिवाहिनी ने तो सबकी रक्षा की है। उसने किसी पर गोली नही चलाई।"

"तुम तो यहाँ बैठे हो। बाहर निकल कर देखो, तो पता लगे, क्या हो रहा है।"

महमूद के विचारों ने पलटा खाया और सोचने लगा, "यह रूपमयी है, सुन्दर है और सौन्दर्य के आधार पर यौवन के पथ पर खड़े होकर नारी की कामना करना कोई पाप नही है।"

"मैं तुम से प्रेम करता हूँ।"

"देख लो, प्रेम का सम्बन्ध आत्मा से होता है।"

"मैं समझता हूँ।"

"फिर पालन भी करना होगा।"

"जब विवाह हो जायेगा, तो पालन पर विचार करना ?'

जाहिदा क्षणिक मुसकरा पड़ी और महमूद की ओर देख कर बोली, "मुझे जितना देखना था, समझना था, देख-समझ लिया। अब तुम जानो। मुझ मे इतनी शक्ति नही कि मैं तुम्हारी उपेक्षा कर दूँ और मैं तुम से कह दूँ कि मैं तुम्हारी नही। अब यह जीवन तुम्हारा है।"

महमूद के अधर जाहिदा के अधरों से परस्पर मिल ही जाते, यदि आकाश में स्टारफाइटर विमान शयनकक्ष के ऊपर से उड़ कर न जाते। ये विमान जामनगर विराम-स्थल स्थित रक्षा-प्रतिष्ठानो पर बम गिराने के लिये थोडी ऊँचाई से उड़ने का पूर्व अभ्यास कर रहे थे। फ्लाइट रहमानखाँ इस विमान को उडा रहा था जो महमूद का चचेरा भाई था। रहमानखाँ की बडी बहन से महमूद का निकाह पढा गया था। परन्तु महमूद ने उसे दो वर्ष पूर्व तलाक दे दिया था। इस कारण उनमे आपस मे शत्रुता थी, जो आज भी इन दो परिवारों मे चली आ रही थी।

शान्त मुद्रा में महमूद को खड़ा देख कर जाहिदा बोली, "ऐसा कब तक चलेगा ?"

महमूद जाहिदा को विश्वासपात्र समझने लगा था। उसी भाव से कहा, "सच तो यह है कि पश्चिमी पाकिस्तान के हाथ से पूर्वी पाक चला जायेगा। आज नहीं तो कल बंगला देश स्वतंत्र हो जायेगा और मुजीब को मुक्त करना होगा। याह्याखाँ की सरकार का पतन होगा। शायद कोई दूसरा, भुट्टो भी हो सकता है, पश्चिमी पाकिस्तान का राष्ट्रपति बने।"

"यह सब तुम कैसे जानते हो?"

"हमारी योजना केवल कागजों तक ही रह जाती है। इतनी निष्प्राण योजना आजकल चल रही है कि कहते है कुछ और करते हैं कुछ। ऐसी ही योजना चलती रही, तो पाक घुटने टेक कर बैठ जायेगा। विदेश नीति में तो पाक बुरी तरह पराजय खा चुका है।"

"फिर पाक ऐसा क्यों करता है? शान्ति से मित्र देशों के साथ मिल कर विकास क्यों नहीं करता? भारत को देखो, विकास के पथ पर बढ़ता ही जा रहा है।"

"पाक को यही तो जलन है। इसी कारण तो वह कई बार युद्ध के मैदान में कूद चुका है। और जानती हो परिणाम क्या हुआ? गत युद्ध में जो हानि पाक सरकार को उठानी पड़ी, उसकी पूर्ति मौत के अन्तिम दिन तक भी नहीं हो सकेगी।"

जाहिदा बोली, "इस योजना पर तो फिर विचार हो जायेगा, पहले आज की रात के बारे में विचार कर लो।"

महमूद राष्ट्र की सारी योजना भूल गया। वह आकाश से नीचे गिर कर पृथ्वी पर आ पड़ा। वह व्याकुल-सा होकर बोला, "कुछ-न-कुछ तो करना ही होगा।"

जाहिदा बोली, "बाहर कितने पहरेदार हैं?"

"कोई गिनती है! क्यों?"

"यहाँ से चलना सम्भव हो सकता है?"

"हाँ।"

"फिर चला जाए।"

"ऐसे नहीं।"

"फिर?"

"मार्ग साफ करके।"

"अर्थात्।"

"हैदर अली ने तुम पर आँख उठाई, तो उसकी मौत से हमारा रास्ता साफ होगा।"

"कहीं ऐसा न हो, तुम बन्दी बना लिये जाओ।"

"उसका खून तुम करना।"

जाहिदा वक्ष पर हाथ रख कर बोली, "मैं ?"

"हाँ, तुम। इस प्रकार मैं सुरक्षित रहूँगा और तुम्हारी अधिक मदद कर सकूँगा।"

जाहिदा ने कहा, "इतनी अच्छी योजना बनाते हो, फिर पाक पराजय का दर्पण क्यों देखता है ?"

"वहाँ हमारी योजना नहीं होती। हमें तो निर्देश का पालन करना होता है।"

"क्या सभी योजनाएँ पहले यहाँ आती हैं ?"

"अधिकतर निर्देश गुप्त रूप से कोड नम्बर से आते हैं, जिसका ज्ञान कम ही अधिकारियों को होता है।"

बातों ही बातों में जाहिदा ने महमूद से कोड शब्दों का ज्ञान प्राप्त कर लिया और उसे इस बात पर सहमत कर लिया कि यदि हैदर अली ने कोई अनुचित कदम उठाया, तो उसे अपने किये की सजा अवश्य मिलेगी।

महमूद ने देखा कि मेज पर 'जानीवाकर' रखी थी। उसी उठी दृष्टि को जाहिदा ने भी देखा। जाहिदा ने अनुमान लगाया कि अब महमूद मद्यपान करेगा।

जाहिदा का अनुमान ठीक निकला। महमूद मेज की ओर चलने लगा। उसी समय जाहिदा ने उसके कन्धे पर हाथ रख कर कहा, "ऐसे नहीं, नहीं तो हैदर अली से विजय प्राप्त नहीं कर सकोगे।"

लम्बी साँस लेकर महमूद बोला, "मैं स्वीकार कर चुका हूँ, तुम मानो या न मानो। प्यार करके नारी किसी को जाने योग्य नहीं रहने देती। किन्तु…!"

"किन्तु क्या ?"

"उसके प्रेम की एक कसौटी नही होती। इसलिये मैं नारी-भक्त नही बन सका।"

जाहिदा ने कहा, "तुम्हारा सुख मेरा सुख है। तुम यह न समझना कि मैं तुम्हारा हित नही चाहती। मुझे दुख है कि तुमको शरीर-कान्ति मिली है स्निग्ध मोम की, किन्तु हृदय मिला है कठोर स्फटिक शिला का।" उसी समय जाहिदा को महमूद ने अपनी बाहुओ मे आबद्ध करना चाहा। महमूद की रक्तिम आँखों मे भेड़िये फुदक रहे थे। महमूद प्यासे अधरों को जाहिदा के अधरो के समीप लाने की मुद्रा मे था। उसी क्षण जाहिदा मेज के समीप जाकर बोली, "इच्छा है ?"

"आज मैं रोमियो हूँ, मेरी जूलियट।"

"अभी नही, पहले अपना आश्वासन पूरा करो। मैं जूलियट की भूमिका मे खरी उतरूँगी।"

"मेरी माँग तुम से नही, तुम्हारे रूप से, यौवन से है।"

"मैं जानती हूँ। वह भी मेरी इच्छा के विना पूर्ण नही कर सकते।"

"जिस लड़की से मेरी शादी हुई थी, उसे मैं बिलकुल प्यार नहीं करता था। किन्तु वह सोने की चिड़िया थी। उसका बाप ए०ए० खान जूट, दियासलाई, सूती कपड़ा, जहाजरानी, प्लाई वुड का एकमात्र व्यापारी था। परन्तु उसकी लड़की को भी मैंने तलाक दे दिया।"

"इन बातो से लगता है, तुम नारी-प्रिय नही हो।"

"यह बात नही थी। उसके प्रेमियो की सख्या कम नही थी।"

"यह तो तुम जान चुके हो कि मुक्ति वाहिनी ने मेरे अंगों में क्षीणता ला दी है।"

"यह बात बीसवी सदी मे आश्चर्य की बात नही है।"

"यह बात तो सत्य है। आज के समाज को देखकर मैं तुम्हारी बात का समर्थन रखने का बल रखती हूँ ! यह नादिरशाही करतूतें पाक को खोखला करके रख देंगी।

साय के पांच बजने लगे थे। हैदर के आने का समय हो गया था। महमूद चिन्तित था; सौन्दर्यशालिनी रूपमयी जाहिदा को भी प्राप्त न कर सका और न ही योजना सम्बन्धी कागजों को देख सका।

उसी समय महमूद बोला, "तुम कुछ चाय इत्यादि का आदेश दो, तब तक मैं गुप्त कक्ष में जाकर कुछ सरकारी काम कर लूं।"

"मैं भी साथ चलूंगी। तुम्हारा मन बहलाती रहूंगी।"

"नहीं, वहां प्रवेश वर्जित है।"

"मेरे लिये भी ?"

"हां !"

"तुम्हारी जाहिदा के लिये भी ?"

"हाँ, सब के लिये।"

"महमूद की फिआन्सी के लिये भी ?"

मनुष्य भी कितना पागल होता है ! नारी के यौवन की मादकता देखकर सब कर्तव्य भूल जाता है। चाहे उनके बीच प्रेम-चरित्र या प्रेम-व्यक्तित्व को छूने वाले किसी तत्व के बारे मे कोई मौलिक समझौता भी न हो, इच्छा भी न हो, पर एक ऐसी विवशता होती है।

"प्राचीन युग की अभिसारिका हो तुम।" महमूद बोला।

"मुझे मालूम नहीं, तुमने प्रेम शास्त्र पढ़ा भी है कि नहीं।" जाहिदा ने मुसकरा कर कहा।

महमूद बोला, "चलो, आदेश-निषेध बाद में देखा जायेगा" फिर जाहिदा को ओर देखकर बोला, "मनुष्य यहाँ पर आकर हार जाता है। तुमने किसी लोकोत्तर—गुण की अपेक्षा नहीं की। तुम्हारे व्यक्तित्व में, तुम्हारे साधनों में और तुम्हारी उपलब्धियों में कुछ ऐसा अद्वितीय था कि तुम्हारी उपेक्षा करना सम्भव न हो सका।"

"चाहने न चाहने का, किसी-किसी पर अधिकार नहीं होता है।"

"यह विवशता होती है कि मनुष्य नारी को स्वेच्छा से सुन्दर, सबसे सम्पन्न और सबसे अधिक अपना मान लेता है।"

बातों ही बातों मे एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर वे गुप्त कक्ष मे चले गये।

उस दिन वह गुप्त योजना की रूप-रेखा विस्तारपूर्वक प्राप्त नहीं कर सकी। संक्षेप में जो कुछ जान पायी, वह अपने संकेत से ओतिन को बता दिया और उसी संक्षिप्त रूप-रेखा से अतुल ने ओतिन के सहयोग से दिनाजपुर, राजशाही छावनियो का एक-दूसरे से सम्बन्ध तोड़ दिया।

के साथ बलात्कार करना, कीचड़ उछालना, उसे मार्गभ्रष्ट करना, मद्य के नशे में चूर रहना तुमको खूब सूझता है। तुम कीड़े हो, सड़ांध में पड़े हो। इस सड़ांध मे, इस सड़न-भरी पीड़ा में, मानव के इस उन्माद में क्या जीवन है ? क्या भावना है ? केवल युग-युगों की भर्त्सना है, जैसे कोई किलबिला रहा है। मनुष्य ने वासना-तृप्ति की इच्छा, मेल और उन्माद मे जीवन बिता दिया। वासना की लपटें ऐसी उठती हैं कि जला कर रख देती हैं।

अतएव चेष्टा करके भी महमूद अपने उत्तप्त और विक्षिप्त हुए मानस को शान्त-स्थिर करने में असफल रहा।

जाहिदा समीप के कमरे में खड़ी बाल खोल कर कंघी कर रही थी। घने काले केश वक्ष प्रदेश पर पड़े ऐसे लग रहे थे मानो कुंज मे कोकिला पंख फैलाये हो। उस समय वह गाना भी गुनगुना रही थी—

होगा अपमान हमारी गोली का !
गाली के बदले गाली बरसा सकते हैं,
पर होगा अपमान हमारी गोली का !
भीख माँग कर हम भी "सेवर" लगा सकते है,
पर होगा अपमान पैटनों की होली का !
शीश झुकाकर हम भी जान बचा सकते है,
पर होगा अपमान शहीदों की कुर्बानी का !
पराग के लुट जाने का हमको गम नही है,
पर होगा अपमान तिलक की शुभ होली का !
चढ़ी बारात द्वार से हम लौटा सकते है,
पर होगा अपमान ········

शृंगार मेज पर 'धरती का कर्ज' नामक पुस्तक पड़ी थी। उसी पुस्तक मे एक कागज पड़ा था जो बहुत महत्वपूर्ण था। न जाने महमूद कब किस प्रकार इस कागज को भूल गया था। उसी कागज के साथ एक नक्शा भी था, जिसमें कब, कहाँ, किसके आदेश पर क्या होना था, इसका पूर्ण विवरण था।

यही कागज था, जिसके लिए जाहिदा को एक मास यहाँ रहना पड़ा। उसने वह कागज तथा नक्शा पुस्तक से निकाला और डुप्लीकेटर से उसकी कापी करके पुस्तक में रख दिया और उसकी सुरक्षित नकल वक्षप्रदेश की

घाटी में छिपा ली।

दूसरे कमरे में हैदरअली महमूद से कह रहा था, "कुछ समझ में नहीं आता, सारी योजनाएँ फटे दूध की भाँति पानी में मिल रही हैं। ऐसा लगता है कोई गुप्तचर हमारे भेद लेकर मुक्ति वाहिनी को देता है। चटगाँव के दक्षिण कोक्स बाजार के हमले की योजना, हवाई अड्डे के सभी क्षेत्रों की योजना, बिजलीघर, वायरलेस स्टेशनों की योजना—सब निष्काम हुई, कराची से सैनिक सामग्री लेकर आने वाला पाक पोत भी पकड़ लिया गया। इतना ही नहीं, बारीसाल के पास एक व्यापारी जहाज को भी पकड़ लिया गया। फ्रंटियर की बी०कम्पनी के शिविर में घुसकर मुक्ति वाहिनी मशीनगन, बारूद तथा बम उठाकर ले गई और पचास सैनिक मारे गए।"

महमूद बोला, "हमें इस पर फिर से विचार करना होगा।"

"हाँ, महमूद। गुप्तचर का पता लगाना होगा।"

"नहीं तो वह दिन दूर नहीं, जब हमको आत्म-समर्पण करना होगा और बंगला देश आजाद हो जायेगा।"

हैदरअली बोला, "मुझे तो ऐसा लगता है, कहीं तुम्हारी जाहिदा का यह काम न हो?"

"क्या बात करते हो, सर! जाहिदा स्वयं मुक्ति वाहिनी की सताई हुई है। फिर वह ऐसा कैसे कर सकती है?"

"तुम मूर्ख हो, महमूद! तुम नहीं जानते, वह मुझे भी और तुम्हें भी उल्लू बनाकर अपना काम कर रही है।"

"मुझे तो विश्वास नहीं होता।"

"मुझे तो पूर्ण विश्वास है।"

"प्रमाण?"

"इसके लिये तुम एक काम करो। आज रात उसे मेरे निजी कक्ष में भेज दो। प्रमाण तुमको मिल जायेगा। यदि तुम ऐसा नहीं कर सके तो मैं समझूँगा, तुम भी उसके साथ हो।"

"मैं उसके साथ अवश्य हूँ। परन्तु इस कार्य में मेरा कोई हाथ नहीं है। फिर भी मैं अपने को निर्दोष समझते हुए जाहिदा को आपके पास भेज सकता हूँ। लेकिन एक बात है, बिना नारी की इच्छा के उसके पास कोई नहीं—।"

"यह काम तुम मुझ पर छोड दो ।"

"फिर आप विश्वास रखें । मैं अपने पक्ष में सभी प्रकार का त्याग कर दूंगा ।"

हैदर बोला, "मुझे ऐसी ही आशा थी ।"

"यदि जाहिदा दोषी निकली तो……?" हैदर पुनः बोला ।

"गोली चलाने का अधिकार तुमको है ।" महमूद ने कहा ।

"मैं किसी भूल को केवल भूल समझ कर नहीं छोडता । मैं उसे भी कर्म का भोग मानता हूँ और सजा भी भोग से मिलती है ।" महमूद की ओर देखकर हैदर बोला, "मुझे अभी गवर्नर डा० ए०एम० मलिक के पास जाकर उनके मंत्रीमण्डल और वरिष्ठ अधिकारियों से वार्ता करनी है । अभी उनका निजी सचिव आया था । गवर्नर साहब बहुत घबराये हुए हैं । तब तक तुम जाहिदा से बात करो और पता लगाने का प्रयास करो ।" कन्धे पर हाथ रख कर पुनः बोला, "तुम्हारी रात भी फीकी और उदास नही जायेगी । उसका भी मैंने प्रबन्ध कर दिया है ।"

हैदर चला गया । महमूद गम्भीर हो गया । वह उसी मुद्रा में जाहिदा के पास गया । जाहिदा के बाल अभी भी खुले थे । वह विश्राम कुरसी पर बैठी थी । उस समय उसने साटन का गरारा तथा कुरता पहन रखा था । दुपट्टे का काम खुले बाल कर रहे थे ।

महमूद ने एक दृष्टि से उसे देखा । जाहिदा खड़ी हो गई । महमूद के निकट आ गई । उसी समय महमूद ने उसे अपनी बाँहों में भर लिया और कहा, "सच बता, तेरे मन मे क्या है ?"

जाहिदा ने अपना सिर उसकी छाती पर रख दिया । शायद उसके हृदय की तेज धड़कनों को भी कान लगा कर सुन लिया । उसी अवस्था में उस ने कहा, "तुमको क्या लगता है ?"

महमूद अपने हाथ की हथेली से उसके कोमल गोरे कपोलों को सहलाने लगा । उसी अवस्था मे वह जाहिदा के मुँह पर झुक गया । उसकी गर्म सासे पाने लगा और कहा, "अब तेरे मन में क्या है ?"

"मुझे छोड़ दो, मुझे जाने दो ।"

"यह नही होगा ।अब तुझको मुझसे कोई दूर नहीं कर सकता ।"

"हैदरअली भी नही ?"

"नही ।"

"वह तो अनेक बार इच्छा का प्रदर्शन कर चुका है ।"

"उसने आज भी अनुरोध किया है ।"

"आज्ञा या अनुरोध ?"

"दोनों का अर्थ यहाँ एक ही है ।"

"तुमने क्या कहा ?"

"कहा······।"

"बोलो ।"

"पालन होगा ।"

"फिर मैं तैयारी करूँ ?"

"तुम तैयार हो ?"

"हैदर की आज्ञा तुमको माननी होगी और मुझे तुम्हारी आज्ञा का पालन करना होगा । जीवन में एक-न-एक दिन किसी को तो अपना बनाना ही है । महमूद न सही, हैदर सही ।"

"तुम बहुत निर्लज्ज हो ।"

"अपना चेहरा पहले दर्पण में देखो । जिसका महल शीशे का हो, वह दूसरों के पत्थर नही मारता ।"

"उसने कहा है, तुम मुक्ति वाहिनी की गुप्तचर हो ।"

"तुमको क्या लगती हूँ ?"

जाहिदा का चेहरा एक नयापन लेते-लेते रह गया । यदि जाहिदा बुद्धि से काम न लेती तो महमूद को एहसास हो जाता ।

नारी जितनी मूर्ख होती है उतनी चतुर भी होती है । अपने पक्ष में हमेशा विजयी होती है । जब परास्त होती है तो दब कर रह जाती है ।

बन्धनमुक्त होकर जाहिदा ने एक बार महमूद को देखा, जिसकी आँखें कामुक लग रही थीं । उस समय जाहिदा ने सोचा, यदि आज तनिक भी सन्देह हो गया तो महमूद जिन्दा नही छोड़ेगा ।

महमूद स्वर पर भार डाल कर बोला, "कुछ समझ मे नहीं आता, क्या करूँ ?"

"अपराधी तुम्हारे सामने है, निर्णय करो। मैं अपना समर्पण करने को तैयार हूँ। जिस प्रकार भी तुम विश्वास कर सको, वह कार्य करने मे मुझे कोई आपत्ति नहीं है। पर तुम अपने बारे में सोचो। तुम्हारे बास की आज्ञा है। पालन न किया तो नौकरी से हाथ धोना पडेगा और पालन किया, तो मुझसे। अब तुम को निर्णय करना है—नौकरी चाहिए या······।"

"मुझे दोनों ही चाहिए।"

"ऐसा तो संभव न हो सकेगा।"

"क्यो नही होगा, अवश्य होगा।"

"कैसे ?"

खून करके।"

किसका ? मेरा······?"

"नही, हैदर का।"

"फिर तो तुम्हारी मौत निश्चित है। कोई दूसरा उपाय सोचो।"

"मैं तुमको हैदर के पास भेज दूँगा। यदि उसने वार्तालाप के अतिरिक्त और कोई कदम उठाया, तो तुम अपनी रक्षा करना।"

"किस तरह ?"

"उत्तर मे बहुत कुछ आश्चर्यपूर्वक सुनने के बाद जाहिदा बोली, "फिर मैं अपनी रक्षा स्वयं करूँगी।" कथन के साथ पहले जाहिदा कुछ मुसकराई; फिर कुछ संकुचित हो उठी। एक बार पलकें उठीं और गिरी। फिर तत्काल बोली, "मैं कर भी क्या सकती हूँ, मैं उस सूर्य के प्रकाश मे चल रही हूँ, जो बदली और अंधेरे मे अपनी गति की एक छाया के समान दिखाई पड़ता है। ऐसी छाया, जो कभी इधर-उधर, कभी पीछे रहती है और कभी-कभी तो दिखाई भी नही पड़ती।"

महमूद कुछ बोल नहीं सका, उसके अधर एक कम्पन-सी लेकर रह गये। जाहिदा ने दुपट्टा उठाकर वक्ष प्रदेश पर डाल लिया।

जाहिदा बोली, "कुछ कहना चाहते थे, आप ? जान पड़ता है, किसी उलझन मे हैं !"

कालान्तर में बातें आयी-गई हो गई। दोनों कोई निर्णय नही कर पाये। उसी अवस्था में गम्भीर मुद्रा मे जाहिदा के भरे नयन और कम्पित

अधर देखकर महमूद और भी समीप आकर बोला, "जान पड़ता है, ये बातें अभी समाप्त नहीं होंगी। इसलिये अच्छा है, पहले चाय पी लें।"

जाहिदा एक बार फिर मुसकराई।

महमूद बोला, "बस इसी प्रकार मुसकराती रहो, तो मेरे इस जीवन का क्षण-क्षण पल-पल कृतार्थ हो जायेगा। मुझे तुम्हारी चिन्ता नये ब्लेड-सी काटती आ रही है।"

एकाएक जाहिदा का दुपट्टा वक्षप्रदेश से हट कर उसकी गोद में आ गिरा। संयोग की बात है उस समय महमूद जाहिदा के उन्नत उरोजों पर दृष्टि डाले था। उसे ऐसा लगा मानो हिम पिघल कर नीचे धरातल पर आ गया हो और दो वर्फ के टुकड़े पिघलने से रह गये हों। उन्हीं वर्फ के टुकड़ों के बीच वह कागज रखा था, जिसका एक किनारा स्पष्टरूप से दिखाई दे रहा था।

एकाएक महमूद जाहिदा के पीछे आ गया और कन्धे पर हाथ रखकर बोला, "अब तुम विश्राम करो, बहुत थक गई हो। तब तक मैं कोई विधि सोच कर उसे अन्तिम रूप दे लेता हूँ।"

जाहिदा कुछ जान गई थी। कुछ समझ गई थी। उसने वक्षप्रदेश पर दुपट्टा रख कर कहा।

"पीछे क्यों खड़े हो गये?"

एकाएक बाहर से आवाज आयी, "भाग न पाये, निकल न जाये!" उसी आवाज के मध्य गोलियों का चलना प्रारम्भ हो गया।

"मुझे लगता है, तुम मुक्ति वाहिनी की गुप्तचर हो।"

"चलो, पता तो लग गया।"

"अब मैं तुमको जिन्दा नहीं छोड़ूँगा।" जाहिदा का हाथ पकड़ कर महमूद ने उसके गोरे कोमल कपोलों पर अँगुलियों के निशान अंकित कर दिये।

जाहिदा बोली, "कायर लोग इससे अधिक कर भी क्या सकते हैं।"

"मैं तुमको गोली मार दूंगा।"

"पाक के पास ऐसी कोई गोली नहीं है, जो जाहिदा के हृदय को छू सके।"

महमूद अपनी पिस्तौल निकाल कर बोला, "अब बोलो।"

जाहिदा बोली, "मूर्ख सैनिक, तुम अपनी जान की चिन्ता करो, मेरी नही। बाहर मुक्ति वाहिनी की गोलियाँ तुम्हारा इन्तजार कर रही हैं।"

महमूद ने क्रोध मे पिस्तौल का घोड़ा दबाया, परन्तु·········

जाहिदा मुसकराई और महमूद के समीप आकर बोली, "इसमें गोलियाँ नही हैं। तुमने इसमें गोलियाँ नही देखीं, तुम मेरा रूप ही देखते रहे। अब-तुम······।" जाहिदा अपने शब्द पूरे भी नही कर पायी थी कि उसी समय एक गोली आकर महमूद की छाती मे लगी और वह वही गिर गया।

संयोग की बात है, ओतिन ने पुकारा, "ललिका!"

परन्तु ललिका कोई उत्तर न दे सकी। वह भी उस बम के फट जाने से घायल हो गई थी, जो योजना कक्ष को नष्ट करने के लिए डाला गया था।

ओतिन ललिका के समीप आ गया। उसका सिर अपने घुटनों पर रखकर बोला, "यह क्या हो गया।"

ललिका ने अधखुली आँखों से कहा, "ओतिन!"

बम ललिका के पैरों के समीप आकर फटा था। उसके दोनो पैरो से रक्त निकल रहा था। दोनों पैरो का रक्त निकलकर द्वार की ओर बहने लगा। ऐसा लग रहा था मानो हिमालय की गोद से गंगा-जमुना निकलकर बह उठी हो। कितना दर्द था गंगा-जमुना के सगम मे!

ललिका ने आँखें खोली, परन्तु उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया। वह कुछ देख नही पायी। उसने आँखें बन्द कर ली। ललिका को उसी समय उपचार-केन्द्र मे पहुँचाया गया।

ओतिन इस दृश्य को देखकर उदास हो गया। वह गम्भीर अवस्था में अतुल के पास आकर बोला, "सर, ललिका······।"

"क्या हुआ ललिका को?"

"उसकी आँखें जाती रही।"

अतुल के मुह से एकाएक निकल कर रह गया, "ओह······! मैं उपचार केन्द्र चलूँगा।"

"अभी डाक्टर ने मना किया है। कल सायं तक उससे कोई नही मिल सकता।"

"यह अच्छा नहीं हुआ, ओतिन।"

"लेकिन हर्ष की बात यह है, वह अपनी जान पर खेल कर गुप्त योजना की नकल कर लायी है और ओतिन ने अतुल को वे कागज दे दिये।

अतुल बोला, "बहुत खूब ! अब हमारा काम आसान हो जाएगा। इसमें एक बात बहुत महत्वपूर्ण है और वह यह कि पाक सरकार को उसके मित्रों ने आश्वासन दिया है कि वह शरद्काल में भारत पर आक्रमण कर दे। हम उसका साथ गुप्त रूप में देंगे।"

"हमे यह भारत सरकार को बता देनी चाहिए।"

"नही, अभी नही। समय आने पर भारत स्वयं पाक की चाल समझ जाएगा।"

"मुझे ऐसा लगता है, इसमें अधिक हाथ मुस्लिम देशों का है।"

"यह बात सत्य है। परन्तु अनेक और राष्ट्र भी है, जिनका हाथ पाक सरकार पर है।"

ओतिन बोला, "ललिका ने बताया था, योजना के गुप्त कागजों में कुछ कोड शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिनका अर्थ ललिका बता सकती है।"

"ललिका की आँखें जाने से मुक्ति वाहिनी को बहुत दुख सहन करना होगा। ऐसा हीरा हाथ से चला गया, एक ऐसे मोती की आब उतर गई जो स्वतत्रता के ताज मे लगने योग्य था। विधि के अमिट विधान को कोई नहीं जानता।" अतुल ने कहा।

ओतिन गम्भीर मुद्रा मे अतुल के सामने खड़ा रहा। अतुल विचारमग्न मुद्रा मे अशान्त बना रहा। उस दिन का कार्यक्रम इस घटना से दो घंटे विलम्ब से हुआ।

उस रात ओतिन मिताली से भी नहीं मिल सका। उपचार-केन्द्र में ललिका की देख-रेख करता रहा। प्रातः जब ललिका की आँखों की पट्टी खुली, तो ललिका को क्षणिक भी दुख न हुआ। उसकी ज्योति-रहित आँखें अंतः करण से आज भी देख सकती थी।

ओतिन की हृदय की वेदना गालों पर उतर आयी। वह कभी उसकी आँखों को देखता, कभी उसके अंगुली-रहित पैरों को।"

जब ललिका को आभास हुआ कि पास बैठा ओतिन कुछ गम्भीर और

उदास है, तो वह अत्यन्त मधुर स्वर मे बोली, "ओतिन, समीप आओ। अपना हाथ मेरे हाथ मे दो, भैया!"

ओतिन समीप आ गया। अपने हाथ को ललिका के हाथ मे देकर मौन रहा।

ललिका उसकी आँखों पर हाथ रखकर बोली, "ओतिन, तुम रोते हो! एक बहन की आँखें चली जाने पर, पैर की अँगुलियाँ नष्ट होने पर रोया नही करते। न जाने कितनी बहनों की आँखें चली गईं। माँग उजड़ गई। लाज चली गई। मुझे देखो, मुझे कोई पीड़ा नही। कोई वेदना हृदय मे नहीं। मुझे तो हर्ष है कि मैं अपना काम कर सकी। राष्ट्र के काम आयी। मैं तो कहती हूँ, मेरा पूर्ण शरीर भी राष्ट्र के लिए नष्ट हो जाये, काम आ जाये, तो मेरा सौभाग्य होगा।"

ओतिन मौन एव गम्भीर बना रहा। उसने कुछ कहा नहीं। केवल इतना किया कि अपनी आँखो को सुखा लिया।

ललिका बोली, "भैया, मिताली कैसी है?"

"ठीक है।" संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

"उससे कहना, मुझसे मिल ले।"

"आजकल वह रात-दिन रेडियो स्टेशन पर ही रहती है।"

"फिर मुझे एक ट्रांजिस्टर ही ला दो। कम से कम उसकी आवाज तो सुन सकूँगी।"

"अभी मँगा देता हूँ। तुम विश्राम करो।"

"नही, भैया। मुझे यहाँ से ले चलो, मैं ठीक हूँ। मुझे अभी बहुत से काम करने हैं।"

"पहले तुम ठीक तो हो जाओ।"

"नही, बहुत देर हो जाएगी। मैं इतनी देर प्रतीक्षा नही कर सकती।"

"अभी डाक्टर तुमको अवकाश नही देगा।"

डाक्टर आ गया। डाक्टर ललिका को देखकर बोला, "बहुत बहादुर लड़की हो।"

ललिका बोली, "डाक्टर, मुझे मुक्ति चाहिए। मेरा दम घुटा जा रहा है। मुझे अपना काम पूर्ण करना है। मुझे जाने दो।"

डाक्टर ललिका को लिटा कर बोला, "अभी तुमको विश्राम की आवश्यकता है। फिर भी मैं तुमको जल्दी ही मुक्त कर दूंगा।"

"डाक्टर, तुम भी श्रोतिन भैया के कहने में आ गये।"

श्रोतिन बोला, "डाक्टर, क्या ललिका की आँखें फिर से ज्योति नहीं पा सकती ?"

"दूसरी आँखों का प्रबन्ध करना होगा। यह इस समय···ऐसी परिस्थिति में सम्भव नहीं है।"

श्रोतिन विचारों में खो गया। दूसरी आँखों का प्रबन्ध करना होगा। ललिका फिर से देख सकती है। उसकी आँखों में ज्योति आ सकती है। राष्ट्र को ललिका की आवश्यकता है। इसकी आँखों का प्रबन्ध करना ही होगा।

वह इन्हीं विचारों की शृंखला में बँधा, उपचार-केन्द्र से बाहर निकल गया। संसद पथ पर आ गया, जिस पथ की दीवारों पर आज भी गोलियों के निशान पाक अत्याचार की कहानी मूक भाषा में कह रहे थे।

वह उसी पथ पर चलता गया·········चलता गया। कहा नहीं जा सकता, कब वह पार्क में जाकर मुक्ति वाहिनी के नेताओं के साथ अग्रिम कार्यक्रम बनाने में लग गया।

सात

उस रात ओतिन देर तक नहीं सो सका। हृदय मे नितान्त वेदना लिये विचार-मग्न बना रहा। सारी परिस्थिति नितान्त स्पष्ट हो जाने पर भी वह यही सोच रहा था कि ललिका के साथ अन्याय तो नहीं हो रहा। ऐसा तो नहीं है कि वह इस आघात को सहन न कर पाए।

ललिका की अवस्था को वह भूल नहीं पाया। रह-रह कर उसका मन ललिका की ओर ही पहुँच जाता। वह जितना भूलता था, उतना ही अधिक स्मरण आता था। उसके आँखों की ज्योति, पैरों की अँगुलियाँ अब कभी लौट कर नहीं आ सकेंगी। वह पहले ही पीड़ा-युक्त थी। बहन अंजिका को खो चुकी थी, जो न जाने किस अवस्था मे होगी ? आज जिन्दा भी है या सदैव के लिये मौन हो गई है, कौन कह सकता है ?

ललिका के लिये कुछ करना होगा। उसकी बहन अंजिका को खोजना होगा। उसकी नेत्र-ज्योति तभी मिल सकती है, जब कोई स्वस्थ आँखें मिल सकें। आधुनिक संकटकालीन परिस्थिति में यह सब सम्भव नहीं हो सकता।

यह भाग्य की कैसी विडम्बना है कि सुख-सरिता को दुख-सागर में लाकर डाल दिया है। पीड़ाओं के पालने में निद्रा भला कब आती है ? हृदय की वेदना कब मौन होने देती है ? इस दुख-सागर की लहरों मे ललिका डूबकर रह जायेगी।

उसे मिताली का स्मरण आया और आया उस शिविर का, जिसमें अनेकों अबला नारी ललिका की-सी अवस्था मे पीड़ायुक्त क्षण व्यतीत कर रही थीं। उसके विचारों की शृंखला टूट गई। तब द्वार पर दस्तक सुन कर वह बोला,

"कौन ?"

"द्वार खोलो, मैं मिताली हूँ !"

श्रोतिन ने द्वार खोल कर कहा, "तुम इस समय यहाँ और ऐसी घबराई हुई अवस्था मे ! क्यों, क्या बात है ?'

मिताली धीरे स्वर मे बोली, "सब कुछ लुट गया।"

"क्या मतलब ?"

"ईस्ट बंगाल राइफल्स के सैनिकों ने मशीनगनों का प्रयोग करके ढाका के पूर्वी क्षेत्र की औरतों-बच्चो को मौत के घाट उतार दिया।" उसकी आँखों से खारा नीर बह उठा। वह उसी मुद्रा में बोली, "आमी आमादेर परिवारे अगलाई बेंचे आछी ! (अब मैं परिवार में अकेली रह गई हूँ।)"

"आखिर तुमने भी राष्ट्र को आहुति दे ही दी। अब वह दिन दूर नही, जब पाक सैनिकों को मुँह की खानी पड़ेगी।" कुछ क्षण मौन रह कर श्रोतिन बोला, "माँ-बाप के शव सुरक्षित हैं ?"

"सब किछई माटि माधे देवे गछें। (सब मतवे में दब गये)।"

"यह अच्छा नही हुआ।"

मिताली आँखो को पोंछती हुई बोली, "ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है। अगर ईश्वर को यह स्वीकार था तो ऐसे ही सही। बंगला देश की दुखी जनता को देखकर हृदय काँप उठता है। न जाने कौन-सा दिन होगा, जब यह अत्याचार समाप्त होगा ?"

"पाप का घड़ा भरने में समय लगता है।"

"पाप का घड़ा सब कुछ नष्ट होने के बाद भरा, तो क्या लाभ ?"

"कुछ पाने के लिये खोना पड़ता है।"

"खोया सेर और पाया तोला, तो इस अनुपात से कौन सन्तुष्ट होगा ?"

"स्वतंत्रता का तोला गुलामी के सेरों से कहीं ज्यादा लाभदायक है।"

मिताली बोली, "सुना है, ललिका की आँखों की ज्योति जाती रही।"

"हाँ !" श्रोतिन ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

मिताली ने कहा, "वह तो पहले ही बहुत दुखी थी, अब तो उसके ऊपर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।"

"तुम भी तो कम दुखी नहीं हो। माँ-बाप, भाई-बहन सब अमर हो

गये।"

मिताली नितान्त गम्भीर बन कर बोली, "पाक सैनिकों के हाथों में पड़ने से, अच्छा हुआ, सब गोली से मर गये। मैं दो दिन से घर नहीं जा सकी थी। मार्ग में खतरा था। दुख इतना ही है कि अन्तिम दर्शन भी न कर सकी। कम से कम एक बार देख लेती, तो मन को शान्ति प्राप्त हो जाती।"

ओतिन उदास भाव से दर्पण को देख कर बोला, "चलो, अब उसी जगह चलते हैं।"

"क्यों?"

"हम भी कायर नहीं है। परिवार के शव मलबे में से निकाल कर उनका दाह-संस्कार करेंगे।"

"मैं तुमको नहीं जाने दूंगी। मेरे पास शेष रहा ही क्या है? जो बचा है, उसे भी खो दूं?"

ओतिन बोला, "ऐसे अवसर पर हमको शान्त नहीं बैठना चाहिए। मरना तो एक दिन है ही। आज ही मर गये, तो क्या हो जायेगा?"

"राष्ट्र को हमारी बहुत आवश्यकता है।" मिताली ने कहा।

"जो मर गये, उनकी चिन्ता न करो, जो जिन्दा हैं, उनकी ओर देखो। उनकी रक्षा करो।" कुछ रुक कर मिताली पुनः बोली।

"वे तुम्हारे भाई-बहन थे, माँ-बाप थे।"

"मैं उनके प्रति आदर प्रगट करती हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है, उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। इससे अधिक उनके लिये कुछ नहीं किया जा सकता।"

"तुम बहुत निर्मोही हो।"

"तुम्हारे कारण। तुम्हारे उपदेश ने, राष्ट्र के प्रति भावना ने मुझे निर्मोही बना दिया।"

एक क्षण मिताली ने ओतिन को देखा, ओतिन ने मिताली को देखा और दूसरे क्षण ओतिन ने मिताली का सिर अपनी छाती से लगाकर कहा, "धन्य है वह माँ, जिसने तुमको जन्म दिया।"

उस समय मिताली की आँखो पर पलकों का आवरण पड़ा था। भावनामयी मिताली ऐसे शान्त खडी थी, मानो नीर-भरे सागर में जलपोत खड़ा हो। जैसे संगीतकार की स्वर-रहित वीणा संगीतकार की गोद में पड़ी हो।

इस बार मिताली नहीं बोली, उसके अधर बोल उठे, "यद्यपि यह कोई नहीं जानता कि जीवन कहाँ ले जायेगा और आंधियों के समान अकस्मात् किसको कहाँ फेंक देगा।"

रात आधी से अधिक व्यतीत हो गई थी। चारों ओर घोर अंधेरा था। प्रकाश की किरण खोजने पर भी न दिखाई देती थी। ढाका नगर घोर अंधेरे का प्रदेश लग रहा था। कभी-कभी कहीं से जानवरों की आवाज की जगह गोली तथा बम की ध्वनि कानों के पर्दों से टकरा कर लौट जाती। उसी आवाज के मध्य चीखते-पुकारते मानव का बोल सुनाई पड़ता था।

ओतिन मिताली को बन्धन-मुक्त करके बोला, "तुम थोड़ा विश्राम कर लो।"

"और तुम?"

"मुझे जाना है।"

"कहाँ?"

"मुक्ति वाहिनी मेरा इन्तजार कर रही है। अतुल की योजना की रूप-रेखा मेरे पास है।"

बहुत रोकने पर भी ओतिन नहीं रुका। वह उसी अंधेरी रात में चला गया। उसे उस रात दो काम करने थे। मुक्ति वाहिनी के सहयोग से मिताली के तथा आसपास के मकानों से शवों को निकाल कर उनकी अन्तिम क्रिया पूर्ण करनी थी और ढाका नगर में भूमिगत अधिकारियों की खोज करनी थी, जिसका संकेत ललिका ने दिया था। दोनों ही कार्य कठिन थे। रोशनी के अभाव में कोई कार्य भी सुगम न था। अंधेरे में किया ही क्या जा सकता था?

ढाका में कर्फ्यू और ब्लैक आउट था। टेलीफोन के तार प्रायः काट दिये गये थे।

उस रात ओतिन ने वहाँ जाकर देखा, शव क्षत-विक्षत हैं। अधिकांश पहचाने नहीं जा सके। ऐसा लगता था, पंक्ति में खड़े करके मशीनगनों से भून दिया गया हो। बच्चों तथा बूढ़ों को उठाकर फेंक दिया हो। आभूषण तथा कीमती माल उठाकर ले गये हों। यौवनमयी नारियों के शव कम मिले। ऐसा लगता था, उनको जिन्दा ही अपने साथ ले गये हैं। ओतिन ने शवों को एक ही

खाई मे खोद कर डाल दिया और आँसुओ के पुष्प से श्रद्धांजलि देकर दूसरे कार्य को पूरा करने चल दिया।

स्थान का पता लगाने में तो मुक्ति वाहिनी सफल हो गई, परन्तु स्थान तक पहुँचना कठिन था। पहरा इतना सख्त था कि चिड़िया तक पर नही मार सकती थी। श्रोतिन का दल पाँच सौ गज की दूरी पर खड़ा हो गया। वह अपनेएक साथी से बोला, "काम कठिन है।"

साथी ने उत्तर दिया, "चलो, मर ही जायेंगे, और क्या होगा ?"

"मरने से हमारा काम पूरा नही हो सकता। हमको बुद्धि से काम लेना होगा। आज रात यह काम नही होता, तो कोई बात नही। प्रातः अतुल मे विचार करके आना होगा। अब दिन निकलने में अधिक देर नही है।

साथी ने कहा, "सूचना के अनुसार यहाँ कितने आदमी है ?"

"लगभग सौ।"

"और हम दो सौ।"

"परन्तु खाली हाथ। हमारे पास केवल बीस मशीनगन है और उनमे गोली सीमित है।"

"मैं तो कहता हूँ, बढ चलो। पाक सैनिक इतने वफादार नही है, जो मब जाग रहे हों। दस-पाँच अधिक से अधिक पहरेदार होगे। उनको हम जाते ही दबोच लेगे।"

श्रोतिन सोच कर बोला, "ठीक है, दुर्गा माँ का नाम लेकर बीस मशीन-गन लेकर आगे बढ़ो। शेष पीछे संकेत की प्रतीक्षा करें।"

'बीस मशीनगन मैन चल दिये।'

श्रोतिन बोला, "ठहरो, एक मशीनगन मुझे दो। मैं आगे चलूँगा, शेष मेरे पीछे रहना।"

सौ गज चलने पर श्रोतिन बोला, "शिविर को चारों ओर से घेर लो। मेरी गोली चलने पर फायर शुरु कर देना। हिम्मत न हारना, दुर्गा माँ हमारे साथ है।"

उस रात श्रोतिन की पीठ पर थैला था, जिसमें बम तथा बारूद थे। मुक्ति वाहिनी के पास देशी बन्दूके, हथगोले तथा ईंटें थी। सौ वर्ष पुराने हथियार, जो टैंकों, मोटरों तथा मशीनगनों का सामना करने के लिए पूरी

तरह समर्थ न थे । बगला देश के नागरिक, जिन्होंने अत्याचार के आगे झुकने से इनकार कर दिया था, सीने पर गोली खाने को तैयार थे। बगला देश का बच्चा-बच्चा इस नृशसता तथा पैशाचिकता का मुंह-तोड़ जवाब देने के लिए शपथ खा चुका था । क्रान्ति की यह आग दासता के बन्धन तोड़कर ही बुझनी थी ।

ओतिन एक स्थान पर जाकर रुक गया और जमीन पर लेट गया, क्योंकि उसे एक आकृति-सी नजर आयी । उसने सतर्कता से अपनी पीठ पर से थैला उतार लिया और धीरे से अपने साथी से कहा, "तैयार रहना, मैं हथगोला फेंकता हूँ ।"

साथी ने कहा, "खतरा बढ़ सकता है ।"

"खतरा तो मोल लेना ही होगा ।" कथन के साथ ही उसने ग्रेनेड की पिन निकाल कर हथगोला आकृति के ऊपर फेंक दिया । एक ऊँची ध्वनि के साथ बम फट गया ।

ओतिन ने कहा, "आओ, बढ़ चलो ।"

ओतिन ने देखा, शस्त्रागार जल उठा था । पाक सैनिकों के शव क्षत-विक्षत पड़े थे ।

फायरों की आवाज सुनाई देने लगी । शेष बचे पाक सैनिकों की गोली चलने लगी । लाशों के ढेर लगने लगे । मुक्ति वाहिनी को भी अपने अनेक जवानों से हाथ धोना पड़ा । मुक्ति वाहिनी आगे बढ़ती गई और पाक सैनिकों से उलझ पड़ी ।

मुक्ति वाहिनी के सामने पाक सैनिक कम थे। वे भागने लगे । उसी समय ओतिन ने उनकी ओर-मशीनगन का मुँह करके टर्र-टर्र···टर्र-टर्र की ध्वनि ने उनकी जीवन-लीला समाप्त कर दी । गोलियों की बौछार से सैनिक कटे वृक्ष की भाँति गिरने लगे ।

एकाएक सर्चलाइट जल उठी। उसी प्रकाश में ओतिन ने देखा कि सर्च लाइट मेरे निकट है । ओतिन ने उस सर्च लाइट को समाप्त करना उचित समझा । उसने कुछ क्षण सोचा । उसी समय उसके साथी ने कहा, "क्या सोच रहे हो ? बोलो, उड़ा दूं ?"

ओतिन ने कुछ उत्तर न दिया । उसने थैले से एक बम निकाल कर दोनों

से ग्रेनेड पिन खोल कर उस सर्च लाइट पर फेंक दिया।

एक भयानक धमाका हुआ। सर्च लाइट क्षण भर में नष्ट हो गई। पाक सैनिकों में हलचल मच गई। मुक्ति वाहिनी के इस आक्रमण से युद्ध की आग और भड़क गई।

कुछ क्षण बाद ही गोलियों की आवाज से सारा आकाश गूँज उठा। पाक सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया। अमेरिका तथा ईरान से भेजा हुआ बारूद, गोलों तथा छोटी मशीनगनों से पाक को हाथ धोना पड़ा। यह मुक्ति वाहिनी की एक महान् विजय थी।

× × × ×

पाक के शासकों की दमन नीति में कोई कमी नहीं आयी। मुक्ति वाहिनी के आक्रमण से वह विस्तार पकड़ रही थी। पाक के अत्याचारों से बंगला देश जल रहा था। जिन्दा चिताएँ जलाई जाने लगी थीं। तोपों के मुँह से मौत बरस रही थी। बंगलादेश निवासी उसका जवाब दे रहे थे। ढाका लाशों का नगर बनता जा रहा था। परन्तु फिर भी मुक्ति वाहिनी के वीर सिपाही आगे बढ़ते जा रहे थे। मरने की चिन्ता न करके वे राष्ट्र के लिये कुर्बानी देने के लिये निरन्तर आगे बढ़ रहे थे।

लोग निहत्थे थे। कुछ के पास देशी बन्दूकें, ईंटें तथा लाठियाँ थीं। औरतें मकानों की छत पर गरम पानी लेकर बैठी थीं। मुक्ति वाहिनी की सलाह के अनुसार घर के द्वार बन्द करके छत पर से गरम उबलता पानी पाक सैनिकों पर फेंका जाता था। परन्तु पाक की सशस्त्र अपरिमित सेना के सामने टिकना अत्यन्त कठिन था।

पाक षड्यन्त्र में जो एक चक्रव्यूह था, उसका आभास तो सबको था, परन्तु सब मौन थे। पाक रेडियो प्रचार कर रहा था कि यह पाक का गृह-युद्ध है, किसी भी राष्ट्र का हस्तक्षेप सहन नहीं किया जायेगा। कोई आकर उन महिलाओं से पूछे, जिनके नग्न उरोजों पर राइफल चला दी गई थी। वस्त्र-रहित करके जिन्हें वृक्ष के तने से बाँध कर अचेत अवस्था में छोड़ दिया गया था।

यदि यह पाक का गृह-युद्ध था, अन्तरंग मामला था, तो पाक सैनिक बर्बरता का ऐसा नग्न नृत्य क्यों कर रहे थे? वे इस्लाम का नाम लेकर यौवन की हाट क्यों न लगा रहे थे?

कौन है, जो आजादी की साँस नही लेना चाहता ? कौन दासता पसन्द करता है ? गुलामी के टुकड़े खाने से भूखे रहना अधिक हितकर है। परतंत्रता पाश में जकड़े रहने से किसका दम नही घुटता ?

युद्ध की विभीषिका किसी को सहन नही होती। मुक्ति वाहिनी की विजय हो रही थी। पाक की सेना पीछे हटने लगी। फिर भी पाक सैनिकों की स्थिति काफी मजबूत थी। लोग ढाका छोड़ने पर मजबूर हो रहे थे।

क्या यह गृह-युद्ध था ? इसका उत्तर किसी के पास न था। फायरो तथा तोपों का स्वर बुरी तरह से गूँज रहा था। टैंक लोगों को रोंदते-कुचलते आगे बढ़ रहे थे। न जाने कितने आदमी टैंकों के नीचे कुचल गये। सड़क लाशो तथा रक्त से भरी थी।

परन्तु बंगला देश की जनता का भी कम साहस नहीं था। मेन बाजार मे एक टैंक चला जा रहा था। अनुज नाम का एक नवयुवक अपनी पीठ पर बम बाँधकर टैंक के सामने कूद पड़ा। क्षण भर में टैंक गतिरहित हो गया और अनुज शहीद।

उसी दिन बीस पाक सैनिकों ने पाँच यौवनमयी युवतियों को घेर लिया। उनको वस्त्र-रहित करके कैबरा करने का आदेश दिया। जब एक नवयुवती ने नृत्य करने के लिये इनकार कर दिया, तो एक सैनिक ने आटोमैटिक गन को यौवनमयी के उरोजो पर रख कर उसे गोली का निशाना बना दिया। वे शेष नवयुवतियों को अपने साथ ले जाने की तैयारी कर रहे थे। तभी मकानों की छत से उबलता हुआ पानी तथा ईंटों का बरसना आरम्भ हो गया। सैनिक औरतों को छोड़कर अपने प्राण बचाने के लिए नौ-दो-ग्यारह हो गये।

ऐसी कितनी घटनाएँ हैं, जिनका जनता को ज्ञान नहीं है। बंगला देश की जनता को उस समय उनका आभास होगा, जब जनवरी, फरवरी में भावी अवैध सन्तानों की सूची तैयार की जायेगी। पच्चीस गर्भपात केन्द्रों में अब तक बीस हजार गर्भपात हो चुके हैं। यह विवरण सरकारी सूचना के अनुसार है। जो स्त्रियां गर्भपात केन्द्र में नहीं गयी, आत्महत्या करके मर गई, उनके विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता। फिर भी अनुमानानुसार दो लाख स्त्रियाँ अवैध बच्चों को जन्म देने की अवस्था में है।

इन बच्चों का क्या भविष्य होगा ? अभागी लड़कियाँ, अनाथ बच्चे—

बंगला देश के सामने समस्या बन कर रह जायेंगे। नारियों का अन्तर्मन संशक और विकल हो उठा है। वे अपने भाग्य पर आँसू बहा कर पीड़ा को सहन करेंगी या मर जायेंगी।

ऐसी-ऐसी घटनाएँ है, जिनको देख-सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। खून खौल उठता है। इनसान कहलाने वाले इनसानियत के नाम से घृणा करने लगते है। लेकिन समय किसी का साथ नहीं देता। आज नहीं, तो कल पाक की बन्द आँखें खुलेंगी।

आश्चर्य की बात है, सत्ता के भुखमुहे ने भी पाक सरकार का समर्थन किया। वह याह्याखाँ की अँगुली पर खेल गया। शायद याह्याखाँ नहीं जानता था कि भुट्टो एक दिन पाक का राष्ट्रपति होगा और याह्याखाँ केवल पाक का एक साधारण नागरिक। विश्वविद्यालय के अविवाहित प्राध्यापकों के लिये बनाये गये स्थान पर मौत का नंगा नाच भुट्टो के संकेत पर हुआ था।

ढाका की हिन्दू बस्तियों को नौसेना ने अपने विशेष क्रोध का शिकार बनाया। ढाका के उपनगरों मे हिन्दू किसानों का बाहुल्य था। उनको सेना ने घेर कर उनके घरों में आग लगा दी। सारी सम्पत्ति राख कर दी। शायद ही हिन्दू बस्तियों में कोई ऐसा नागरिक हो, जो पाक सैनिकों का शिकार न बना हो। बहुत दिनों तक ढाका और नारायणगज क्षेत्र में सड़कों पर औरतों के शवों को गिद्ध और सियार नोच-नोचकर वीभत्स दृश्य प्रस्तुत करते रहे। 'यही दशा रही, तो बंगला देश बरबाद हो जायेगा, नष्ट हो जायेगा।' अतुल अपने कमरे में बैठा सोच रहा था, 'हमें पड़ोसी देश की सहायता लेनी चाहिये। अत्याचार तथा पापाचार की फिल्म पड़ोसी देश को दिखाकर मदद की प्रार्थना करनी चाहिये।'

मार्च को अतुल अपने पड़ोसी देश की राजधानी में आया और दो घंटे तक वार्ता करके मदद का पूर्ण आश्वासन ले गया। उसे प्रोत्साहन मिला। वह शेर की भाँति गरज उठा। उसी दिन से गुप्त रूप से बंगला देश को शस्त्र तथा सेना का सहयोग मिलने लगा।

आठ

'यह तार बेतार ढाका है। दिन के आठ बजे हैं। अब नितालो से समाचार सुनें। आज राष्ट्रपति याह्याखां ने पश्चिम पाकिस्तान से घोषणा की है, हम दस दिन के अन्दर ही भारत से युद्ध में मिलेंगे। मुक्ति वाहिनी से निपट न पाने के कारण पाकिस्तान ने इस समस्या को दूसरा रूप देने का प्रयास किया है। उसने इसे भारत-पाक संघर्ष का रूप देने की योजना बनाई है। याह्याखां ने पाक सरकार पर आरोप लगाया है कि मुक्ति वाहिनी भारत सरकार की बिना वर्दी की सेना है, जिस पर भारतीय शस्त्र हैं और उनका कमाण्ड भारत सरकार कर रही है।

'इस प्रकार पाक सरकार ने भारत को शत्रु मान कर भावी युद्ध के लिए सचेत कर दिया। इनके उत्तर में दिल्ली से प्रकाशित होने वाले हिन्दी दैनिक समाचारपत्रों में प्रथम पृष्ठ पर लिखा है कि भारत को बंगला देश की जनता से सहानुभूति है, परन्तु उसके अन्तरंग मामलों में वह हस्ताक्षेप नहीं करेगा।

'भारत सरकार ने बंगला देश से गये हुए युद्ध-पीड़ित लोगों के लिये शिविर खोल दिये हैं। भारत सरकार की रिपोर्ट के अनुसार अब तक साठ हजार बंगाली भारत के शिविरों में शरण लिये हुए हैं।

'भारत की प्रधानमंत्री बंगलादेश के कार्यवाहक राष्ट्रपति सैयद नजरुल इस्लाम और अन्य अधिकारियों से वार्ता करने का विचार कर रही हैं। भारत के विदेश मंत्री स्वर्णसिंह अगले मास संयुक्तराष्ट्र महासभा की बैठक में भाग लेने न्यूयार्क जायेंगे। वे प्रधानमंत्री की ओर से ऊथान्ह से अनुरोध करेंगे कि

"गम, धैर्य, हिम्मत।"

"इससे पेट नही भरेगा।"

"खाली भी तो नही रहेगा।"

"ऐसे कब तक काम चलेगा ?"

"जब तक अन्तिम सांस है।"

"फिर वह दिन भी दूर नही, जब अन्तिम सांस भी आकर चला जायेगा।"

"इतनी कमजोर न समझो।"

"अधिक बलवान भी नही हो।"

"माना, तुम्हारा कथन मिथ्या नही है, परन्तु……।"

"परन्तु क्या ?"

मिताली ने कहा, "मेरे पास तो अभी सुख शेष है। उनको देखो, जो सब कुछ खो चुके हैं।"

"तुम भी तो……।"

"नही, मेरे पास तुम हो। हिम्मत है, राष्ट्र के प्रति भावना है। अपना सुरक्षित यौवन है। और मुझे इससे अधिक क्या चाहिए ?"

ओतिन मधुर स्वर मे बोला, "राष्ट्र की नीव तुम जैसी नारियो के साहस पर ही टिकी है। फिर भी जिन्दा रहने के लिए खाना आवश्यक है। कागज मे लिपटा भात देकर बोला, "लो, कुछ खालो।"

क्षणिक मुसकरा कर मिताली बोली, "मेरी बहुत चिन्ता है।"

"नही।"

"फिर यह भात…… ?"

"इसमें मेरा अपना स्वार्थ छिपा है।"

मिताली ने भात ले लिया और उठकर बाहर चली गई। दस वर्ष के एक शिशु को भात देकर बोली, "लो, तन्नू कुछ खा लो।"

तन्नू एक अभागा लड़का था, जिसकी माँ तथा बहन को पाक सेना के दानवो ने गोली से उड़ा दिया था। वह किसी प्रकार भागकर रेफ्यू[illegible] चला आया। तन्नू प्रातःकाल मे भूखा-प्या[illegible], प्यास तु[illegible] पीकर बुझा ली थी, परन्तु भूख नही मिट[illegible]

और मिताली की ओर से दृष्टि हटा, एकदम भात खाना प्रारम्भ कर दिया।

यह सब ओतिन ने देखा और देखा मिताली के हृदय की पीड़ा को, जो आँखों के मार्ग से बह निकली थी।

ओतिन ने समीप आकर मिताली के कन्धे पर हाथ रख कर कहा, "सच, तुम पूज्यनीय हो।"

मिताली ने कहा, "मुझ से अधिक इस भात की जरूरत इस बच्चे को थी।"

"कौन है यह ?"

"एक अभागा।"

"इसे शिशु निकेतन में छोड देते हैं।"

"नही, इसे मैं अपने पास रखूंगी।"

"ऐसे तो हजारो बच्चे है, जो आज अपने आंसुओं से पाक-दानवता की कहानी कह रहे हैं।"

"जो आँखों से दूर हैं, उनका प्रश्न तो बाद मे उठेगा। जो आँखों के सामने हैं, उनको कैसे दूर कर दूं ?"

"तुम इसकी देखभाल करोगी या ड्यूटी पर रहोगी ?"

"इसकी देखभाल तो दुर्गा माँ करेगी।" कुछ क्षण मौन रहकर बोली, "मेरी इच्छा है, बंगला देश स्वतंत्र होने पर ऐसे शिशुओं तथा नवजात शिशुओं के पालन का भार उठाऊँ।"

"यह बहुत वडा काम है।"

"तुम साथ दोगे, तो सरल हो जाएगा।"

"मैं तैयार हूँ।"

मिताली ने एक हलकी मुसकान से ओतिन को देखा और बिना कुछ कहे अपना सिर ओतिन की छाती पर रख दिया। दोनो की साँसें मिली; परस्पर मिलकर अलग होने से पूर्व मादा साँस ने कहा, "अलग तो नहीं कर दोगे ?"

नर साँस ने कहा, "अशुभ बातें नही सोचा करते।"

इस कथन के साथ ही मिताली बोली, "आओ, अन्दर चलें। कोई समाचार आ सकता है।" तन्नू की ओर देखकर बोली, "तन्नू, कही जाना नहीं।"

तन्नू कुछ नहीं बोला। गरदन हिला कर आज्ञा-पालन का आश्वासन उसने अवश्य दे दिया।

उसी समय ओतिन ने कहा, "यह बच्चा गूंगा तो नहीं है?"

"यह तो मैंने सोचा भी नहीं था।"

उसी समय तन्नू से मिताली ने कहा, "तुम बोल नहीं सकते?"

तन्नू ने गरदन हिला कर 'ना' का संकेत कर दिया।

ओतिन ने कहा, "तुमको इसका नाम कैसे पता लगा? इसकी कहानी तुम कैसे जान पायी?"

"कल जब यह यहाँ आया, इसके साथ एक आदमी था, उसी के द्वारा मुझे इसकी पीड़ा का ज्ञान हुआ।"

ओतिन बोला, "इसके न बोलने का क्या कारण है, कुछ कहा नहीं जा सकता।"

मिताली उसके समीप बैठकर ममतामयी वाणी में बोली, "पहले बोलता था।"

तन्नू ने संकेत से कहा, "हाँ।"

"अब?"

"नहीं।"

"क्यों?"

तन्नू ने टूटी बंगला में लिखकर कुछ संकेत से बताया कि रात मेरी माँ को छत पर लटका कर फाँसी दे दी और मेरी विवाहित बहन को रात भर वस्त्र-रहित रखा। दीदी को अपमानित करने में उन्होंने कोई कसर नहीं रखी। एक-एक की वासना का शिकार बनती हुई बेचारी अचेत हो गई। उस अवस्था में एक पाक सैनिक उसके वक्ष-प्रदेश की घाटी के मध्य रखकर कामुक पुस्तक पढ़ता रहा और प्रातः होने पर दीदी के दोनों उरोजों को काट कर अपने पालतू कुत्ते को खिला दिया।

इस घटना को देखकर मैं इतना घबरा गया कि भय से मेरी आवाज न निकली और अब···।

मिताली ने ओतिन को देखा। ओतिन ने मिताली को देखकर अपनी दृष्टि उसके वक्ष-प्रदेश पर टिका दी।

मिताली से कुछ कहते न बना। तन्नू को छाती से लगाकर वह बिलख उठी। उसका दुखी मन पीड़ा का सागर बन गया।

श्रोतिन भरे स्वर में बोला, "ऐसी दर्दनाक घटना विश्व में पहली बार देखने को मिली है। इससे अधिक पशुता और क्या हो सकती है?"

मिताली गम्भीर मुद्रा में बोली, "इस बच्चे के गूंगे होने का कारण भय है। यह अवश्य बोलेगा। मेरी प्रार्थना है, इसे आप अपने घर पर रख लो।"

"ठीक है, जैसी तुम्हारी इच्छा। इसे उपचार केन्द्र में ललिका के पास छोड़ देता हूँ। दोनों का मन लगा रहेगा। यह उसकी मदद कर सकेगा, वह इसका ध्यान रखेगी।"

"अब कैसी है ललिका? मुझे तो जाने का समय नहीं मिलता।" कथन के साथ ही मिताली खड़ी होकर प्रसारण कक्ष की ओर चल दी।

तन्नू शान्त मुद्रा में भात खाता रहा।

श्रोतिन साथ चलता हुआ बोला, "उसके पैर के घाव में सैप्टिक हो गया है। पैर घुटने के नीचे से काटना होगा।"

मिताली देर की रुकी साँस लेकर बोली, "पैर कब कटेगा?"

"आज सायँ, मेरे पहुँचने पर।"

"मेरी ओर से क्षमा माँग लेना! मेरा जाना सम्भव न हो सकेगा। तन्नू को साथ ले जाना।"

श्रोतिन ने गरदन हिलाकर हाँ कर दी। वह कुछ बोल न सका।

मिताली कुरसी पर बैठकर उदास मुद्रा में बोली, "मेरी योजना कैसी लगी?"

"यह प्रश्न दूसरा है। पहले राष्ट्र से पापियों को निकालना होगा। बाद में तुम्हारी योजना पर विचार करेंगे। मेरी भी अभी कई योजनाएँ अधूरी हैं।"

मिताली बोली, "मैं जान सकती हूँ।"

"एक का सम्बन्ध तुम से है और दूसरी योजना में मैं ललिका को उसके नेत्रों को ज्योति वापिस लाकर दूँगा।"

"मैं तुम्हारा साथ दूँगी।"

"मुझे पूर्ण आशा है, और फिर मैं अकेला कर भी क्या सकूँगा?"

मिताली घड़ी देखकर बोली, "अगले समाचार का समय होने वाला है। आज्ञा चाहूँगी।"

अोतिन बोला, "मैं भी चलूँगा।"

"फिर कब आओगे?"

"जब चाहो।"

"मैं तो कहती हूँ, जाओ ही नही।"

"इतना आज्ञाकारी नही हूँ।" अोतिन मुसकान-भरी दृष्टि से बोला!

"जाओ, परीक्षा की कसौटी पर खरे उतरे।" मिताली आँखों से बोली और अधरो से कहा, "तन्नू को लेकर जा रहे हो?"

अोतिन व्यंग्य-भाव से बोला, "पहले उत्तर मे कुछ शंका रह गई है क्या?"

मिताली के गोरे गालों पर क्षणिक लाली आ गई। वह शान्त न रह सकी, न कुछ कह सकी। समय के अभाव के कारण व्यंग्य का उत्तर भी न दे सकी। पलके उठाकर जाते हुए अोतिन को देखती रही और देखती रही उस अबोध शिशु को, जो अँगुली पकड़कर छीटदार काली-लाल सडक पर जा रहा था।

× × × ×

उपचार-केन्द्र मे जाकर अोतिन ने देखा कि ललिका के पैर मे पट्टी बँधी थी। ललिका धीर और गम्भीर थी।

डाक्टर अोतिन को देखकर बोला, "ललिका, अोतिन आ गया।"

ललिका ने कहा, "भैया, आ गये।"

कथन के साथ ही ललिका ने अपना हाथ खोजने की मुद्रा मे फैला दिया। अोतिन समीप आकर ललिका का हाथ अपने हाथ में लेकर बोला, "कैसी हो, ललिका?"

ललिका ने कहा, "मैं प्रसन्न हूँ, तुम अपनी कहो।"

"मैं तो ठीक हूँ।"

ललिका बोली, "भैया, डाक्टर कहता है तुम्हारा पैर काटना पड़ेगा। क्या यह सत्य है?"

"नही, ऐसी बात नही है। घाव को धोकर फिर से पट्टी बाँधने से काम

चल जायेगा।"

"फिर आप ही डाक्टर को समझाओ।"

"मैं अभी बात करता हूँ, तुम चिन्ता न करो।"

"मैं देख नहीं सकती, परन्तु समझ तो सकती हूँ।"

ओतिन ललिका के दुख-सुख को ही सर्वोपरि मानने लगा था। बहन के प्रति जो प्यार एक भाई अर्पित कर सकता है, वही ओतिन ने ललिका को दिया। परन्तु आज ओतिन चिन्तित था।

उसी उपचार-केन्द्र के सामने एक मन्दिर भी था, जिसकी चाँदी की मूर्ति तो पाक सेना उठाकर ले गई थी, पत्थर की मूर्ति तब भी मन्दिर में थी। उस मन्दिर में भी ओतिन ललिका के लिये पूजा करने गया। लोहे के सीकचों के अन्दर देवता की प्रतिमा स्वयं उदास थी। फिर ओतिन की पूजा का महत्व क्या हो सकता था, यह तो स्वयं भगवान् भी नहीं जानता।

ललिका की अवस्था उस समय ऐसी नहीं थी कि वह सुख और संतोष-अनुभव करती। उन क्षणों में ऐसा आभास भी नहीं हुआ कि मनुष्य का जीवन श्रेष्ठ है, सफल है; अपितु वह अनुभव कर रही थी कि जीवन दुख की आग है, जिसमें लपटें उठती हैं। अन्धकार के अतिरिक्त उसे कुछ नहीं दिखाई दे रहा था।

ललिका ओतिन के हाथ पर से हाथ हटाकर बोली, "मुझे दुख है, मैं राष्ट्र की सेवा न कर सकी।"

ओतिन बोला, "कौन कहता है? राष्ट्र तो कभी तुम्हा ऋण नहीं उतार सकता। तुमने राष्ट्र को वह सम्पत्ति दी है, वह गुप्त योजना दी है, जिसके आधार पर राष्ट्र पाक सेना का मुकाबला कर सकता है।"

"उसका क्या किया?"

"किसका?"

"योजना की अन्तिम रूपरेखा तुम जानते हो?"

"हाँ, पाक भारत पर आक्रमण करेगा।"

"ठीक है......ठीक है। यही हैदर अली ने कहा था। ईरान से आने वाली सामग्री प्राप्त होते ही पाक भारत पर हमला कर देगा।"

"यह तो यहियाखाँ ने भी अपने भाषण में कह दिया है।"

फिर तो निश्चित है, "पाक भारत पर हमला कर देगा।"

"लेकिन···।"

'लेकिन क्या ?"

'देखो, ऊँट किस करवट बैठता है।"

"योजनानुसार पाक की हार होगी। महमूद ने बताया था, योजना की रूप-रेखा में अधिक जान नहीं है। इसलिए पाक को पीठ पर गोली खानी होगी।"

ललिका कुछ क्षण मौन रह कर बोली, "चीन, अमेरिका, ईरान तथा अन्य मुस्लिम राष्ट्रों के दम पर पाक भारत में युद्ध करेगा। बाद में पता लगेगा कि कितने दोस्त हैं और कितने दुश्मन।"

ओतिन शान्त-भाव से बोला, "सबको अपनी करनी का फल पृथ्वी पर ही मिल जाता है, फिर उस फल से पाक ही क्या बच सकेगा ?"

"स्वतंत्रता कोई निजी मामला नहीं है, बल्कि एक सामाजिक समझौता है। काल का चक्र घूम रहा है। उस चक्र में भी गति है। सृष्टि है तो संघर्ष भी है। उसमे ज्योति के जो स्फुल्लिग फूटते हैं, वे सब के लिए एक-से सिद्ध नही होते।"

ओतिन बोला, "किसी के लिये वे प्रकाश के कण हैं।"

ललिका बोली, "मेरे जैसी के लिये फूस के जंगल मे एक चिनगारी के समान।"

"ऐसी बात नहीं, ललिका। सबके लिये जो सम्भव है, काल के चार चरण उसे असम्भव बना डालते हैं। फल जितना ज्यादा गलता है, बीज उतना ही मस्त होता है।" ललिका की ओर देखकर ओतिन पुनः बोला "परिवर्तन की शक्ति शरीर मे नहीं, बुद्धि मे होती है।"

ललिका समझ गई थी। वह दुखी रह कर ओतिन की पीड़ा को नहीं बढ़ाना चाहती थी। उसे कुछ ऐसा आभास हुआ, मानो ओतिन के साथ कोई और भी है।

ललिका बोली, "साथ मे और कौन है ?"

ओतिन ललिका को तन्नू की कहानी बताकर बोला, "यह अब तुम्हारे पास ही रहेगा। तुम्हारी देख-रेख में यह अपना दुख भूल जायेगा। माँ को

भूल जाये, दीदी याद न आये, इसे ऐसा प्यार करना।"

उसी समय ललिका ने हाथ से खोज कर कहा, "तन्नू मेरे पास रहेगा, मेरी आँखें बनेगा।"

ग्रोतिन सरल भाव से बोला, "यह मैं बताना भूल गया था कि यह बोल नहीं सकता।"

ललिका तन्नू के हाथों को अधरों से लगाकर बोली, "मैं देख नहीं सकती, यह बोल नहीं सकता।"

ग्रोतिन ने आत्मीयता दिखाते हुए कहा, "आजकल जो घटनाएँ घट रही हैं, उन्हें न देखना ही अच्छा है। तुम मुझसे, आँखों वालों से अधिक सुखी हो। तुम को एक पीड़ा है—देख नहीं सकती। आँखों वालों के अनेक पीडाएँ हृदय मे दबी पड़ी है।"

ललिका साड़ी के छोर से नीर-भरी आँखें पोंछते हुए बोली, "भैया, अंजिका का किसी शिविर मे पता लगा ?"

"नहीं।"

"अब नहीं मिलेगी ?"

"अवश्य मिलेगी।"

"कहाँ मिलेगी ? मर गई होगी।"

"अंजिका तुम्हारी बहन है! तुम्हारी तरह चतुर तथा वीर है। वह मर नहीं सकती। मार कर आयेगी! मेरा मन कहता है, वह जहाँ भी है, सुरक्षित है।"

"हो सकता है भारत चली गई हो।"

"यह भी सम्भव हो सकता है।"

उसी समय मुक्ति वाहिनी का एक जवान उपचार-केन्द्र मे आकर ग्रोतिन के कान मे कुछ कह कर बोला, "जल्दी करो।"

ग्रोतिन जवान के साथ बिना कुछ कहे-सुने उपचार-केन्द्र से बाहर निकल गया। कहाँ गया, यह सब गुप्त था।

प्राप्त कर सकते हैं। उनकी सारी इच्छाएँ पूरी हो सकती हैं। परन्तु ऐसे मनुष्य मूलतः नष्ट ही होते है। सदा सिर पर रखे हुए और स्नेह से पाले हुए बाल भी एक दिन रंग बदल जाते हैं।"

"मैं तुम्हारे कहने का अर्थ नहीं समझी।"

"तुम्हें जिंदा रहना होगा! अपने राष्ट्र का ध्वज फहराता देखना कौन पसन्द नहीं करेगा? दोषों को करने की अपेक्षा परदोष-दर्शन और दोषों का चिन्तन अधिक पतन करने वाला होता है।"

"मैं इस पाप का भार कैसे उठाऊँगी?"

"जहाँ गोलियाँ भी निष्फल होती हैं, वहाँ नारियाँ सफल होती हैं। मृत्यु से घृणा करना साहस का काम है।"

"लेकिन जहाँ जीवन मृत्यु से भी अधिक भयानक हो, वहाँ जीने की हिम्मत करना सबसे बड़ा साहस का काम है।"

"तुम अकेली तो नहीं हो?"

"मेरे साथ है ही कौन?"

"मैं, मेरी भावना, तुम्हारे उच्च विचार साथ हैं।"

"तुम कब तक साथ दोगे?"

"आश्वासन चाहती हो?"

"निराशा के भाव पर विजय पाने के लिये तथा भविष्य में एक नई आशा पाने के लिये विश्वास का होना आवश्यक है।" तरुणी ने सरल भाव से कहा।

"मैं तो समझता हूँ, सुन्दर जीवन से बढ़कर कोई कलाकृति नहीं है।"

"जीवन सुन्दर हो तब न...।"

"तुम जीवन से बहुत निराश हो गई हो।"

"अन्तिम सीमा तक।"

"मैं तुम्हारा साथ दूँगा।"

"तुम सचाई को नहीं बदल सकते।"

"परन्तु उसके प्रति दृष्टिकोण तो बदला जा सकता है।"

"नारी के सम्बन्ध में सबसे विचित्र जो है, वह पुरुष है।"

मृदुल बोला, "इस प्रश्न का उत्तर मैं नहीं दे सकता। फिर भी तुम्हारी

ओतिन मन के भाव अधरों से दूर रखकर बोला, "नहीं। मुझे नाम अच्छा लगा था, इस कारण एकाएक मुँह से निकल गया।"

ओतिन ने अंजिका को देखा। मृगी-सी आँखें, अर्धवृत्त लाल अधर, नवीन ऊषा के समान कोमल शरीर—यौवन की मादकता से लदी थी अंजिका। ऐसा लगता था मानो पृथ्वी पर आकाश से कोई अप्सरा उतर आयी हो। वह सौन्दर्य-प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करके मिस ढाका का ताज पहन चुकी थी।

अतुल बोला, "बैठो ओतिन, कुछ जलपान करोगे?"

"कैसे इनकार कर सकता हूँ?"

"बोलो, अंडा और बन्द?"

"चलेगा। अंजिका से भी मालूम कर लो।"

अंजिका ने कहा, "मैं अण्डा नहीं खाती।"

ओतिन बोला, "क्यों, अण्डे में क्या दोष है?"

"प्रश्न वाद-विवाद का नहीं, जलपान का है।"

अतुल बोला, "देखा, ओतिन? कितना सुन्दर जवाब है! इसे कहते हैं जवाब।"

ओतिन ने अंजिका को देखा, अंजिका ने ओतिन को। अंजिका ने ओतिन को पूर्ण रूप से देखा हो या न देखा हो, परन्तु ओतिन ने अंजिका को पूर्ण रूप से देखा। वह कुछ बोला नहीं, परन्तु पूर्ण रूप से समझ गया था कि अंजिका एक नए मोड़ से गुज़र चुकी है।

इसके बाद आपस में परिचय दिया गया और तीनों बैठ गए। ओतिन रह-रह कर अंजिका को देखता रहा, जिसके शरीर में सलोना सौष्ठव और यौवन-सौन्दर्य भी भरा थी। उसकी आँखों में कुछ ऐसा विचित्र आकर्षण था कि देखने वाला उसमें डूब-सा जाता था।

अंजिका के केश बिखरे हुए थे। परिधान में सलवटें पड़ गई थीं। उसे परिचय से पता चला कि ओतिन अतुल का सहयोगी है। मुक्ति वाहिनी संगठन में ओतिन का विशेष सहयोग रहा है।

अंजिका के बालों की एक लट उसके मस्तक से नीचे झुक आयी थी। कुंचित लट को कनपटी के ऊपर लाकर अंजिका बोली, "आज सायं रेडियो

स्टेशन तथा उपचार-केन्द्र पर बम गिराए जायेंगे और ये विमान सायं सात बजे रंगपुर से उड़ान भरेंगे।"

अतुल बोला, "तुमको यह कैसे मालूम ?"

"मुझे क्या मालूम है और क्या नहीं, यह तुम नही जानते।"

"अंजिका !" अतुल ने समीप आकर कहा, "बोलो, और क्या मालूम है ?"

"समय आने पर सब बता दूंगी।"

"अब क्यो नही ?"

"तो फिर सुनो। अब तक मैं मौन रहकर तुम्हारी सुनती रही, अपनी बात मुख से नही निकाली थी।"

कॉटन की सिन्दूरी साड़ी अंजिका के शरीर पर खूब खिल रही थी। वह कुछ भाव-विभोर होकर अतुल को निहार रही थी। हृदयहारी मुसकान फेंककर अंजिका ने कहा, "तुमको मारने का भार मुझ पर सौंपा गया था। तुम नदी के इस पार खड़े थे, हम नदी के उस पार। पाक कैप्टिन ने तुमको देख लिया था। वह तुमको अच्छी तरह पहचानता था। ...(कुछ रुक कर) इससे पूर्व भी मुझे एक विष का पैकिट कुएँ मे डालने के लिए दिया गया था। परन्तु मैंने कुएं मे न डालकर पाक सेना के खाने में डाल दिया। इस प्रकार खाना खाने के दस मिनट बाद दो सौ पाक जवान हमेशा की नीद सो गए। कई बार सुन्दरता वरदान बन जाती है। मुझे कैप्टिन ने मारा नही। रसोइये को गोली मारकर कहा, "इसने नमक के स्थान पर विष डाल दिया। अनवरअली रसोइया मारा गया। मुझे कैप्टिन ने अपने निजी उपयोग के लिए सुरक्षित रखा।" इतना कहकर वह खड़ी होकर आगे बोली, "आओ, अन्दर आओ, मैं तुमको अपनी पीठ दिखाती हूँ, कैप्टिन ने अपनी इच्छा-पूर्ति के लिए मेरे साथ क्या नही किया।"

अतुल गम्भीर मुद्रा में बोला, "मुझे इस बात का आश्चर्य है कि अंजिका जैसी नारी की गोद में खेल कर भी कैप्टिन का व्यक्तित्व बदला क्यों नही।"

मोतिन बोला, "उनका व्यक्तित्व ही नही होता, इसलिए बदलने का प्रश्न ही नही पैदा होता।"

अंजिका ने आँखें उठा कर कहा, "ललिका जिन्दा है !"

"तुम उसको जानती हो ?"

"हाँ। वह मेरी बहन है। मैं और वह साथ ही पढ़ते थे।"

अोतिन बोला, "हाँ, वह जिन्दा है।"

"वह उपचार-केन्द्र में क्यों है ? उसको क्या हो गया ? क्या वह ती…?"

"नही, ऐसी बात नही है। तुमको मानसिक दुख है, उसे शारीरिक घाव ; जो शीघ्र ही भर जायेंगे।"

"मैं उसको देखने चल सकती हूँ ?"

"अभी नही।"

"क्यों ?"

"तुम्हारा वहाँ जाना खतरे से खाली नही है। कैप्टिन के विश्वासपात्र वक तुम्हारी खोज में हैं।"

"तुमको कैसे मालूम ?"

"हम सारे दिन करते ही क्या हैं ? हम जानते है, पाक सेना कब कहाँ ोला डालेगी; कहाँ विमान से उड़ान भरेगी। किस राष्ट्र से मदद माँग रही । कौन उनकी सहायता कर रहे हैं। कौन उनके विरुद्ध बोल रहे है। पाक वनी मे कितनी खाद्य सामग्री तथा युद्ध सामग्री है।"

"तुम मेरे बारे मे भी जानते थे ?"

"हाँ। तुम्हारी विष की शीशी हमारे पास है।"

अंजिका वक्ष पर हाथ रख कर मौन हो गई। वह कुछ कह न सकी। छ क्षण मौन रह कर बोली, "तुम सब कुछ जानते हो, इसमें कोई सन्देह ही। परन्तु मैं भी कम नहीं जानती।"

"क्या तुम्हारी जानकारी राष्ट्र के काम आ सकती है ?"

"मैंने इन आठ मास में किया ही क्या है ? बदला लेने की भावना मेरे दय मे तड़प रही है। एक लपट उठती है, ज्वाला का रूप ले बैठती है। ब तक मैं कैप्टिन की पीठ पर कोड़े मार-मार कर उसे लाल न कर दूँगी, न्त नही बैठूँगी।

अतुल बोला, "हमारी संस्कृति ऐसा नही कहती। अहिंसा को परम धर्म

अतुल अजिका के वक्ष पर पड़े श्याम केशों को देखकर धीर भाव से बोला, "तो तुम मुझे मारने आयी थी ?"

अंजिका का मुँह लटक गया। अतुल की अन्तिम बात से वह विकम्पित हो उठी। क्षण भर अतुल की ओर देखकर बोली, "मैंने सोचा, प्राण बचाने का अच्छा अवसर है। मैं विष की शीशी सुरक्षित स्थान पर रखकर नदी में कूद गई। सच पूछो तो मैं कूदना नहीं चाहती थी क्योंकि वहां रहकर भी मैं राष्ट्र के लिए अधिक हितकर सिद्ध हुई हूँ। परन्तु उनके अत्याचारों से हृदय मे इतने घाव हो गए थे कि और स्थान ही नही रहा था।"

"वे मुझको मारना क्यों चाहते हैं ?"

"इसके दो कारण है। एक तो तुम मुक्ति वाहिनी का संचालन कर रहे हो, दूसरे तुम······।"

"बोलो।"

अंजिका ने ओतिन को देखकर कहा, "सत्य कड़वा होता है, तुम कडवा क्यो सुनने लगे ?"

अतुल बोला, "तुम कडवा सुनने की बात करती हो, मैं उसे पान करने को तैयार हूँ, मगर······।"

"मगर क्या ?"

"मगर राष्ट्र का चढता हुआ फहराता ध्वज देखने के बाद।"

अजिका ने आँखें पलको के पर्दे मे ले जाकर कहा, "इन बातों को छोडकर पहले रंगपुर से उडान भरने वाले विमानों को गिराने का प्रबन्ध करो।"

"उनकी तुम चिन्ता न करो।"

ओतिन बोला, "रंगपुर के हवाई अड्डे का रनवे नष्ट कर दिया गया है। वहाँ से ओई विमान उड़ान नही भर सकता।"

अतुल ने कहा, "हमने कच्ची गोलियाँ नही खेली। तुम्हारा कैप्टिन भी हमारे अधिकार में है। वह उसी समय बन्दी बना लिया गया था। मैंने ओतिन को सूचना भेज कर यह काम समय पर ही करा दिया था।"

ओतिन बोला, "यदि मुझे उपचार-केन्द्र मे देर न लगती तो मैं शेष पाक सैनिकों को भी पकड़ने में सफल हो जाता।"

ओतिन की ओर देख कर अतुल ने पूछा, "अब ललिका कैसी है ?"

अजिका ने आँखें उठा कर कहा, "ललिका जिन्दा है !"

"तुम उसको जानती हो ?"

"हाँ। वह मेरी बहन है। मैं और वह साथ ही पढ़ते थे।"

श्रोतिन बोला, "हाँ, वह जिन्दा है।"

"वह उपचार-केन्द्र में क्यों है ? उसको क्या हो गया ? क्या वह भी…?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। तुमको मानसिक दुख है, उसे शारीरिक घाव है, जो शीघ्र ही भर जायेंगे।"

"मैं उसको देखने चल सकती हूँ ?"

"अभी नहीं।"

"क्यों ?"

"तुम्हारा वहाँ जाना खतरे से खाली नहीं है। कैप्टिन के विश्वासपात्र सेवक तुम्हारी खोज में है।"

"तुमको कैसे मालूम ?"

"हम सारे दिन करते ही क्या है ? हम जानते है, पाक सेना कब कहाँ गोला डालेगी; कहाँ विमान से उड़ान भरेगी। किस राष्ट्र से मदद माँग रही है। कौन उनकी सहायता कर रहे हैं। कौन उनके विरुद्ध बोल रहे है। पाक छावनी में कितनी खाद्य सामग्री तथा युद्ध सामग्री है।"

"तुम मेरे बारे में भी जानते थे ?"

"हाँ। तुम्हारी विष की शीशी हमारे पास है।"

अजिका वक्ष पर हाथ रख कर मौन हो गई। वह कुछ कह न सकी। कुछ क्षण मौन रह कर बोली, "तुम सब कुछ जानते हो, इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु मैं भी कम नहीं जानती।"

"क्या तुम्हारी जानकारी राष्ट्र के काम आ सकती है ?"

"मैंने इन आठ मास में किया ही क्या है ? बदला लेने की भावना मेरे हृदय में तड़प रही है। एक लपट उठती है, ज्वाला का रूप ले बैठती है। जब तक मैं कैप्टिन की पीठ पर कोड़े मार-मार कर उसे लाल न कर दूँगी, शान्त नहीं बैठूँगी।

अतुल बोला, "हमारी संस्कृति ऐसा नहीं कहती। अहिंसा को परम धर्म

मानने वाले हाथ कोड़ा कैसे उठा सकते हैं ? तुम अपने विचार बदल दो। बदले की भावना मन से निकाल दो। हम कैप्टिन को बन्दी बना कर सरकार के हवाले कर देंगे। अपराध की सजा वह स्वयं भोगेगा। स्वर्ग तथा नरक इस पृथ्वी पर ही हैं।"

"तुम मेरे स्थान पर होते तो···?"

"तो भी उसे क्षमा-दान कर देता। मैं अपनी आत्मा की आवाज को नहीं दबा सकता।"

"सच पूछो तो तुम मेरे लिये देवता बन कर आकाश से उतरे हो।"

अतुल बोला, "मेरे व्यक्तित्व की परिभाषा कुछ और ही है।"

वायु के तीव्र वेग से खिड़की एकाएक खुल गई। अंजिका का ध्यान बाहर की ओर खिच गया। उसने कुछ पूछना चाहा किन्तु फिर कुछ सोच कर मौन ही रह गई।

दस

समय व्यतीत होता गया। अतुल और अंजिका एक-दूसरे के निकट आते रहे—वैसे ही, जैसे दो पहाड़ी वृक्ष अपनी शाखाओं के आयामों द्वारा एक-दूसरे के निकट आ जाते हैं। कभी-कभी समय मिलने पर ओतिन भी वहाँ चला जाता। अंजिका पहले ही ओतिन के व्यक्तित्व से प्रभावित थी; किन्तु जब उसका नवीन आकर्षण ज्ञात हुआ, तो वह आह्लाद से चंचल हो उठी। उसी भाव से बोली, "यह भेद आपने आज तक क्यों छिपाये रखा? यह कल मुझे ललिका ने बताया था कि तुम उसे बहन से अधिक आदर-सम्मान देते हो।"

"मैं ऐसा न करता, तो अंजिका, वह कभी की मर गई होती। पैर से लाचार, आँखों से अन्धी ललिका को सहारे की आवश्यकता है।"

"आज उसके पैर की बैसाखी बन कर आ जायेगी, वह चल सकेगी। उपचार-केन्द्र से उसे छुट्टी मिल जायेगी। कल से वह हमारे पास ही रहेगी। उसकी देख-रेख मैं करूँगी।"

"तुम ऐसा करोगी, तो उसके दिन भी कट जायेंगे"

"यह तो मेरा बहन के प्रति कर्तव्य है।"

ओतिन बोला, "आज अतुल बाबू कहाँ गये?"

"कुछ कह कर नहीं गये।"

"फिर भी?"

"प्रातः कह रहे थे, सायं को देर से लौटूँगा।"

सायं का समय था। सूर्य पश्चिम की ओर चला जा रहा था। गुलाबी

सर्दी पड रही थी।

अजिका बोली, "आज तीन दिसम्बर है।"

ओतिन बोला, "फिर क्या हुआ, कोई खास घटना घटने वाली है क्या ?"

"मुझे कुछ ऐसा आभास हो रहा है कि पाक···।"

तभी अतुल आ गया और अंजिका के समीप आकर बोला, "अंजिका, तुम्हारी बात सत्य निकली। पाक ने भारत पर हमला कर दिया है।"

"और भारत ने···?"

"अभी भारत की प्रधानमंत्री कलकत्ता मे है। तुरन्त राजधानी पहुँच रही हैं। रात के बारह बजे प्रधानमंत्री राष्ट्र के नाम एक सन्देश प्रसारित करेंगी।"

ओतिन बोला, "भारत के पास युद्ध के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं नही है।"

"क्या भारत बंगला देश की सहायता करेगा ?"

"आज की रात गुजर जाने पर पता लगेगा।"

उस सारी रात पाकिस्तानी विमान भारत के प्रमुख हवाई अड्डों पर बार-बार बम-वर्षा करते रहे। पठानकोट श्रीनगर, आगरा, अम्बाला, जोधपुर, आदमपुर, अमृतसर आदि अड्डो को नष्ट करने का प्रयास किया गया।

भारतीय हवाई अड्डों पर बम-वर्षा करके भारत की वायु सेना की शक्ति कम करने का याह्याखां का उद्देश्य था। उसी रात पाक ने दो डिवीजन पैदल सेना तथा टैंक युद्ध मे लगा दिये।

ओतिन आंखे मलता हुआ बोला, "पाक सन् १९६५ मे भी मुँह की खा कर रह गया था, ऐसा ही अबकी भी होगा।"

अतुल बोला, "यदि आज जम्मू-श्रीनगर मार्ग को पाक सेना काट देती है तो काश्मीर को रसद पहुँचाना बहुत कठिन हो जायेगा।"

"भारतीय रेडियो एक-एक घंटे बाद प्रसारण कर रहा है। अभी पता लगा है कि अमृतसर-लाहौर सडक पर भी टैंकों का जमाव है। हुसैनीवाला के पास भी पाक टैंक देखे गये है।"

अंजिका बोली, "आप लोग चिन्ता न करें, बंगला देश मे केवल बीस विमान शेष रह गये हैं। पाक वायु सेना कुछ भी नही कर सकती।"

उसी समय भारतीय रेडियो ने प्रसारण शुरू किया। अंजिका बोली, "ज़रा खबरें सुनो।"

ट्रांजिस्टर में से ध्वनि आयी, "प्रातः के सात बजे हैं। अब आप अशोक वाजपेयी से समाचार सुनें। भारत-पाक-युद्ध जोरों पर है। भारत ने आज संकटकालीन स्थिति की घोषणा करके पाक के हमले को रोकने के लिए फौजी कार्यवाही आरम्भ कर दी है।

"रात के बारह बजे भारतीय विमानों ने पाक के अड्डों पर बम गिराये। सरगोधा, कादिरी, रावलपिंडी के हवाई अड्डों पर भी बम गिराये गये। पाक के तीन विमानों को क्षति पहुँची। भारतीय सेना की तोपों ने उन तोपों को ठंडा कर दिया, जो गत सप्ताह से तैयार खड़ी थी।

"बंगला देश को मुक्ति दिलाने के लिए भारतीय जल-थल-वायु सेना ने पाँच तरफ से आक्रमण कर दिया है। समाचार समाप्त हुए।"

उसी समय ओतिन खड़ा हो गया। अतुल बोला, "उठो, भारतीय फौजों का साथ दो। अंजिका, तुम भी चलो। पाक की रेत की दीवारें आज टूट जाएँगी। बंगला देश मुक्त होकर रहेगा।"

अंजिका बोली, "जब तुम जैसे गुप्तचर बंगला देश में होंगे, तो फिर क्यों न बंगला देश मुक्त होगा।"

अतुल ने अंजिका की ओर देखा। ओतिन कुछ समझा, कुछ नहीं।

अतुल बोला, "तुम जानती थीं?"

"मैंने पहले भी संकेत दिया था। कैप्टिन के द्वारा मुझे पता लगा था कि तुम भारतीय नागरिक हो और मुक्ति वाहिनी सेना की मदद करने के लिए कलकत्ता से यहाँ आए हो।"

ओतिन बोला, "सर?"

"मुझे आज्ञा थी, ओतिन, कि मैं किसी को अपना यह भेद न दूँ। केवल एक आदमी जानता था।"

"कौन?"

"मुजीब।"

"फिर कैप्टिन को कैसे पता लगा?"

"यह मैं नहीं जानता।"

"इसीलिए उसने अंजिका को भेजा था।"

"हो सकता है।"

अंजिका बोली, "वह भी मूल पाकिस्तान-निवासी नहीं है।"

"तो फिर ?"

"पाक को मित्र-राष्ट्र द्वारा भेंट किया गया एक गुप्तचर।"

"तो फिर वह कैप्टिन नहीं है ?"

"नहीं।"

"तुमको कैसे पता चला ?"

"मुझे उसने स्वयं बताया था।"

अतुल बोला, "राजनीति भी अजीब चीज है। महल को खँडहर, खँडहर को महल बना देती है।"

"अतुल चक्रवर्ती को उसने केवल अतुल बना दिया।" अंजिका मुस्कान-भरी मुद्रा में बोली।

"तुम तो सब कुछ जानती हो।"

अंजिका बोली, "चलो, कहाँ चलना है ? शेष बातें बाद में बताऊँगी। घबराओ नहीं, मुझ तक सीमित भेद, भेद ही रहेगा।"

"अंजिका !"

"हाँ।" आँखों से अंजिका बोली।

"मैं भारत जाकर तुमको भी गुप्तचर के पद पर लगवाने का प्रयास करूँगा।"

"मैं अपना देश नहीं छोड़ सकती।"

"फिर मुझे अपना न कहो।"

"तुम नदी में से मुझे अपनी गोद में निकाल कर लाए हो। जब मैंने तुम्हारी गोद में स्थान पा लिया, तो फिर पराया कैसे समझूँ ?"

"हो सकता है, मैं विवाहित होऊँ।"

अंजिका व्यंग्यमय मुद्रा में बोली, "पति के अतिरिक्त और भी तो बहुत से रिश्ते होते हैं। पति ही तो सब कुछ नहीं होता।"

"मैं तुमको अभी तक नहीं समझ पाया कि तुम्हारे मन में क्या है ?"

"राष्ट्र-भावना।"

"और…… ?"

"आत्मीयता।"

"किसके प्रति ?"

"शुभचिन्तक के प्रति।"

"हर बात तुम पहेली में करती हो।"

"मैं बात तो करती हूँ, सुमानी तो बात भी नहीं करती।"

अतुल शान्त हो गया। गम्भीर मुद्रा में व्याकुल बन गया। सुमानी कलकत्ता में होली-इन-अस्पताल में नर्स है। आज से पाँच वर्ष पूर्व अतुल को एक अपराधी का पीछा करते समय पैर में गोली लग गई थी। इस घटना के कारण अतुल को सुमानी की देख-रेख में 'होली-इन-अस्पताल' में एक मास तक रहना पड़ा था। एक मास बाद अतुल तो घर चला गया, परन्तु सुमानी को मानसिक रोग के कारण अस्पताल में ही रहना पड़ा।

आज भी सुमानी अस्पताल में रेत में अँगुली से 'अतुल' लिखती रहती है। वह अतुल के प्रति इतनी आकर्षित हो गई थी कि उसने अतुल से विवाह के लिए अनुरोध किया, किन्तु अतुल ने सुमानी को कोई महत्व नहीं दिया। विमाता के कहने पर अतुल ने सुमानी का अनुरोध ठुकरा दिया।

प्रोतिन बोला, "सर, सुमानी…… ?"

अतुल की विचार-शृंखला टूट गई। वह सब कुछ भूल गया। उसके हृदय-पटल पर सुमानी का चित्र फिर से बन गया। उस समय वह अधिक कुछ न कह सका। केवल इतना कहा, "तुम बहुत कुछ जानती हो। कैप्टिन गुप्तचर के पद पर योग्य मानव है। मैं उससे अवश्य मिलूँगा।"

"तुमको मिलना भी चाहिए। वह सुमानी का छोटा भाई है।"

"निकल…… ?"

"हाँ, कैप्टिन निकल। गुप्तचर निकल। सुमानी का छोटा भाई निकल।"

"वह तो ईरान चला गया था।"

"हाँ, वह ईरान से ही आया है।"

अतुल बोला, "इसका अर्थ यह हुआ कि निकल मेरा……।"

अजिका बोली, "तुम जानते हो, निकल जानता है। मैं समझ गई हूँ।

फिर कहने से क्या लाभ ?"

"अंजिका, तुम सब कुछ जानती हो। फिर भी मेरे साथ रहने को तैयार हो ?"

अंजिका बोली, "अतुल, इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। सुमानी का भी दोष नहीं है। निकल को भी दोषी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उस समय निकल अबोध था।"

अतुल बोला, "ओतिन, तुम रेडियो स्टेशन चलो। मिताली के काम में सहयोग दो। मैं आता हूँ।"

ओतिन चला गया। अतुल द्वार की ओर देखकर बोला, "तुमने सब घाव साजे कर दिये।"

"ऐसा क्यों सोचते हो ?"

"मेरे जीवन में तूफान और कांटो के अतिरिक्त कुछ नहीं है।"

"सब कुछ है, हिम्मत क्यों हारते हो ?"

"विमाता के कारण घर छोड़ा, फिर भी सुख नहीं मिला। सुमानी पागल हो गई।"

"सुमानी तुमको पाकर फिर मानसिक रोग से मुक्त हो सकती है, मुझे ऐसी आशा है।"

"हाँ, अंजिका ! कौन ऐसी माँ होगी, जो बेटे को पाकर मानसिक रोग से मुक्त न हो जाएगी ?"

"तुम उसको एक बार माँ कह दो। उसका हृदय उमड़ आयेगा, उसे जीवन-दान मिल जायेगा।"

सुमानी निर्धन परिवार में जन्मी तथा पली। उसका विवाह अतुल के पिता तोपिन चक्रवर्ती से हुआ था। जब तोपिन को यह ज्ञात हुआ कि विवाह से पूर्व सुमानी कँवरेगर्ल रह चुकी है, तो तोपिन ने सुमानी को घर से निकाल दिया और एक वर्ष का शिशु जिसका नाम बाद में अतुल रखा, सुमानी को नहीं दिया। इस वेदना से सुमानी के पिता को ऐसा धक्का लगा कि वह दो वर्ष के निकल को छोड़ कर इस दुनिया से सदैव के लिए चला गया।

दुखी सुमानी ने नर्स की ट्रेनिंग प्राप्त करके 'होली-इन-हरताल' में नौकरी कर ली और निकल को लिखा-पढ़ाकर ईरान भेज दिया, जहाँ वह

गुप्तचर बन गया।

अंजिका बोली, "सोचने से क्या लाभ, जो माँ है, वह माँ ही रहेगी। परस्पर दूरी हो सकती है, परन्तु सम्बन्ध तो नही टूट सकता।"

"तुम ठीक कहती हो, अंजिका। मैं स्वदेश जाकर माँ के चरण स्पर्श कर उनसे क्षमा माँगूंगा।"

"आज मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

"तुमने मुझे जीवनदान दिया है। मेरी सोयी आत्मा को जगाया है। तुम मेरे लिए सरिता का वरदान सिद्ध हुई हो।"

"मैं न वरदान हूँ और न ही कोई देवी। मैं एक साधारण नारी हूँ।"

"नही, अंजिका, नही! मैं इसके बदले में तुम्हें कुछ नही दे सकता।"

"बदले की भावना तो मैंने त्याग दी है। मैं तुम्हारे कथन का अनुकरण कर रही हूँ।"

"अब तो तुम मेरे साथ भारत चलोगी?"

"नही, यह कैसे सम्भव हो सकता है? मैं कैप्टिन के सम्पर्क में रह चुकी हूँ।"

"तुमने तो कहा था कि नदी की गोद से निकाल कर लाये हो, फिर पराया कैसे समझूं।"

"इन शब्दों की पुष्टि तो मैं आज भी करती हूँ कि तुम पराये नहीं हो। परन्तु नारी-धर्म है कि जिसके अंगों मे समा गई, जिसको समर्पण कर दिया, उसी की हो गई।"

"तो क्या तुम निकल से फिर सम्बन्ध स्थापित करोगी?"

"मुझे करना ही चाहिये।"

"वह तो बन्दी बन चुका है।"

"मैं प्रतीक्षा करूँगी।"

"क्या वह अब तुमको मिलेगा?"

"जीवन के चौराहे से कभी-न-कभी तो गुजरेगा ही।"

"तुमने तो मुझे भी आश्वासन दिया था।"

"नही, मैंने कहा था, नारी कभी आश्वासन नहीं देती और मैं जानती थी कि मेरा-तुम्हारा सम्बन्ध क्या है?"

"निकल ने तुम्हारे साथ बलात्कार किया है, विवाह नहीं।"

"यह तुम्हारी भूल है। विवाह भी समर्पण है और बलात्कार भी। विधि मे, इच्छा मे अन्तर कह सकते हो, बाकी है समर्पण ही।"

"कभी कहती हो, पीठ पर मार के निशान हैं, कभी कहती हो, समर्पण किया है।"

"तुम कुछ भी समझो, अतुल ! नारी एक बार जिसकी हो जाती है, विधि और वातावरण चाहे पृथक-पृथक हों, नारी को उसे ही अपना पति मान लेना चाहिए। उसी मे नारी जाति की भलाई है, उसी में समाज का हित है।"

"परन्तु पुरुष भी उसे पत्नी माने तब न ?"

"पुरुष पर तो कोई नियम ही लागू नही होता। वह तो नियम-मुक्त है।"

"ऐसी दशा मे तुम अकेली यहां रह सकोगी ?"

"अब ललिका मिल गई है, उसकी देख-रेख करूंगी। फिर पिताजी का पता लगाकर कुछ सोचूंगी।"

"ऐसी अवस्था में तुम्हारे पिता तुम को देखकर, ललिका को देखकर सहन कर सकेंगे ?"

"ललिका की दशा देखकर उनको दुख नही होगा। मैं जब तक बन्धन-मुक्त हो जाऊँगी या कह दूंगी, मैंने विवाह कर लिया।"

संयोग की बात है, उसी समय एक गोली खिड़की से आयी और अंजिका के वक्ष पर जा लगी। अतुल ने पिस्तौल निकाल कर खिड़की की ओर देखा—सामने कैप्टिन खडा था। अंजिका उसी क्षण पृथ्वी पर गिर गई।

अतुल भी कम चतुर नही था। उसने अंजिका को छोड़कर निकल पर गोली चला दी। निकल वही ढेर हो गया।

अतुल ने निकल को देखा, वह प्राण त्यागने वाला ही था। अतुल उसको उठा कर अजिका के पास ले गया।

अजिका टूटते शब्दों मे बोली, "यह तुमने क्या किया, अतुल ? तुमने मुझे ही विधवा बना दिया। वह जैसा भी था, था तो तेरा पति।" कथन के साथ ही अजिका ने निकल को देखा। उस समय तक निकल प्राण त्याग चुका था।

अंजिका बोली, "पति अगर पापी हो, अत्याचारी हो तो राष्ट्र का, नारी का शत्रु है।

अतुल बोला, "न यह कल तुम्हारा था, न आज ही है। इसने एकमात्र दो हत्या करके नरक का द्वार खोज लिया है।"

अंजिका आँखें बन्द करती हुई बोली, "अच्छा हुआ मेरी मौत इसके हाथों हो गई। यह भी बुरा नहीं है कि यह भी मारा गया। एक पापी संसार से विदा हो गया।"

"अंजिका!" अतुल बोला।

अंजिका ने अधखुली आँखों से कहा, "मुझे क्षमा कर देना।"

"क्षमा तो मुझे माँगनी चाहिए।"

"तुम क्षमा के पात्र नहीं, पूजा के पात्र हो।" आँखें बन्द करते हुए अंजिका ने अन्त मे कहा, "जय बंगला देश ! जय बंगला देश !"

अतुल की आँखों ने खारा नीर बहा कर कहा, "अंजिका !"

अब अंजिका कहाँ थी ? वह तो सदैव के लिए [illegible]।

"आज भारत सरकार ने बंगला देश की सरकार को मान्यता दे दी।" खाईं में बैठे मुक्ति वाहिनी के जवान ने कहा।

उसी खाईं मे भारतीय जवान बैठे थे। उन्होंने बंगला देश में प्रविष्ट होकर ढाई सौ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर अधिकार कर लिया था। दीवानपुर जिले में भारतीय सेना फुलबाड़ी पर अधिकार करके आगे बढ़ रही थी। उसी दिन चटगाँव बन्दरगाह पर [illegible] को डुबा दिया गया। उसी दिन बंगला देश में चार सैबर जेट गिराए गए। सोलह विमान [illegible] गये। युद्ध आरंभ होने पर [illegible] विमान थे।

उसी दिन मार्च [illegible] भारतीय सेना ने [illegible] पर कब्जा [illegible] बुरीचन्द पर अधिकार करने के बाद भारतीय सेना [illegible] गई।

दूसरा जवान बोला, "अब इनकी [illegible] की ओर [illegible]

"काजीपुर क्षेत्र व कुछ मैमन सिंह क्षेत्र पर आज हमारा अधिकार है।" जवान खाई से बाहर निकल कर बोला।

पैदल सेना ब्रह्मपुत्र की ओर बढने लगी। उनको विश्वास था कि हम बंगला देश को स्वतंत्रता दिलाकर जायेंगे। वे आगे बढे चले जा रहे थे।

दूसरी सेना जैसोर को आजाद करा कर ढाका की ओर बढ़ रही थी। इस टुकड़ी को भी ढाका पहुँचने मे अधिक दिन नही लगने थे। उसी थल सेना मे एक राजपूत जवान था जिसके हाथ में गोली लग गई थी। उसने प्रथमोपचार के लिए इनकार कर दिया। उसने कहा, "मैं घाव पर पट्टी ढाका में ही बांधूंगा।"

दूसरे ने कहा, "मैंने भी कसम खाई है कि ढाका मे ही पानी पिऊँगा, जब तक ढाका नहीं पहुँचूंगा, तब तक पानी को हाथ नही लगाऊँगा।"

तीसरे जवान ने आकाश की ओर देखकर कहा, "तेरी भाभी की कसम, भोपाल। ढाका पहुँचने पर एक-एक को चुन कर मारूँगा।"

राजपूत जवान का नाम भोपाल सिंह था, जो बीकानेर का रहने वाला था। दूसरा जवान भी इसी के साथ थल सेना में भरती हुआ था। उसको भोपाल प्यार मे 'मरियम' कहता था।

भोपाल बोला, "मैं भी बापू से वादा करके आया हूँ कि पीठ पर गोली नही खाऊँगा।"

मरियम बोला, "मैं भी तेरी भाभी से कह कर आया था कि दस पाक तेरे नाम के, दस अपने नाम के तथा दो पाक सैनिक मुन्ना के नाम के मार कर आऊँगा।"

सामने सौ गज की दूरी पर पाक सेना के जवान खड़े थे जो तोप से गोले बरसा रहे थे। इधर भोपाल तथा मरियम एक ही तोप को चला रहे थे।

भोपाल बोला, "बोल, गोला कहाँ गिरे ?"

"कहीं भी डाल दे, भोपाल। पर दम मार दे।"

"अरे, तू दम की बात करता है। एक घंटा रुक जा, सभी लेट जायेंगे। तू देखता जा। बापू की कसम, छठी का दूध याद दिला दूंगा।"

तोप चली। आसमान में गोले फटने लगे। पाक का टैंक टुकड़े-टुकड़े हो

गया।

उसी समय भोपाल बोला, "देख मरियम, अपनी आँखों से देख ले। बापू से कहना पड़ेगा तुझे कि तेरे बेटे ने माँ का दूध हलाल कर दिया।"

"तेरी माभी की कसम, भोपाल। तेरे निशाने तो अर्जुन के निशाने को भी मात कर गये। ऐसे निशाने लगाता रहा तो पाक क्या, चीनी भी चीन छोड़ कर भाग जायेंगे।"

भोपाल बोला, "अब की बार गोला उस पेड़ के पास डाला जाये, वहाँ से अधिक गोली निकल रही हैं।"

"ठीक है।"

"हो जा तैयार।"

"चला दे।"

"गया।"

"उड़ गई।"

"जल गई।"

"मर गये।"

"शाबाश !"

"वो आया।"

"रेत में गिर गया।"

"कोई मरा ?"

"नहीं।"

"घायल हुआ ?"

"सवाल ही पैदा नहीं होता।"

"कितने रह गये ?"

"दो सौ।"

"अब की वार दम जाएँ ?"

"जाएँ।"

"भर दे।"

"भर दी।"

"छोड़ दूँ ?"

"हाँ।"

"मशीन गन पर गिरा ?"

"हाँ, दस लुढ़क गये।"

"अब तक चालीस मर गये ?"

"हाँ।"

दोनों बातों में मस्त हो गये। युद्ध चलता रहा। पाक सेना पीछे हटती रही। उसी समय एक गोली आकर भोपाल की छाती में लगी। भोपाल गिर गया। मरियम ने भोपाल को गिरते देखा। वह उसे उठाने लगा।

भोपाला बोला, "दोस्ती पूरी कर दे। मुझे मारने वाला जिन्दा न रहे। उसकी छाती में छेद कर दे.........कर दे.........मरियम, कर दे। मेरे मरने से पहले कर दे।"

उसी समय वहाँ सूबेदार मोरासिंह आ गया और बोला, "भोपाल !"

भोपाल ने कहा, "मेरे बापू से कह देना, तेरे भोपाल ने पीठ में गोली नहीं खायी। मेरी लाश उनको दिखा देना ताकि सीने में लगी गोली बापू देख सकें।"

मरियम बोला, "तुम्हें मारने वाला तुमसे पहले चला गया।"

उसी समय कैप्टिन के० सिंह ने कहा, "पाक सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया।"

"भला जब भोपाल जैसे जवान होंगे तो पाक आत्मसमर्पण नहीं करेगा तो और क्या करेगा ?" मरियम ने भोपाल को देखा और हैट उतार कर हाथ में ले लिया।

ग्यारह

तेरह दिन की लड़ाई के बाद पूर्वी पाकिस्तान की कीर्ति शेष होने पर बंगला देश का जन्म हुआ। स्वतंत्र बंगला देश के रूप मे पूर्वी बंगाल एक नया राष्ट्र बना।

पाकिस्तानी सेनाओं के कमाण्डर ले० ज० नियाजी ने भारतीय सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। ढाका में जनरल अरोड़ा ने आत्मसमर्पण के समझौते पर हस्ताक्षर करके बंगला देश की सरकार के महासचिव और अन्य तीन अधिकारियों को सैनिक शासन सँभलवा दिया। परन्तु इस निश्चय के साथ कि स्थिति सामान्य होने तक भारतीय फौज बंगला देश में ही रहेगी।

जिस दिन बंगला देश को स्वतन्त्र करना था, उसी दिन तथा इससे पूर्व जनरल मानेकशाह ने पाक अधिकारियों से अपील की कि वे आत्मसमर्पण कर दें।

यह सन्देश जनरल नियाजी को मध्यान्ह के बाद मिला। उसने कहा, "मैं तो पहले ही प्रयास कर रहा हूँ कि यह रक्तपात रोका जाए।" इतना कहने पर भी नियाजी ने सेना को आत्मसमर्पण का आदेश नही दिया, जब कि वह जानता था, ढाका चारों ओर से भारतीय सेना तथा मुक्ति वाहिनी से घिरा है। भारतीय सेना के सामने अब तक दस हजार पाक सैनिक आत्मसमर्पण कर चुके थे।

सायं को भारतीय सेना ने सैनिक कार्यवाही बन्द कर दी। परन्तु चार घंटे तक प्रतीक्षा करने पर भी नियाजी का कोई सन्देश नही आया तो रात को भारतीय सेना ने फिर ढाका पर तोपों तथा विमानों से बम गिराना

आरम्भ कर दिया। तभी नियाजी का सन्देश आया कि पाक सेना जनरल अरोडा के सामने आत्मसमर्पण करने को तैयार है।

पाकिस्तानी सेना के आत्मसमर्पण का समाचार सारे शहर में फैल गया। लोग 'जय बंगला' के नारे लगाते सड़कों पर आ गये। भारतीय सेना को फूलों के हार पहनाये गये। नौ माह के भीषणतम कष्टों के बाद ढाका आज आनन्द में डूब गया। क्या बच्चे, क्या नर-नारी 'जय भारत' 'जय बंगला' की ध्वनि लगा-लगा कर नृत्य कर रहे थे।

उसी नृत्य मे मिताली को ओतिन ने देखा और बोला, "आज स्वप्न साकार हो गया। 'बंगला देश' आजाद हो गया।"

मिताली बोली, "इसमे तुम्हारा बहुत सहयोग रहा है।"

"सभी का सहयोग था। तुम्हारा क्या कम था ?"

"मैं तो केवल तुम्हारी छाया थी।"

"हम एक-दूसरे के बल पर एक-दूसरे से प्रेरणा लेकर काम करते रहे।"

मिताली ओतिन का हाथ पकड कर एक वृक्ष के नीचे ले आयी। उसी वृक्ष के नीचे खडी होकर बोली, "तुमने हथेली पर जान लेकर इस तेरह दिन के युद्ध मे जो काम किया है वह बंगला देश के इतिहास मे स्वर्ण-अक्षरों से लिखा जायेगा।"

ओतिन ने मिताली को देखा। मिताली ने ओतिन को देखा और देखा वृक्ष पर बैठे उस जुगल परेवा को जो डाल पर बैठे एक दूसरे से आलिंगन-बद्ध थे। मानो उनको भी बंगला देश के स्वतंत्र होने का हर्ष हो।

परेवा की मुद्रा मे भावनामयी मिताली खो गई। ओतिन उसके अधरों पर गर्म साँस छोडकर मौन हो गया, जैसे ठंडा पानी पड जाने पर उबला पानी शान्त हो जाता है।

उसी भावना मे, उसी मुद्रा मे मिताली बोली, "अब तो हम······।"

ओतिन मिताली के बालो मे हाथ डालकर बोला, "क्या अब हम एक नही हैं ?"

"विधिवत् रूप मे।"

"विवाह भी तो एक गुलामी है।"

"यह तो पूर्वजों का एक नियम है। समाज का एक बन्धन है, एक संयोग है। तुम इसको गुलामी कहते हो, मैं इसको एक बन्धन।"

प्रोतिन उसकी आँखों मे देखकर बोला, "बन्धन भी तो गुलामी का ही दूसरा रूप है।"

मिताली ने आँखें बन्द कर ली और बोली, "फिर कर दो न बन्धन-मुक्त। क्यों गुलामी में रहते हो ?"

प्रोतिन को ध्यान आया कि मिताली उसके बन्धन में है। उसने एक बार उसकी बन्द आँखों को देखा, फिर लालिमा लिए कपोलो पर हलकी-सी चपत लगाकर बोला, "जब तुमने आत्मसमर्पण कर ही दिया तो जेनेवा समझौते के अनुसार तुमसे उचित व्यवहार करना पड़ेगा।"

"क्या जेनेवा समझौते मे यह कहा गया है कि विवाह न करो, बाल सहलाओ, भावना-मुक्त हो जाओ ?"

प्रोतिन धीरे से बोला, "अरी पगली, नारी कुछ भी है, है तो माँ। विवाह न होगा, तो माँ न होगी। माँ न होगी, तो ममता न होगी। बचपन न होगा, तो यौवन न होगा। मैं न होऊँगा, तो तुम न होओगी। इसलिए विवाह तो करेंगे ही। परन्तु······।"

मिताली बन्धन मुक्त होकर बोली, "फिर परन्तु ! जब तक परन्तु रहेगा, मैं और तुम एक नहीं हो सकते। परन्तु को दूर करना होगा।"

प्रोतिन बोला "चलो, उठो। अगर तुम्हे विश्वास नहीं है तो बुला लो ब्राह्मण को, करो रीति-रिवाज पूरे।"

मिताली हर्ष मे पुलकित हो गई। वह प्रोतिन की छाती से लगकर बोली, "तुम खरे उतरे, मैं तो परिहास कर रही थी। मुझे क्षमा कर दो।"

प्रोतिन आँखों से हँस दिया और प्रेमातुर वाणी मे बोला, "मिताली।"

मिताली ने सरल भाव से कहा, "हूँ।"

"चलो। ललिता का पता लगायें, कैसी है ?"

"कहाँ है इस समय ?"

"अतुल के निवास-स्थान पर।"

मिताली उसी समय कुछ सोच कर बोली, "अतुल कहाँ पर है ?"

"उसका तो मुझे भी नही मालूम। वैसे आज अतुल को रेसकोर्स मे होना

चाहिए । युद्ध-विराम तथा आत्म-समर्पण के कागजो पर हस्ताक्षर होने हैं।"

मिताली कुछ क्षण मौन रही फिर अतुल के निवास की ओर चलती हुई बोली, "ढाका में कुल कितने पाक सैनिक थे ?"

"लगभग २४ हजार।"

"और सारे बंगला देश में ?"

"९० हजार, जिनमें लगभग सौ अफसर हैं।"

"भारत की भी सैनिक क्षति अवश्य हुई होगी ?"

"कुछ ठीक नही कहा जा सकता, पर यह युद्ध था इसलिए क्षति तो आवश्यक है। भारत सरकार का अनुमान है कि एक हजार सैनिक वीर गति को प्राप्त हुए। तीन हजार घायल हुए। सौ लापता हैं। यह संख्या लगभग चार हजार है। इसमें वह सख्या शामिल नही है, जो पश्चिमी मोर्चों पर लड़े थे।"

"और पाक की क्षति ?"

"सैनिक क्षति के आंकड़े अभी प्राप्त नही हुए। परन्तु पाक ने ९५ विमान, २४४ टैंक, ४ युद्धपोत, २ पनडुब्बी तथा अन्य सैनिक सामग्री को खोया है। इस युद्ध मे भारत को कुछ क्षेत्र भी छोड़ना पड़ा। लेकिन अधिक क्षेत्र पाक को खोना पडा। भारत ने पाक के ३६ हजार वर्गमील पर अधिकार कर लिया।"

मिताली बोली, "सुना है, ब्राह्मण बारिदा में भारतीय सेना को पाक सैनिकों की खाइयों मे नंगी मृत या अचेत लडकियाँ मिली हैं।"

"हाँ, जीवितों में से अधिकाश गर्भवती हैं। उन्ही मे से एक लड़की ने बताया कि ढाका छावनी मे सैकड़ो यौवन की मादकता से पूर्ण लड़कियों को पकड़ कर लाया जाता था, उनमें से एक मैं भी थी।" बिलखते हुए उस लडकी ने बताया था, "मुझे घर से उठाकर लाये थे। लाकर कतार में खड़ा कर दिया। हमारे वस्त्र पहले ही उतार लिये थे। मैंने अपने बालों को वक्ष पर डाल लिया। उस समय एक पाक सैनिक आया और बोला, 'देखने दो, मेरी रानी। ये फिर किस काम आयेंगे ?' पाक सैनिक आते, आँखें उठाकर देखते और अपनी इच्छानुसार सुन्दर लड़की को साथ ले जाते। यदि ये कामुक कुत्तों की इच्छा पूर्ण करने में आनाकानी करती तो पहले उनके साथ

बलात्कार किया जाता, फिर उन्हें गोली मार दी जाती।"

मिताली बोली, "यह ढाका, जैसोर, फरीदकोट आदि स्थानो पर अधिक हुआ है। परन्तु सबसे अधिक ढाका मे।"

"न जाने कितनी लड़कियाँ ऐसी हैं!"

"लगभग दो लाख।"

"उनको कौन अपनायेगा ?"

"अब बंगला देश के सामने सबसे बड़ी यही समस्या है। गर्मपात केन्द्र भी खोल दिए गए है। गर्भपात कराये जा रहे है।"

"प्रश्न गर्भपात का नही, उनके नारीत्व का है, जो लौट-कर नहीं आ सकता।"

अोतिन बोला, "हाँ, वह तो अब लौट कर नही आ सकता।"

मिताली बोली, "इस समस्या का समाधान क्या होगा ?"

उसी समय अोतिन ने एक बाग देखा। उसी बाग में एक सार्वजनिक नल था। नल के पास एक बेंच था। अोतिन को प्यास लगी थी। सर्दी का समय था। अोतिन नल मे बहते पानी को देखकर बोला, "कुछ देर बैठ कर चलेंगे। थक गए, कई रात से सो नही सका। आज कुछ आराम मिला है।"

मिताली बोली, "घर पर ही आराम करना। अब दूर ही कितना रह गया है।"

"नही, मिताली, बहुत थक गया हूँ। अब चला नही जाता। कुछ आराम कर लूँ तो चलूँ।"

"जैसी इच्छा।"

अोतिन पानी पीकर बेंच पर बैठ गया और थकान-सी अनुभव करता हुआ बोला, "अब बोलो, क्या कह रही थी ?"

मिताली समीप ही बैठी थी। बाएँ हाथ को अोतिन के कन्धे पर रखकर बोली, "यदि मेरे साथ ऐसा हो जाता, तो ?"

"मेरी भावना में कोई अन्तर न आता।"

"क्यों ?"

"क्योंकि उसमे तुम्हारा दोष नही होता। हीरा हीरा ही रहता है। उसके

गुणों में क्या अन्तर पड़ता है, चाहे वह महल में रहे या झोंपड़ी में।"

"परन्तु नारीत्व और हीरे में तो अन्तर है।"

ओतिन बोला, "पारस मणि सोना उगलती है। महत्व तो सोने का है, पारस मणि का नहीं।"

"यदि तुम्हारी भाँति सब इस प्रकार सोचें, तो दो लाख लड़कियों की माँग मे सिन्दूर भर सकता है। फिर से उनके हाथों में मेंहदी रचाई जा सकती है। वे डोली में बैठकर दुलहन बनने का स्वप्न देख सकती हैं।"

"इस पर भी विचार करना होगा।"

"यह कम कड़ी समस्या नहीं है।"

"मुझे सहयोग मिले तो यह समस्या भी हल हो जाएगी।"

"कैसे ?"

"हमें शिशु-निकेतन खोलने होंगे। नारी-निकेतन खोलने होंगे। उन अवैध शिशुओं का भार सरकार उठायेगी जो शिशु निकेतन मे जन्म लेंगे या छोड़ दिए जायेंगे।"

"यह तो सारे बंगला देश मे खोलने होंगे ?"

"हाँ, मुख्य-मुख्य शहरों में खोलने होंगे। ढाका में चार शिशु-निकेतन तथा इतने ही नारी-निकेतन खोलने होंगे।"

"बाद मे बच्चे कहाँ जायेंगे ? नारी किसकी छाया में रहेगी ?"

"देश-विदेश मे भेजकर उन लोगों को दे दिए जायेंगे, जिनको बच्चों की आवश्यकता है। कई राष्ट्र ऐसे हैं, जिनकी जनसंख्या कम है। उनको बच्चों की आवश्यकता है।"

"यह सरकारी योजना है या केवल तुम्हारा मत ?"

"यह मेरी बात है; परन्तु सरकार को यह सुझाव देना होगा। यदि सरकार नहीं करेगी तो मुक्ति वाहिनी स्वयं करेगी।"

"मुक्ति वाहिनी यह भार भी उठाएगी ?"

"क्यों नहीं ? यह हमारी योजना का दूसरा चरण है।"

मिताली बोली, "और पतित लड़कियाँ ?"

"मुक्ति वाहिनी के किशोर जवानों ने फैसला किया है कि वे ऐसी लड़कियों से ही विवाह करेंगे, जो पाकिस्तानी दरिन्दों की हविस का शिकार हो गई है।"

"कितने ऐसे जवान हैं ?"

"दो हजार जवानो ने मौखिक रूप से अपना समर्थन दे दिया है।"

"केवल दो हजार ?"

"यह तो शुरुआत समझो। बाद मे देश के युवको से अपील की जाएगी कि वे इन युवतियों को अपना लें, जो कामुक भावना में पिस गई हैं।"

मिताली ने सरल भाव से कहा, "यह योजना सफल हो गई तो बंगला देश की एक विशाल समस्या का समाधान हो जाएगा।"

ग्रोतिन बोला, "हां, मिताली। परन्तु ....।"

"परन्तु क्या ?"

"मुझे ऐसा अवसर नही मिल सकेगा। मुझ से भी ऐसा कहा गया है कि मैं पतित नारी से विवाह करूँ।"

मिताली को करंट-सा लगा। वह निष्प्राण-सी बन गई। कुछ कहते न बना। ऐसे प्रश्न का वह क्या उत्तर देती ? ग्रोतिन ने मिताली को देखा, मिताली ने ग्रोतिन को। दोनों एक-दूसरे को परस्पर देखकर मौन बने रहे। कुछ क्षण बाद मिताली बोली, "उनका अनुरोध तो गलत नहीं है।"

"तुमको स्वीकार है ?"

"तुम त्याग कर सकते हो तो मिताली को भी कमजोर न समझना। मैं भी त्याग कर सकती हूँ, परन्तु एक बात माननी होगी।"

"कहो।"

"मुझे विवाह करने के लिए नहीं कहोगे।"

"क्या तुम कुंआरी ही रहोगी ?"

"क्यों, तुमको शक है ?"

"नही, ऐसी बात नहीं है पर यह अच्छा नही लगता। मेरे कारण तुम अविवाहित रहो। मैं कामुक बन जाऊं, तुम भावुक बनी रहो। यह कैसे चलेगा, जीवन कैसे कटेगा ?"

अब तो बात त्याग और बलिदान की है। त्याग के मार्ग पर दूसरी बातों को महत्व नहीं दिया जाता। मुझे भी अपना सिर ऊँचा करना है। मेरा ग्रोतिन अपने मित्रों में सिर झुकाये, यह मैं कैसे सहन कर सकती हूँ ? तुम विवाह करो, मैं खुशी-खुशी वधू को आशीर्वाद दूंगी। जब तुम इतना त्याग

कर सकते हो, दलित फूल मस्तक पर लगा सकते हो तो मैं क्या इतना-सा भी बलिदान नहीं कर सकती ?"

"मिताली !" श्रोतिन ने सूखे अधरों से कहा ।

"उपहास न समझो, श्रोतिन, मैं प्रसन्नता से कह रही हूँ। ऐसा अवसर आये, तो सिर न झुकाना । प्रथम विवाह तुम ही करना, तुमको मेरी कसम ।"

"तुम धन्य हो, मिताली ।"

मिताली मौन हो गई ।

श्रोतिन बोला, "मेरे कहने का बुरा न मानना ।"

"ऐसा क्यों करूँगी ?"

"चलो, फिर चलते हैं ।" श्रोतिन बोला ।

"चलो, जैसी तुम्हारी इच्छा ।"

"यदि आपत्ति हो, तो अब भी······ ।"

"मैंने कहा न, मुझे गर्व है । मेरा श्रोतिन आदर्श का मार्ग खोलेगा । एक अबला पतिता से विवाह करके समाज को नया मार्ग दिखायेगा । एक नया पथ होगा, जिस पर बंगला देश की पतित नारी चलकर अपना जीवन-साथी चुन सकती है, नया जीवन पा सकती है, समाज में उच्च स्थान रख सकती है ।"

"मुझे ऐसी आशा नहीं थी कि तुम इस प्रार्थना को स्वीकार कर लोगी ।"

"फिर तुमने नारी की भावना को समझा ही नहीं । नारी प्रेमी के लिये हर त्याग कर सकती है । प्रेम के कारण जिन्दा रह सकती है, तो मर भी सकती है । प्रेम स्वार्थ नहीं, त्याग और बलिदान सिखाता है ।"

श्रोतिन ने मिताली को देखा और उदास भाव से कहा, "मैं तुम्हारा सदा आभारी रहूँगा, ऋणी रहूँगा ।" और इतना कहने के साथ ही बेंच पर से उठकर चल दिया ।

मिताली का अंतर्मन भँवर में फँसे व्यक्ति की भाँति व्याकुल होने लगा । विचार सावन के बादलों की भाँति उसके मस्तिष्क के आकाश में मँडराने लगे । उसका अन्तर्मन बिलख उठा । आज खुशी के साथ-साथ वह दुखी भी थी । उसका मन भारी होता जा रहा था । सोचने लगी—विवाह एक कर्म

है, मैं उससे इन्कार नहीं करती। किन्तु भावनाओं और सुखद कल्पनाओं के ध्वंसावशेष पर जब कर्म का प्रासाद चिना जाता है, तब नीरसता की भूकम्पीय तरंगें नीव में घुस कर समस्त प्रासाद को धराशायी करने लगती हैं और··· और · फिर······।"

उसके मन का संसार सूना था। वह शान्त चली जा रही थी। मार्ग में अधिक बातें न हो सकीं। उसने मन-ही-मन कहा—'ओतिन ने अनुरोध किया है, प्रार्थना की है और अनुरोध व प्रार्थना में अधिकार से अधिक शक्ति होती है। स्त्री पर पुरुष के अधिकार का अर्थ है मृत्यु और अनुरोध व प्रार्थना का अर्थ है त्याग।

"अकेला क्षितिज ही उषा पर अपना अधिकार समझने लगे तो क्या होगा ? ओतिन पर राष्ट्र का भी अधिकार है।

"मैं राष्ट्र के लिये ओतिन का त्याग कर दूंगी। यह मेरा कर्त्तव्य है। मैं इसे आभार नहीं समझूंगी। क्योंकि आभार के उतरने पर तो सम्बन्ध टूट जाते हैं। मैं किसी मूल्य पर सम्बन्ध तोड़ने को तैयार नहीं।"

विचारों की शृंखला में बँधी मिवाली ओतिन के साथ मार्ग पर चलती रही।

बारह

बी० बी० सी० ने अपने प्रसारण मे कहा कि युद्ध मे पराजय के बाद पश्चिमी पाकिस्तान की जनता मे याह्याखां के प्रति गहरा असन्तोष पैदा हो गया है। याह्याखां ने अत्यन्त अपमानजनक आत्मसमर्पण तथा जनता के असन्तोष के कारण राष्ट्रपति के पद से त्याग-पत्र दे दिया है और भुट्टो ने सत्ता सँभाल ली है।

भुट्टो ने याह्याखां के वफादार पदाधिकारियों को पदच्युत कर दिया। सिन्ध के गवर्नर जनरल रहमान को हटा कर मुमताजअली को गवर्नर बना दिया। बाईस परिवारों के पासपोर्ट रद्द कर दिये गये। उनसे कहा गया कि जो पूंजी विदेश के बैंको में जमा कराई है वह पाकिस्तान बैंको में जमा करायें। कहा गया है कि साठ प्रतिशत व्यापार तथा इतना ही बैंक व्यवसाय इन परिवारों के अधिकार मे था।

यह प्रसारण बी० बी० सी० ने दिसम्बर मास मे किया था। जनवरी के प्रथम सप्ताह में बी० बी० सी० ने कहा कि शेख मुजीब लन्दन जा रहे हैं। लेकिन वहां से बंगला देश जायेंगे या नहीं, इस कथन की पुष्टि बी० बी० सी० ने उस प्रसारण मे नहीं की।

आज के प्रसारण में बी० बी० सी० ने कहा कि शेख मुजीब आज लन्दन पहुँच गये हैं। वहां से दिल्ली होते हुए बंगला देश पहुँचेंगे। आज टेलीफोन पर प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से वार्ता की है। बंगला देश के विदेश मन्त्रालय को सूचना भेज दी गई है। ढाका के हवाई अड्डे पर जनता उनके स्वागत का प्रबन्ध कर रही है।

इस प्रसारण को सुन कर ओतिन ललिका से बोला, "हमारी सब इच्छाएँ पूर्ण हो गईं।"

ललिका ओतिन के निवास-स्थान पर थी। तन्नू को शिशु निकेतन में छोड़ दिया गया था जिसका संचालन गत सप्ताह से मिताली कर रही थी। मिताली अपने अतिरिक्त समय मे शिशु निकेतन की सहसंचालिका का भार सँभाल रही थी। उसके शिशु निकेतन मे पाँच सौ अवैध शिशु पालनों मे पड़े, मुसकराते रहते, रोते रहते।

ललिका ने कहा, "लेकिन अतुल का कुछ पता नही लगा।"

"हाँ! कहा नही जा सकता, वह युद्ध मे वीरगति को प्राप्त हो गया या लापता है।"

ललिका बोली, "हो सकता है, स्वदेश लौट गया हो, पर कह कर तो जाता।"

"गुप्तचर था, गुप्त ढंग से चला गया होगा!"

"नही, ऐसा नही हो सकता। वह किसी दुर्घटना का शिकार हो गया, मुझे तो ऐसा लगता है।"

"हो सकता है, परन्तु ऐसी अशुभ बातें मुख से क्यों निकाली जाएँ?"

"अब किया भी क्या जा सकता है? कुछ भी हो, अतुल का अभाव राष्ट्र को खटकेगा। काश, वह आज होता, इस योजना को अन्तिम रूप देता। साथ ही मुक्ति वाहिनी सहयोग देती तो राष्ट्र की एक बहुत बडी समस्या का समाधान हो जाता।"

ललिका कुछ क्षण बाद बोली, "मैं चाहती हूँ कि घर पर एक पत्र लिखूं। दादा आकर ले जायेंगे। जो हो गया वह तो लौट कर नही आ सकता।"

"दादा को दुःख होगा," ओतिन ने साँस रोक ली, "तुम्हारी दशा उनसे देखी नही जायेगी।"

"दादा समझ बैठे होगे कि दोनों लड़कियाँ मर गईं या दानवो के हाथ, पड़ गईं। पर जब उनको पता लगेगा कि अंजिका राष्ट्र को समर्पित हो गई और ललिका ने अपनी ज्योति राष्ट्र को दे दी तो उनका हृदय हर्ष से नाच उठेगा। उनका सिर सम्मान से ऊँचा उठ जायेगा।"

"मैं सोचता हूँ, तुम कुछ दिन और विश्राम करती। आँखों का आप-

रेशान होने पर दादा को सूचना देते तो अधिक अच्छा होता।"

"नही, श्रोतिन ! अब आँखों का क्या करना है ? मुझे अपनी नेत्र-ज्योति जाने का जरा भी दुःख नही है। मुझे प्रसन्नता है कि मैं राष्ट्र की कुछ सेवा कर सकी। इससे बड़ा सौभाग्य मेरा और क्या हो सकता है ?"

"तुम्हे आजाद बंगला देश को देखने के लिये इन आँखों की आवश्यकता है। फहराता हुआ ध्वज क्या तुम देखना पसन्द नही करोगी ?"

"मानव की सभी इच्छाएँ कभी पूर्ण नही होती। जो मिला है उसी पर सन्तोष करके जीवन मे नया मार्ग खोजना है। नया पथ पाना है।"

"इन बातो मे दम नही है। यह तुम मुझको समझाने का प्रयास कर रही हो।"

"नही, श्रोतिन ! ऐसी बात नही है। यदि मुझे कोई दुख होता तो तुमसे अवश्य कहती।"

"लेकिन मुझे तो दुःख है।"

"लाओ, वह दुःख मुझे दे दो। मेरा हृदय बहुत विशाल है। मुझे अपने आँसू, अपनी पीडा दे दो और तुम पीड़ामुक्त हो जाओ।"

"यह सब इतना सरल नही है।"

"सरल तो बनाने से बनता है।"

"फिर प्रयास करो।"

"आज्ञा दो"

"नही, प्रार्थना समझना।"

"कहो"

"मेरी प्रार्थना स्वीकार करनी होगी !"

"इनकार कैसे कर सकूँगी ?"

"फिर तुम को एक काम करना होगा।"

"बोलो।"

"मुझे डर लगता है।"

"कैसा डर ? दीदी से भी कोई डरता है ?"

"मैं तो डरता हूँ, ···डरता हूँ।"

ललिका ने श्रोतिन का हाथ अपने हाथ मे लेना चाहा ! समीप में रखी

बैसाखी हाथ लगकर नीचे गिर गई। उसी समय ललिका बोली, "मुझ पर विश्वास करो। मैं अन्तिम साँस तक भी तुम्हारी आज्ञा को नहीं टाल सकती। पर एक बात है, उस आज्ञा या प्रार्थना में मेरे सुख तथा तुम्हारे दुःख का आभास न हो।"

श्रोतिन बोला, "फिर कहने से कोई लाभ नहीं।"

"इसका अर्थ यह हुआ कि तुम मुझसे कोई ऐसा काम करवाना चाहते हो जो तुम्हें पीड़ा दे, मुझे सुख दे। ऐसी आज्ञा मैं मानने को तैयार नहीं हूँ।"

"फिर मेरे यहाँ आने का क्या लाभ हुआ?"

"क्या तुम यहाँ लाभ खोजने आते हो?"

श्रोतिन कोई उत्तर न दे सका। वह मौन रहा। उसी समय द्वार पर कम्बल ओढ़े अतुल दिखाई पड़ा। जनवरी का मास था। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। सन्ध्या का समय था।

ललिका ने कहा, "कौन?"

श्रोतिन ने कहा, "अतुल बाबू।"

ललिका ने खड़ी होने का प्रयत्न किया, परन्तु एक ही झटके से नीचे गिर गई। शरीर का सन्तुलन न बन सका।

श्रोतिन बैसाखी उठाकर ललिका को देकर बोला, "मेरा हाथ पकड़ो।"

तब तक अतुल समीप आ गया था। वह कुछ बोला नहीं, केवल देखता रहा। उसने श्रोतिन को देखा, ललिका को देखा।

श्रोतिन बोला, "कहाँ रह गये थे, अतुल बाबू?"

अतुल कुरसी पर बैठकर बोला, "इधर आने का अवसर न मिल सका।"

ललिका बोली, "कैसे हो तुम? मैं देख तो नहीं सकती, पर सुन तो सकती हूँ। बोलो।"

"ठीक हूँ।"

"चलो, यह सुनकर मन को सन्तोष हुआ।" ललिका बोली।

अतुल उसी धीर भाव में बोला, "मिताली कैसी है?"

"ठीक है।"

"तुमको कुछ पता है?"

"किस बारे में?"

"अच्छा, पहले एक बात बताओ, क्या तुम्हारा-मिताली का परस्पर झगड़ा हो गया है ?"

"नहीं तो ! क्यों ?"

"उसने एक विज्ञापन दिया है कि वह उस जवान से विवाह करने को तैयार है जो युद्ध में अंग-रहित हो गया हो ।"

ललिका बोली, "यह कैसे हो गया ?"

ओतिन बोला, "कह नहीं सकता, शायद राष्ट्र-भावना में भावुक होकर ऐसा विचार धारण कर लिया हो ।" कुछ रुक कर अतुल की ओर देखकर पुनः बोला, "लेकिन तुमको कैसे मालूम ?"

"समाचार पत्र में पढ़ा था ।"

"कब ?"

"कल !"

"ओतिन जानता था परन्तु वह अपने मुँह से कुछ कहना नहीं चाहता था। वैसे उसके मुख पर सर्दी में भी जल-बिन्दु आ गये थे । मन की बात मन ही में रख कर बोला, "ठीक है उसका निर्णय । उसको ऐसा करना ही चाहिए। इससे दूसरों को भी प्रेरणा मिलेगी ।"

"और तुम...।"

"मेरा निर्णय तुम को मालूम है ।"

"वह योजना लागू हो गई ?"

"हाँ ।"

"फिर तो मिताली ने एक अच्छा कार्य किया है । नया मार्ग दिखाया है। उसके त्याग की ओर से कोई भी आँखें बन्द नहीं कर सकता ।"

ललिका ने कहा, "सच, मिताली के इस कार्य की सराहना किये बिना नहीं रहा जायेगा !"

ओतिन बोला, "उसको ऐसा ही करना चाहिए था ।"

"क्यों ?"

अतुल बोला, "ऐसा तुम्हारा आदेश था या उसकी अपनी भावना थी ?"

"मेरा कोई आदेश नहीं था ।"

अतुल ने विकल नयनों से ओतिन की ओर देखकर कहा, "उसने जीवन

कंटीले तारों में बाँध दिया।"

तभी बुढ़ियाने आकर कहा, "खाना तैयार है।"

बुढ़िया अोतिन की दासी थी, जिसको अोतिन ने ललिका की देख-रेख के लिए रख लिया था।

अतुल बोला, "मैं भोजन नहीं करूँगा।"

अोतिन बोला, "क्यों ?

"इच्छा नहीं है।"

"थोड़ा-सा···।"

"बिलकुल नहीं।"

ललिका बोली, "चाय इत्यादि तो ले सकते हो ?"

"कुछ नही।"

"एक गिलास पानी या वह भी नही ?" ललिका बोली।

"तुम भोजन करो। मैं जो चाहूँगा ले लूँगा।"

बुढ़िया अभी तक आदेश की प्रतीक्षा मे द्वार से लगी खड़ी थी।

अोतिन बोला, " खाना मेज पर लगा दो।"

ललिका बोली, "मैं तो नीचे आसन पर ही बैठकर खाऊँगी।"

अोतिन ने कहा, "तुम कब-कब कहती हो, आज आसन पर ही, सही।"

कुछ क्षण बाद आसन पर ही थाल लगा दिये गये। ललिका तथा अोतिन आसन पर बैठने से पूर्व बोले, "आओ, अतुल !"

अतुल बोला, "वास्तव मे मेरी इच्छा नहीं है।"

"खाने मे सभी तुम्हारी पसन्द की वस्तु है—भात, मछली, दही, पापड़, अचार, सूखी भाई दाल।"

ललिका अतुल के समीप खड़ी थी। ललिका ने जैसे ही उसका हाथ पकड़कर उठाना चाहा, तो उसके मुँह से एक चीख निकली और वह वहीं गिर गई। उसी समय अतुल खड़ा होकर ललिका को उठाने के लिए तनिक झुका तो उसके कन्धे पर से कम्बल सरक कर पृथ्वी पर गिर गया। अोतिन ने देखा, अतुल के दोनों हाथ कटे थे।

ललिका अचेत थी, अोतिन गम्भीर बन गया। अतुल मौन खड़ा रहा।

ग्रोतिन से कुछ कहते भी न बन सका। ग्रतुल शान्त मुद्रा मे ग्रोतिन को देख कर मौन ही रहा। ग्रोतिन की ग्रांखें ग्रांसुग्रो से भरी थी।

× × × ×

ललिका का पत्र मिलते ही डा० मित्रा ललिका के पास चटगाँव से ढाका पहुंच गये। ललिका पिता की छाती मे लग कर बिलख उठी। उसके दुख का कारण उसकी मां थी जो ग्रपनी दो पुत्रियों के दुख में रोग-शैया पर पड़ी तो फिर उठ नही सकी। समय बीतता गया। ललिका की मां सूख कर कांटा बनती गई ग्रौर फिर एक दिन हृदय-गति रुक जाने से उसकी मृत्यु हो गई। मां को दो यौवनमयी लड़कियो का वियोग सहन न हो सका। ललिका की ग्रांखें भर ग्रायी।

डा० मित्रा ललिका को सात्वना देकर बोले, "रोते नही बेटी, तुमने तो मेरा सिर ऊँचा कर दिया। ग्रपनी नेत्र-ज्योति देकर राष्ट्र को गुलामी की हथकडियो से छुड़ा दिया। तुम्हें तो प्रसन्न होना चाहिए।"

ललिका ने कुछ उत्तर नही दिया।

डा० मित्रा ने ही फिर कहा, "तुम चिन्ता न करो, ललिका। तुमको मैं ग्रमेरिका ले जाऊँगा, वहाँ मेरा मित्र है डा० डब्ल्यू० वाई० डेन, जो ग्रांखों का डाक्टर है। उससे मैं तुमको नेत्र-ज्योति दिलाऊँगा।"

ललिका बोली, "मुझे ग्रपनी ग्रांखों का दुःख नही है, पापा! दु:ख मुझे इस बात का है कि ग्राज मैं ग्रपना राष्ट्रीय ध्वज फहराता नही देख पा रही हूँ, ग्रजिका को नही देख पा रही हूँ।"

"राष्ट्रीय ध्वज ग्राज नही तो कल देख सकोगी ग्रौर उसी ध्वज मे तुमको ग्रंजिका का प्रतिबिम्ब दिखाई देगा। ध्वज के मध्य तुमको मां हँसती दिखाई देगी।"

"पापा, ग्राप नही जानते, ग्रजिका के साथ पाक सैनिको ने क्या-क्या किया है।"

"यह तो मैं नही जानता परन्तु इतना ग्रवश्य जानता हूँ कि बंगला देश के सामने ग्राज सबसे बड़ी समस्या इस लड़ाई के दौरान पैदा हुए दो लाख उन बच्चों की है, जिनकी माताएँ या तो लापता हैं या मर गई हैं। इन

अभागी माताओं तथा बच्चों का जीवन फिर से कैसे सुखमय बनाया जाये ?"

"पापा, सुना है कि अधिकांश बच्चो को कनाडा तथा पश्चिमी जर्मनी ने गोद ले लिया है।"

"यह सत्य है कि कुछ बच्चे कनाडा तथा जर्मनी चले गये। कुछ का पालन शिशु निकेतन मे हो रहा है। जो महिलाएं इस समय पतित हो गई हैं उनकी देख-भाल महिला पुनर्स्थापन बोर्ड कर रहा है। सरकार के पास साधनों की कमी है। इसलिए जनता तथा निकटतम सम्बन्धियों से अनुरोध किया गया है कि वे इनकी देख-भाल करें। जनता ने अपना हार्दिक सहयोग दिया है।"

ललिका बोली, "देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत युवा पीढ़ी ने स्वाधीनता-संग्राम में सक्रिय भाग लिया है। वे ऐसी किसी लडकी से घृणा करने की बात सोच भी नही सकते क्योंकि परिस्थितियों के कारण ही उनको ऐसी दशा हुई है। अधिकतर युवक मुक्तिवाहिनी के जवान हैं।"

डा० मिश्रा बोले, "आज भी वे महान् विभूतियाँ जीवित हैं जिन्होने अपना सुख राष्ट्र को अर्पित कर दिया। उनमे एक आदमी ऐसा भी हैं जिसको राष्ट्र सम्मान से विभूषित करेगा, सुनो—

"एक लडकी के साथ अत्याचार होते देख कर एक जवान मैदान मे कूद पड़ा। वह अकेला था जबकि पाक सेना के पचास दरिन्दे थे। वे सब कामुक नशे में थे।

"जवान ने कहा, 'इस लडकी को छोड़ दो।'

"तुम मरना चाहते हो।' पाक अधिकारी ने कहा।

"खडा होकर नहीं, लड़कर मरना चाहता हूँ।'

पाक अधिकारी ने उस लड़की को अपशब्द कह कर उसके वस्त्र उतारने आरम्भ कर दिये। जवान से रहा न गया। उसने समीप खडे पाक जवान की बन्दूक छीन कर पाक अधिकारी को वहीं ढेर कर दिया।

उसी समय एक पाक सैनिक ने आदेश दिया, 'इसने हमारे कैप्टिन को मारा है, इसके हाथ काट दिये जाएँ।'

जवान ने यह सोचकर कि कि इसके जीने से तो इसका मरना अच्छा, लड़की को गोली मार दी।

"पाक सैनिक जवान पर टुट पड़े और उसके दोनों हाथ ट्रक के पहिये के नीचे पीस दिये ।"

ललिका बोली, "उसका नाम आप जानते हैं, पापा ?"

"हाँ ! अतुल ।"

"अतुल !" ललिका के मुख से एकाएक निकल गया ।

डा० मित्रा बोले, "तुम क्यों चौक पडी ? क्या तुम उसको जानती हो ?"

"हाँ, पापा ! मैं उसको जानती हूँ । वह भी मेरी तरह अभागा है !"

"उसे अभागा मत कहो । बहादुर कहो, राष्ट्र का सच्चा वीर कहो ।"

ललिका बोली, "कल ही वह यहाँ आया था । जब मैंने उसकी यह दशा देखी तो अचेत हो गई । वह मुक्तिवाहिनी का सहसंचालक है ।"

"परन्तु मैंने तो सुना है कि वह किसी देश का गुप्तचर है ।"

"इस बात का मुझे नही पता । हो सकता है आपकी बात सत्य हो ।"

"मिथ्या भी हो सकती है ।"

"आप विदेश मंत्रालय मे सचिव हैं, इसलिए आपकी बात अधिक सत्य हो सकती है !"

"बात कुछ भी हो, जिस राष्ट्र मे ऐसी आत्माएँ होगी, वह गुलाम नही रह सकता ।"

"आप उसे देखें, तो अवश्य प्रभावित होगे ।"

"मैं उस जवान से अवश्य मिलना चाहूँगा ।"

"ओतिन बाहर गया है । उसके आने पर अतुल को बुलाना सम्भव होगा ।"

ओतिन कहाँ गया है ?"

"आज मुजीब आ रहे हैं, लन्दन से भारत होकर । उन्ही का स्वागत करने हवाई अड्डे पर गया है ।"

डा० मित्रा और ललिका घंटो तक एक-दूसरे से अपने मन की सुख-दुख की बातें करते रहे । कहा नही जा सकता, कब उन्होने विश्राम किया, कब भोजन किया । उस दिन तो उनको इसी मुद्रा मे वार्ता करते शाम हो गयी ।

"पत्थर मे पडी रेखा ग्रमिट होती है। मैं ग्रपना मार्ग नही बदल सकती।"

"तुमने मेरी भावना को समझने का प्रयास नही किया।"

"इस कथन का मैं विरोध करूँगी।"

"मेरी पीडा देखो।"

"मेरी साधना देखो।"

ग्रोतिन ने पेपरवेट रखकर कहा, "मेरा प्राण बनोगी ?"

मिताली की ग्राँखों ने कहा, "मैं क्या थी, क्या बन गयी ! ग्रोतिन, तुम सुखी रहो, प्रसन्न रहो ! इसी भावना से भरी मिताली ग्रपना सर्वस्व त्याग देगी। तुमने यह कथन सुना हो या न सुना हो पर मैं बता देती हूँ, नारी की ग्रारती का थाल एक ही मन्दिर में एक ही देवता के सामने रखा रहता है।"

"यही तो मैं कहता हूँ। जो फूल देवता के चरणों पर चढा दिया जाता है वह उठाकर किसी को भेंट नही किया जाता।"

"चलो, मैं तो इतना कहती हूँ कि मिताली तैयार है। क्या तुम मान जाग्रोगे ?"

"मैंने तुम्हारी कौन-सी बात का विरोध किया है ?"

"तुम्हारे कहने का ग्रर्थ क्या है ?" मिताली बोली।

"मैं तो इतना कहूँगा कि जिस विवाह में तुम उलझी हो, मेरा मत है उस पर विचार न करो। तुम्हारे पास यौवन है, सुन्दर जीवन है !"

"इसमें बुराई क्या है ? विवाह तो करना ही है, फिर क्यों न मैं तुम्हारे काम में सहयोग दूँ ? मैंने तुमको ग्रात्मीय समझा है, प्यार किया है, प्रेमी कहा है।"

"यह सब तो ठीक है, पर क्या तुमको जीवन के प्रति ममता नहीं है ?"

"मैं तुम्हारे प्यार मे, तुम्हारी साधना मे खो गई हूँ। मेरा ग्रात्मीय एक ऐसी पतित नारी से विवाह कर सकता है जो पाक के पापाचारियों का शिकार हो गई है, फिर मैं पीछे क्यों रहूँ ?" कुछ क्षण सोचकर पुनः बोली, "मुझे यह मार्ग किसने दिखाया ?"

ग्रोतिन मौन था :

"बोलो !"

श्रोतिन ने कुछ उत्तर न दिया।

"आत्मीय की आत्मा को सुख और शान्ति प्रदान करना ही नारी का धर्म है।"

श्रोतिन अभी भी मौन था। पुरुष यह तो सहन कर सकता है कि उसकी प्रेयसी उसकी न बने, कोई बात नहीं परन्तु उसे दूसरे की बनता देखकर वह कभी सहन नही कर सकता। पुरुष सदैव कहता आया है कि नारी को एक का ही होना चाहिए। परन्तु यह प्रश्न जब नारी पुरुष से पूछे कि पुरुष को कितनी नारी का सम्पर्क प्राप्त होना चाहिए, तो वह मौन हो जाता है अथवा कहता है, नारी घर की इज्जत है, शोभा है। नारी उत्तर में यह कहती है कि पुरुष भी दीवार पर लगा पोस्टर नही है जिसे हर कोई आकर पढ ले। यह उससे सहन नही होता।

इसी विचार धारा मे वह कर मिताली व्याकुल थी। उसी समय एक बच्चा मिताली के समीप आकर रोने लगा। बच्चा बडा सुकुमार तथा भोला था। मिताली ने गोद में उठा लिया और दुलार से वक्ष से लगाकर बोली, "मेरा चांद।" उसी समय उसका ममत्व जाग उठा उसकी आँखें भर आयी।

बच्चा अपनी तोतली आवाज में बोला, "जाई माँ—जाई माँ" (न आई······माँ······न आई)

मिताली बोली, "मैं तो हूँ, बेटे। मैं तेरी माँ हूँ।"

बच्चे ने मिताली को देखा। उसकी आँखो से आँसू गालो पर आ गए थे।

बच्चा एक हाथ से आँख मल कर बोला, "ना···ना···ना" (नही ·· नही···नहीं)

"तुम्हारा नाम······ ?"

बच्चा फिर रोने लगा।

"बोलो बेटे, तुम्हारा नाम······ ?"

"रामू!" बच्चे ने कहा।

"मेरा रामू बेटा······चुप हो जा, बिस्कुट मिलेगा।"

उस समय बच्चा मिताली के वक्ष से लगा था। बच्चा चुप हो गया,

जैसे दूध-भरे स्तन में मुंह लगा कर बच्चा चुप हो जाता है। कुछ देर बाद बच्चा गोदी से उतर कर चुपचाप खड़ा हो गया।

तभी ग्रोतिन बोला, "बच्चा तुम्हारी ममता पाकर चुप हो गया।"

मिताली ने उसकी आँखों मे आँखें डालकर कहा, "मुझे अपनी ममता पर, अपने प्रेम पर विश्वास है।"

"इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि मेरी ओर देखो, मेरे मन की स्थिति को समझो।"

"मैंने सदा तुम्हारी ओर देखा और कही भी रहूँ, सदा तुमको देखती रहूँगी।"

"फिर विवाह करने से क्या लाभ ?"

"तुम विवाह को क्या समझते हो ?"

"शारीरिक सम्बन्ध।"

"इस विवाह से मेरा ऐसा बन्धन नही होगा।"

"फिर ?"

"विवाह तो मेरा हो चुका।"

"फिर तुमने समाचार पत्र में विज्ञापन क्यो दिया था ?"

"उसमे मेरी एक शर्त होगी।"

"क्या ?"

"मैं मात्र उसकी परिचारिका रहूंगी।"

"ऐसे कौन विवाह करेगा ?"

"यह तो समय बताएगा।"

"तुम नही जानती, तुम्हारी जिन्दगी कितनी उलझ गई है। साथ ही तुम मुझमे कितनी समा गई हो, यह मैं तुम्हें नही बता सकता हूँ।"

मिताली पीडायुक्त वाणी मे बोली, "मैं अपना निश्चय नही बदल सकती और न ही तुमसे इसके लिए अनुरोध कर सकती हूँ। हम दोनों दूर रहकर भी पास रहेंगे। शरीर दो होंगे, आत्मा एक।"

"तुम समझने का प्रयास करो।" ग्रोतिन बोला।

उसी समय ग्रोतिन की नीरमयी आँखों से आँसुओं का गिरना प्रारम्भ हो गया। यह जब मिताली ने देखा, तो समीप आकर साड़ी के छोर से उसके

आँसू पोंछ कर बोली, "पुरुष होकर रोते हो । रोना तो नारी के भाग्य में लिखा है । मैं सोचती हूँ, हम इसी प्रकार घुल-घुल कर मरते रहे, रोते रहे, तो इस बच्चे का क्या होगा, उन बच्चों का क्या होगा ?"

"मैं तो इस जीवन से थक गया हूँ । अब अधिक नहीं चल सकता । मैंने रात खुली आँखों में व्यतीत की है । मैं तुम्हारा त्याग नहीं कर सकता ।"

"मेरा या कामुक जीवन का ?" मिताली ने सरल स्वभाव से कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "मिताली तो वासना का साधन है । मिताली तो जीवन की साधारण मांग है । यह मिताली के यौवन की मादकता बहुत दिन नहीं रहेगी । जो आज है, वह कल नहीं होगा ।"

"तुम क्या थी, क्या बन गई ?"

"वह भावना सब मिट्टी के मोल बिक गई, जिसके लिए तुमको खोजा था ।"

"मुझे ऐसा लगता है कि मेरे भाग्य में सुख की रेखा नहीं है ।"

मिताली का मन अत्यन्त व्याकुल और पीड़ित था । इस समस्या का समाधान कैसे हो ? मिताली ने उसी समय ओतिन के चरण पकड़ लिए । ओतिन ने मिताली को उठा लिया, अपनी गरम साँसें मिताली की गरम साँसों पर टिकाकर बोला, "मिताली !"

"मुझे भिक्षा दो । मुझे अपनी साधना पूर्ण करने दो ।" कहते-कहते मिताली ने आँखें झुका ली । वह अनायास ही झुक गई ।

ओतिन बोला, "मुझे तुम्हारा ही सहारा है ।"

"भाग्य पर विश्वास करते हो ?"

"मेरा भाग्य अच्छा नहीं है ।"

"विश्वास करो, तुम्हारा साथ ही मेरा जीवनाधार है । मैं तुम्हारे चरणों की धूल हूँ ।"

"नहीं, मिताली नहीं । तुम मेरे मस्तक का तिलक हो । मेरी आराधना हो ।"

"मुझे गलत न समझो । मैं तुमसे दूर नहीं हूँ । तुमको प्यार करती हूँ । तुम्हारी गहराई में उतरी हूँ । जो कुछ मिला है, ग्रहण किया है । सब तुमसे प्राप्त किया है । लेकिन एक बात कहती हूँ, तुम मिताली को नहीं, उसके

शरीर को प्यार करते हो। तुम मेरी सुन्दरता से इतने आकर्षित हुए कि अपना अस्तित्व भूल गए, कर्तव्य याद नहीं रहा। नारी की प्रेरणा के दास मत बनो, भोग को जीवन का लक्ष्य मत बनाओ। इच्छाओं का दास बनना ही मिताली का तड़पना है।"

ओतिन मौन रहा। वह कुछ कह न सका।

मिताली बोली, "मिताली क्या तुम्हारी दृष्टि मे इन्द्रियों की वासना-तृप्ति का एक मात्र साधन है, जिसको तुम मसलना-रौंदना चाहते हो? एक बार फिर सोचो, जो त्याग दिया, वह त्याग दिया। घाट पर पड़े गोल पत्थर की भाँति करवट मत बदलो।"

समय बहुत हो गया। बातों-ही-बातों में ओतिन को आभास हुआ कि वह गलती पर था। वह भावुक बन गया था। राष्ट्र के लिए जो त्याग दिया, उसको छोड़ना ही हितकर है।

ओतिन बोला, "मिताली, जब-जब मेरी आत्मा में कालिख लगी है, उसे तुमने मिटाया है। फिर मेरी एक बात मानो।"

"कहो।"

"इनकार तो नही करोगी?"

"अन्तिम सांस तक आज्ञा पालन करूँगी।"

"तुम जानती हो अतुल के दोनों हाथ ट्रक के नीचे कुचल दिए गए।"

"मुझे मालूम है।"

"फिर क्या सोचा?"

"किस विषय मे?"

"मैं उसको उपहार देना चाहता हूँ।"

"मैं प्रस्तुत हूँ।" मिताली ने आँखों से कहा।

"मेरा अर्थ यह नहीं था।"

"मैं स्पष्ट रूप से परिभाषा नही चाहती। परिचारिका के रूप में मैं समस्त ऋण उतार दूँगी।"

कैसी महानता थी! कैसी भावना थी! राष्ट्र के प्रति ऐसा प्रेम, ऐसा त्याग कि अपनी प्रेयसी को उपहार रूप में भेंट कर दे, कौन कर सकता है।

मिताली बोली, "जिस अनुराग और आत्मीय भाव से तुमने मुझे प्रेरणा

दी, जिस भावनामयी, कल्पनामयी दृष्टि से मुझे देखा है, मैं उसे पाकर ऋणी हूँ। मैं अपने को इस योग्य तो नहीं समझती, किन्तु यदि तुम्हारी प्रेरणा से कर्तव्य पूर्ण कर सकी तो मेरा प्रेम अमर हो जाएगा। मैंने तुम्हारी साधना की है, तुम्हें आत्मीय समझा है। इसी आत्मीयता के हेतु मेरा कर्तव्य है कि तुम्हारा सम्मान रखूं। तुम्हारे कार्य में सहयोग दूँ। तुम्हारी योजना को सफल बनाऊँ। मै चाहती तो भावुक बनकर तुमको विवाह-सूत्र मे बाँध लेती, परन्तु वह कार्य मात्र मेरे स्वार्थ की झांकी होता।"

"मैं तुम्हारे कथन से सहमत हूँ।"

"बताओ, तुम अकेले कब तक घूमते रहोगे ?"

"अब मैं अकेला नही। तुम्हारी प्रेरणा, तुम्हारे विचार मेरे साथ हैं।"

दोनों जब एक मत हुए तो ऐसे लग रहे थे मानो आकाश मे दो सितारे काले बादलों के हट जाने से फिर से चमक उठे हों अथवा एक डाल के दो पुष्प फिर से महक उठे हों।

× × ×

मुजीब ने अपनी वार्ता में कहा, "अतुल, बंगला देश तुम्हारा ऋणी रहेगा। जो दो हाथ आज तुम बंगला देश को देकर चले हो, वे हाथ सदैव बंगला देश के आकाश में लहराते हुए दिखाई देते रहेंगे। काम करते, प्रेरणा देते हुए उन हाथों का प्रतिबिम्ब हम अपने हृदय-पटल पर से कभी नहीं उतार सकेंगे।"

जब अतुल मुजीब से विदा लेकर आया, तो मुजीब की आँखों में आंसू आ गए; वह रो उठे।

उसी दिन शाम को अतुल को ढाका छोडना था। ढाका छोडने से पूर्व वह डा० मित्रा से मिला। डा० मित्रा अतुल के कामों तथा बातों से बहुत प्रभावित हुए।

डा० मित्रा ने कहा, "ललिका की आँखें बनवा कर जब अमेरिका से लौटूंगा तो कलकत्ता में आपसे मिलूंगा।"

अतुल बोला, "अवश्य दर्शन देना, आप मेरे अतिथि होंगे।"

डा० मित्रा बोले, "अवश्य आऊंगा। ललिका की भी इच्छा है कि अतुल

बाबू को फिर देखे ।"

"मैं भी उस पुष्प को हँसता-महकता देखने की कामना करता हूँ ।"

"आपकी कामना अवश्य पूरी होगी ।" डा० मिश्रा ने कहा ।

"यह मेरा सौभाग्य होगा ।"

अतुल जल्दी मे था । अभी उसको बहुत काम करने थे । वह डा० मिश्रा से आशीर्वाद लेकर तथा ललिका के लिए शुभकामनाएँ प्रकट कर, अपने निवास-स्थान पर आ गया ।

विमान जाने मे अभी पाँच घंटे शेष थे । उसने अपनी पूरी तैयारी कर ली थी ।

सायं को जब अतुल हवाई अड्डे पर पहुँचा, तो वहाँ पर पहले से ही मिताली तथा ओतिन उपस्थित थे । अतुल दोनों को देखकर सहज मुस्करा कर बोला, "अभी एक घंटा शेष है विमान जाने में ।" फिर उसने ओतिन से पूछा, "टिकट ले लिया ?"

"जी," कहते-कहते अतुल पर निगाह डालते हुए बोला, "दो ।"

"दो टिकट ?" अतुल ने चौंक कर पूछा ।

ओतिन ने कहा, "हाँ ।"

"दूसरा कौन जा रहा है ?"

"मिताली ।"

"मिताली ?"

"हाँ ! मिताली ।"

"मैं समझा नही ।"

बात करते-करते तीनों प्रतीक्षालय मे चले गए ।

ओतिन बोला, "सर, आपको याद हो, मुक्तिवाहिनी के जवानों ने निर्णय किया था कि वे लोग ऐसी नारी से विवाह करेंगे, जो पाक अत्याचारों के कारण पतित हो गई हो ।"

"हाँ, याद है, तो फिर ।"

"यही निर्णय मिताली ने भी किया है ।"

"यह मुझे मालूम है, मैंने समाचार पत्र मे पढ़ा था ।"

"मिताली की इच्छा है, ...मैं कहना चाहता हूँ कि वह आप से आपका

सहयोग चाहती है, साथ चाहती है।"

"यह कैसे हो सकता है ? मिताली तो तुम्हारी छाया है। तुम उसके तरु हो।"

"यह हम दोनों का निर्णय है।"

"तुमने यह पक्षपात की दृष्टि से निर्णय किया है, इसलिए यह उचित नहीं है।"

मिताली सरल भाव से बोली, "मुझे स्वीकार करने में आपको क्या आपत्ति है ?"

"तुम जिसकी निधि हो, उसी की बनी रहो ! उसी में तुम्हारा हित है, तुम्हारी भलाई है।"

ओतिन बोला, "बंगला देश को आपने गुलामी के पंजे से मुक्त करा दिया। अब हमारा भी अधिकार है कि आपको कुछ दें।"

"अवश्य दो ! देना चाहिए भी, शुभकामना दो। देने की चीज दो ! यह तो तुम्हारा पागलपन है !" अतुल ओतिन और मिताली की ओर देखकर बोला, "तुमने आपस में कुछ वायदे किये थे, उन्हें पूर्ण करो, जीवन को जीवन बनाओ और यह पागलपन छोड़ दो !"

"हम दोनों प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि परस्पर विवाह नहीं करेंगे।" मिताली बोली !

ओतिन बोला, "हमारा दृढ निर्णय है कि मिताली आपके साथ रहेगी, आपकी परिचारिका बनकर रहेगी।"

अतुल हँस कर बोला, "खूब, बहुत खूब ! मेरी परिचारिका बनकर मिताली जायेगी, पर उन बच्चों की परिचारिका कौन होगी, जो आज शिविरों में, शिशु-निकेतनों में रो रहे हैं। मैं अकेला हूँ। मेरी एक परिचारिका होगी तो फिर दो लाख बच्चों के लिए दो लाख परिचारिकाएँ कहाँ से लाओगे ? अतः यह विचार छोड़ो। हाँ, जो आदर-प्यार तुमने मुझे दिया है, मैं उसका आभारी हूँ, उसे कभी नहीं भूल सकता।"

ओतिन बोला, "आभारी तो हम आपके हैं। आपका ऋण कभी नहीं उतार सकते।"

"उपहार हेतु कुछ तो स्वीकार करोगे ?" मिताली बोली।

अतुल ने मिताली से कहा, "पगली ! नारी उपहार की वस्तु नहीं होती! वह जननी है, माँ है ! माँ पूजा की वस्तु होती है, उपहार देने की नहीं। यो समझो कि उपहार मे मैं तुम्हारा स्नेह लेकर जा रहा हूँ ! तुम्हारी याद ही मेरे लिए उपहार है।"

उसी समय वहाँ मुक्ति वाहिनी की सेना के जवान आ गये थे। सब की आँखों मे हर्ष के आँसू थे, विदा के मोती थे।

ओतिन की ओर देखकर अतुल बोला, "तुम मेरे छोटे भाई हो, मेरी बात मानोगे ?"

ओतिन ने सिर झुका लिया।

मिताली की ओर देखकर बोला, "तुमको मैंने परिचारिका से भी बड़ा समझा है। तुम मेरे छोटे भाई की निधि हो, उसी की रहो ! यह पागलपन छोड़ दो, दोनो विवाह-सूत्र में बँधकर राष्ट्र का भविष्य सोचो। अलग-अलग रहकर तुम सूख जाओगे।"

मिताली मौन रही। ओतिन शान्त रहा।

अतुल अब ओतिन से बोला, "मेरी बात रख लो। मैं तुमसे बड़ा हूँ, बड़ों की बात मानना छोटो का कर्तव्य होता है। मिताली को तुम मेरी ओर से विदा के समय का उपहार समझो, आशीर्वाद समझो।"

विमान जाने का समय हो गया था। उसी समय बंगला भाषा मे ध्वनि आयी, "दया कोरे शुनून फ्लाइट नम्बर दसएैर जात्रीगन बीमानेर निकट परिचारिका कादे तादेर पौदवार खौबोर देवेन।" (उड़ान नम्बर दस के यात्री विमान के समीप पहुंच कर परिचारिका को अपने आने की सूचना दें।)

जाते समय अतुल की आँखें भरी थी। वह मुक्ति वाहिनी के जवानों को देखकर बोला, "मैं तुम से अनुरोध करता हूं कि ओतिन को प्रतिज्ञा से मुक्त कर दो ताकि मिताली और ओतिन एक होकर बंगला देश के ध्वज को ऊंचा रखें।"

मिताली की ओर देखकर अतुल बोला, "सदा सुहागवती रहो।" ओतिन की ओर देखकर आँखों से बोला, "क्षमा करना, ओतिन !"

शेष सबकी आँखों में मोती छलका कर वह विमान की ओर चला गया।

उसी समय, संयोग की बात है, रेडियो में यह गीत आना आरम्भ

हुआ—

सम्मान हृदय का लेकर जाओ, प्यारे सेनानी !
हम विदा तुम्हें करते हैं, भर कर नयनों में पानी ।
हम कभी नहीं भूलेंगे, तुमने जो राह दिखाई ;
हम कभी न बुझने देंगे, तुमने जो ज्योति जलाई ।
चल उन आदर्शों पर, जिन को जीवन-माल बनाया,
हम कभी न झुकने देंगे, तुमने जो ध्वज लहराया ।
कर गये क्षमा तुम हँस कर जालिम की हर नादानी ।
हम विदा तुम्हें करते हैं, भरकर नयनों में पानी ।

गान चलता रहा । रेडियो से ध्वनि आती रही गान की और साथ-साथ ध्वनि आती रही चलते विमान की ।

विमान चला गया । अतुल चला गया । मुक्ति वाहिनी के जवान चले गये । परन्तु ओतिन और मिताली वहीं खड़े, आकाश को देखते रहे और··· और देखते रहे आकाश में उड़ते, उड़ कर पल-पल, क्षण-क्षण दूर जाते हुए विमान को !